Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

आगमोद्धारक-ग्रन्थमालायाः त्रिपञ्चाशं रत्नम् ।

णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ।

प० पू० आगमोद्धारक आचार्यप्रवर श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।

गणिचन्द्रकीर्तिसम्पिण्डितः

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्यायः

卐

संशोधक :

प० पू० गच्छाधिपति

आचार्यश्रीमन्माणिक्यसागरसूरीश्वरशिष्यः

शतावधानी पंन्यास लाभसागरगणिः

वीर सं. २४९९ विक्रम सं. २०२९ आगमो सं. २४

प्रतयः ३००] [मूल्यम् ५-००

: प्राप्तिस्थान :

श्री जैनानंद-पुस्तकालय, गोपीपुरा, सुरत.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

आगमोद्धारक-ग्रन्थमालाया: त्रिपञ्चाशं रत्नम् ।

णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ।

प० पू० आगमोद्धारक आचार्यप्रवर श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।

गणिचन्द्रकीर्तिसन्दर्भ्यपिण्डत:

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्यायः

卐

संशोधक :

प० पू० गच्छाधिपति

आचार्यश्रीमन्माणिक्यसागरसूरीश्वरशिष्य:

शतावधानी पंन्यास लाभसागरगणि:

वीर सं. २४९९ विक्रम सं. २०२९ आगमो सं. २४

प्रतयः ३००] [मूल्यम् ५-००

: प्राप्तिस्थान :

श्री जैनानंद-पुस्तकालय, गोपीपुरा, सुरत.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

प्रस्तावना

अनंतानंतकालथी एक सनातन नियम छे के शासननी स्थापना पूर्वे द्वादशांगीनी रचना, त्यारबाद शासनसंघनी स्थापना। आथीज समजाय के जैन-शासननी भव्य इमारतना तांबाना पाया-रूपे जैनागम छे। संपूर्ण शासननी सुदृढ व्यवस्था आगमज्ञान पर छे। परन्तु ज नहिं पण तेनी प्राप्ति माटे अनेकविध तपयोगवहन करी ते ज्ञान मेळववानी योग्यता मेळवे छे। अने ते ज्ञानमात्रा वधतां पुण्यवान् आत्माओ आचार्य पद पर आरूढ थइ त्रिकाला-बाधितशासननुं सुकान संभाळवा भाग्यशाली बन्या छे। श्री-जिनागमनुं अध्ययन निःश्रेयसपद प्राप्तिना भव्य आदर्शने वरेला आत्माओने अणमोल साधन छे। तेमां कशी अतिशयोक्ति नथी ज।

श्री आगमज्ञान प्राप्तिनी पद्धति अने संरक्षणता।

पूर्वकालमां आगमशास्त्रोनुं अध्ययन मौखिक थतुं हतुं। बुद्धिना सागर साधुभगवंतो तेने यथावत् याद राखता हता। कदाच स्खलना थाय तो बीजी या त्रीजी वार सांभळीने-अध्ययन करीने स्वनामवत् ते महामूला आगमरत्नोने हृदयमंदिरमां पधरावी जीवनने धन्य बनावता हता। आ ज्ञाननी प्राप्ति माटे लांबा लांबा विहार थता दूर दूर देशोमां अनेक मुश्केलीओ वेठीने जता, अने अनेक वाचनाओनो लाभ लेता हता। तो पण दुःषमकालना विषमप्रभावे मेधावी मुनिवृंदनी मेधानो दिनानुदिन क्षीणतानो अनुभव थतां शासनना शिरताज अने उत्सर्ग-अपवादना जाणकार पूज्य देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण भगवंते वलभीपुरमां ते समयना मुख्य मुख्य ५०० आचार्योने भेळा करी, अनेकविध पाठोथी मेळवी श्री आगमोने पुस्तकारूढ करवानुं महान् कार्य कर्युं। आथी आगमज्ञानप्राप्ति सुलभ बनी परन्तुंज नहिं पण श्री जिनागमज्ञान-प्राप्तिनी सरवाणी निरंतर वहेती चालु राखी। तेओश्रीनुं आ कार्य जैनशासनमां प्राण पूरवासमान थयुं एम कहीए तो वधु पडतुं नथी ज।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

लघुग्रंथनो परिचय

आ पवित्रतम आगमोनुं ज्ञान सुलभताथी मेळववाना अवदात आशये भाष्यनिर्युक्तिओ चूर्णि टीका टबा आदिनुं निर्माण थयुं हतुं, थइ रह्युं छे अने थशे। आवा ज भव्य आसये आ लघुकाय ग्रंथनुं निर्माण लगभग ११ मी सदीमां थयुं। अने तेरमी सदीमां ताडपत्र पर अंकित थयो, तेनुं मुद्रण वि. सं. २०२९मां थइ रह्युं छे ते आपणा संघनुं परम सौभाग्य छे।

आ ग्रंथनुं नाम '<u>निःशेषसिद्धांतविचारपर्याय</u>' छे।

आगमना मननीय विचारणीय सूक्ष्मतर कतिपय पदार्थो उपर ऊंडाणथी चिंतन अने मंथन साथे जे निष्कर्ष निहाळ्या तेने संस्कृतभाषाबद्ध करीने संपिंडित (संकलित) कर्या छे ते प्रथम खंडमां छे. अवशिष्ट अंशने परिशिष्टमां मूकी प्रथम खण्ड पूर्ण कर्यो छे।

श्री आगमोना विषम पदोना कठीन अने गूढ अर्थोने सरल संस्कृतभाषामां संकलित कर्या तेने बीजा खण्डमां स्थान आपवामां आव्युं छे।

ग्रंथनामभीमांसा

आ ग्रंथनी प्रशस्तिमां स्वयं ग्रंथकार (१) 'सिद्धांत विचार पर्याय' आ मुजबनुं नाम लखे छे, (२) १३ मी सदीमां जे ताडपत्र पर आ ग्रंथ पूर्ण थयो, तेना अंत भागमां 'सिद्धांत सारोद्धार' आ मुजबनुं नाम लहिया-देवप्रसाद लखे छे अने प्रतना मुखपृष्ठ उपर 'निशेष सिद्धांतविचारपर्याय' छे।

संपादन वखते विचार थयो के नाम शुं राखवुं ? आ प्रश्ननी मीमांसा समये एक तर्क उठ्यो के—श्री जैनागमोमां छेदसूत्रो सारभूत छे छेदसूत्रोथी शासननी व्यवस्था सुचारुरूपे रहे छे तेथी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

ज छेदसूत्रोने ' श्रुतपुरुष ' नी रचनामां मस्तिष्कमां स्थान अपायुं छे। आथी आ छेदसूत्रो तमाम सिद्धांतोमां सारभूत गणवामां आवे ते सुयोग्य छे अने अहिंआं मुख्यताए छेदना विचारो ने पर्यायो छे। एम मानीने मुखपृष्ठ उपर ' निःशेषसिद्धांतविचार पर्याय ' लख्युं होय ! आ तर्कना आधारे आ ग्रंथनुं गुणनिष्पन्न नाम मुखपृष्ठ उपर राख्युं योग्य गणाय।

ग्रंथ विषय परिचय

परिमाणमां नाना देखाता पण अर्थथी अने विषयथी अगाध, आ ग्रंथमां बीजा बीजा आगमोना अर्थ तथा विचारोने अल्पस्थान आपवा साथे छेदग्रंथोना विचार अने अर्थोने मुख्य स्थान आप्युं छे। नाना नाना घणा विषयोने प्रकाश आपता ग्रंथकारे अनुधर्म उपर सारो प्रकाश फेंक्यो छे।

वर्तमानमां घणांओ पेपर आदि द्वारा एकवार नहिं पण अनेकवार उच्चारी के लखी चूक्या छे के— ' भगवाननुं कहेलुं करवानुं छे करेलुं नहि ' तेओ ग्रंथना प्रथम खण्डनुं ३८ मुं पत्र वांची जाय, वधु खुलासा माटे निशीथचूर्णिनी ४८५५ मी गाथा, तेमज यतिजीतकल्प, बृहत्कल्प ने जोइ सत्यनो स्वीकार करे एज इच्छा।

जे जे विचारो संपिंडित (संकलित) कर्या छे ते ते अंगेना मूलग्रंथनी गाथाओ तथा अर्थने यथावत् उद्धृत करी तेना पर पोते निष्कर्षरूपना टूंका संस्कृत वाक्यो मूक्या छे। जेथी आ गाथानो शो आशय छे ? ते अल्प बुद्धिवाळापण तूर्त समजी जाय तेम छे। आज कारणे संग्रहनो प्रयास घणोज स्तुत्य छे अने वर्तमानसमये मुद्रणनो प्रयास पण अल्प उपकारक नथी।

ग्रंथकार-परिचय

आ लगुकायग्रंथना कर्तानो परिचय मेळववा मुख्य साधन-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

रूपे प्रांतभागमां लखेल प्रशस्ति छे। तेना आधारे जणाय छे के—१२ मी आपेल सदीमां जे पूज्य आचार्य श्री धर्मघोषसूरि भगवंत थया हता। तेओश्री पासेथी पूज्य आचार्यश्री विमलसूरि महाराजाना विद्वान् शिष्य-रत्न पूज्य श्री चंद्रकीर्ति गणिवरश्रीए पोताना स्वाध्याय माटे आगमना पर्यायोनी नोंध करी हती, ते नोंध केवी रीते हस्तलिखित थइ ते माटे हवे पछीना पेरेग्राफमां—

ग्रंथलेखनकाल आदि—

जे समये ग्रंथकर्ता थया तेज समये पोरवाडवंशना शेठ धनदेव तथा शेठाणी इन्दुमतिने त्यां यशोदेव नामना महान् पुण्यात्मानो जन्म थयो हतो तेमने सतीओमां गणना पामेली तेवी पतिव्रता आंवी अर्धांगना हती अने तेओने उद्धरण-आंबीग-वीरदेव नामना त्रण पुत्ररत्नो तथा सोली, लोली अने सोखी नामनी त्रण पुत्रीओ हती। आखुं कुटुंब घणुंज धार्मिक हतुं। श्री जिनवचनना पाननी अने श्रुत उपासनानी घणीज लगनी हती। आथी तेओए घणाज ग्रंथो लखाव्या हता। प्रस्तुतग्रंथनी प्रशस्तिमां 'निर्मापिता' नामनो 'पर्यंत' प्रयोग तेमनी श्रुतभक्तिनी तालावेलीनी साक्षी पूरे छे। श्री जिनशासनभक्त आ श्राद्धवर्ये आ ग्रंथनी प्रत लखावी हती। अने तेना परथी वि० सं० १२१६ मां लहिया देवीप्रसादे आ ग्रंथ ताडपत्र पर लख्यो, तेना परथी सुश्रावक नवीनदास भाईए प्रेसकोपी करी हती।

ग्रंथनी उपयोगिता

आ 'निःशेषसिद्धांतविचारपर्याय' ग्रंथमां मोटा भागना छेदग्रंथनी गूढविचार अने गूढपदो खारांशता अने कृतिनीपण लगभग ९०० वर्षथी वधु प्राचीनता छे, अने वर्तमानकालना श्रुतधरोमां अग्रस्थानने शोभावनार मूर्तिमंत आगमस्वरूप पूज्य गच्छाधिपति आचार्यभगवंतीनी पुण्यदृष्टिथी परिपूतता आ त्रिवेणी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

योगथी आ ग्रंथनी उपयोगिता घणीज वधी जशे ते निःशंक छे। आ ग्रंथ नानकडा 'आगमिक कोश' रूपे काममां आवशे तेवी मारी धारणा साचीज ठरशे ।

आ ग्रंथमां अशुद्धिपत्रक साथे ते ते विषयोनी अनुक्रमणिका पण मुद्रित करी छे। जेथी वाचक प्रथम ग्रंथमां रहेली अशुद्धिओने शोधी ते ते विषयोने सांकलियाथी सरलताथी मेलवी शकशे।

मुद्रणकार्यमां क्वचित् क्षति नजर पर तरे पण ते प्रेस आदिना कारणे छे तो वाचको ते समक्ष नजर न नांखता अंदरना तत्त्व सामे दृष्टिने राखे तेज विनंति छे ।

नेमचंद मेलापचंद
जैन उपाश्रय,
सुरत.
वि० सं० २०२९
महावद–८ रवीवार

द:– पुज्यपाद आगमोद्धारक
ध्यानस्थस्वर्गत आचार्यदेवश्री
आनंदसागरसूरीश्वरशिष्याणु
सूर्योदयसागर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

प्रकाशकीय-निवेदन

आ 'निःशेषसिद्धांतविचारपर्याय' नामना ग्रंथने आगमोद्धारक ग्रंथमालाना ५३ मा रत्न तरीके प्रगट करता अमने बहु हर्ष थाय छे।

आना प्रकाशनमां पूज्य गणिवर्यश्री अभयसागरजी महाराजे (हाल पंन्यास) आपेली प्रेसकोपीनो उपयोग कर्यो छे।

आनी प्रेसकोपी मुनिराजश्री लावण्यसागरजी म. करी हती अने संशोधन पू. गच्छाधिपति आचार्यश्री माणिक्यसागर सूरीश्वरजी म.नी पवित्र-दृष्टि नीचे शतावधानी (हाल पंन्यास) श्री लाभसागरजी गणिए करेल छे। ते बदल तेओश्रीनो तेमज जेओए आना प्रकाशनमां द्रव्य तथा प्रेसकोपी आपवानी सहाय करी छे ते बधा महानुभावोनो आभार मानीए छीए।

लि.
प्रकाशक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

विषयानुक्रमणिका

पत्राङ्क	प्रथमखण्ड-विषय:
१	मासकल्प-वर्षाकल्पानन्तरं न स्थेयम् ।
२	गुरोः गन्धपूजा ।
२	चतुर्दशी पक्षान्तो न भवति ।
	आलोचना श्रावकाणाम् ।
३	यादृशं प्रतिक्रमणं साधोः तादृशं श्रावकस्य ।
४	साधुभिः वस्त्रं प्रावरणीयम् ।
५	ईर्यापथिकां प्रतिक्रामति गौतमः ।
६	अष्टाविचारः ।
६	कल्याणकानि ।
७	पक्षे-अर्धमासे भवं पाक्षिकम् ।
८	जन्मकल्याणकम् ।
९	श्रावकस्य चैत्यवन्दनम् ।
१०	प्रमार्जनं वस्त्राञ्चलादिना ।
१०	श्रावकस्वरूपम् ।
१२	गृहिप्रायश्चितम् ।
१२	मुखवस्त्रिका श्रावकस्य उत्तरीयवस्त्रम् ।
१२	श्रावकमुखपोतिका ।
१४	प्रदक्षिणाविचारः ।
१५	चैत्यवन्दनाविचार ।
१५	देवद्रव्यविचारः
१५	वस्तुमूल्यविचारः ।
१९	प्राभातिकप्रतिलेखनम् ।
१९	प्रावरणविचारः ।
१९	सीसढकणनिषेधः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

१९ तक्राम्बिलम् ।

२१ पर्वक्रमः ।

२१ एकाकीस्त्री कथा ।

२२ आधाकर्मविचारः ।

२३ पर्युषणाविचारः ।

२८ वर्षाकाले क्षेत्रमानम्

३५ प्रथमपौरुष्यां गृहीतं चतुर्थ्यां न शुद्धयति ।

३८ यत् तीर्थकरैराचीर्णं तदन्यैराचरणीयं तीर्थकरकल्प विना ।

३८ संयत्यो वस्त्राणि स्वयं न गृह्णन्ति ।

४५ गुरुसंस्तारकस्थाने पादो न मोक्तव्यः ।

४६ स्थापना ।

४७ आलोचना दिनानि ।

४९ रजोहरणम् ।

५१ निषद्याविचारः ।

५१ मासविचारः ।

५८ प्रतिष्ठाविचारः: ।

५३ मासद्वयविचारः ।

५४ कल्पविचारः ।

५५ वर्षातिक्रमे उपधिग्रहणविचारः ।

५६ मास कल्पान्तरोपधिग्रहणविचारः ।

५६ अस्वाध्यायं न भवति ।

६० गर्भाष्टमविचारः ।

६१ देवद्रव्यविचारः ।

६२ आचार्यादिपदविचाराः ।

६२ उत्थापना विषयः ।

६२ सङ्घस्वरूपम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पत्राङ्क	विषयः
६३	त्रयोदशगुणं वर्षाक्षेत्रम् ।
६४	कालचारिणीसाध्वीस्वरूपम् ।
६५	आचार्यवर्णनम् । अवग्रहकालः ।
६७	आचार्योपाध्याययोः पञ्च अतिशेषाः ।
६७	आचार्येण बहिर्भूमौ न गन्तव्यम् ।
६७	आचार्येण न भिक्षणीयम् ।
६८	पाक्षिकविचारः ।
६९	प्रतिष्ठाविचारः ।
६९	लिङ्गिकारितादिजिनचैत्यवन्दनविचारः ।
७०	जिनगृहनिवासनिषेधस्य स्तुतित्रयस्य च विचारः ।
७१	वर्षाप्रवेशादिविचारः ।
७१	अष्टविधा गणिसम्पद् ।
७३	तपोविचारः ।
७४	जीतविचारः ।
७६	पुलाकादिविचारः ।
७८	प्रावरणविचारः ।
७९	स्थितास्थितकल्पविचारः ।
७९	अनुशास्तिः ।
८०	प्रावरणविचारः ।
८०	रसत्यागविचारः ।
८०	देवद्रव्यविचारः ।
८१	प्रावरणविचारः ।
८१	कालातिक्रमवसनविचारः ।
८२	सम्भोगविचारः ।
८२	अहालंदगादिविचारः ।
८३	'चित्रं बह्वर्थयुक्तम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

८५	सोपधित्वं जिनानाम् ।
८६	थेरस्स आवली ।
८६	गणविचारः ।
८७	शाखास्वरूपम् ।
८८	प्रतिष्ठाविधिः ।
९०	प्रायश्चित्ते । सम्प्रदायलिखितम् ।
९२	भिक्षाकायोत्सर्गे नमस्कारः ।
९३	बिम्बप्रतिष्ठास्वरूपम् ।

पत्राङ्क	विषयः
परिशिष्टम्-१	प्रेक्षणकदर्शनविचारः ।
१	'संवच्छरं' इत्यादिगाथाव्याख्या ।
१	श्रमणोपासकानां पर्युपासना ।
२	'रूप्पं टंकं' इत्यादि गाथाव्याख्या ।
३	मासादिस्वरूपम् ।
४	'पगाहच्चं कुडाहच्चं' व्याख्या ।
	द्वितीय खण्डः
१-७१	पर्यायाः ।
७१	प्रशस्तिः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

शुद्धिपत्रकम् (प्रथमखण्डः)

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
३	१	अस्थार्थः	अस्यार्थः
४	३	व्याख्या	व्याख्यां
८	१	चेदं	वेदं
४७	२५	विषपे	विषये
५१	९	पचविहंमि	पंचविहंमि
६०	९	दुविहा	दुविहो
६४	१५	च्छुभंति	छुभंति
६६	१४	ढुंति	ठंति
७४	१६	निज्जूढं	निज्जुढं
		(द्वितीयखण्डः)	
११	९	संस्तुद्धेः	सम्बुद्धिः
१२	९	वणवीसाए	पणवीसाए
६५	३	याञ्चार्थम्	याच्ञार्थम्
६५	१२	पणउ	पणओ
६५	१६	मुण्वाउ	मुण्वाओ
६५	२४	इत्येके	इत्येक
६६	११	सिस्नोदर	सिश्नोदर
		(प्रकाशकीयनिवेदन)	
६	६	म० करी	म० अने बालमुनिश्री महाबलसागरजी म० करी
		(विषयानुक्रम)	
७	२	स्थेर्य	स्थैर्य
७	२०	विचार।	विचारः।
८	७	शुद्धयति।	शुद्ध्यति।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

प० पू० आगमोद्धारक-आचार्यप्रवर-श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः

कृतिवर-गणि-चन्द्रकीर्त्तिसम्पिण्डितः

निःशेषसिद्धान्तविचारपर्यायः ।	प्रथमः खण्डः

विचारास्तु लिख्यन्ते-यथा

'अह सा भमरसंन्निभे कुच्चफणगपसाहिए ।

सयमेव लुंचइ केसे धिइमंता ववस्सिया' ॥ इत्युत्तरा० ॥ २२ ॥

(आचारस्य) 'से आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा जे भयंतारो उउबद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवाइणित्ता तत्थेव भुज्जो संवसंति । अयमाउसो ! कालाइक्कंतकिरिया वि भवइ' । अर्थस्तु-आगन्तारादिषु ये भगवन्तः 'ऋतुबद्ध'मिति शीतोष्णकालयोर्मासकल्पमुपनीय - अतिवाह्य वर्षासु वा चतुरो मासानतिवाह्य तत्रैव पुनः कारणमन्तरेण आसते । अयमायुष्मन् ! कालातिक्रान्त-वसतिदोषः सम्भवति । इति मासकल्प-वर्षाकल्पानन्तरं न स्थातव्यम् ।

'से आगंतारेसु वा ४ जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवाइणित्ता तं दुगुणादु (ति) गुणेण वा अपरिहरित्ता तत्थेव भुज्जो संवसंति । अयमाउसो ! इयरा उवट्ठाणकिरिया' इत्याचारे (श्रुतस्कन्ध २, अध्ययन २)

अह पुणेवं जाणेज्जा चत्तारि मासा वासावासाणं वीइक्कंता हेमंताण य पंच दस राइकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गे बहुपाणा जाव संताणगा नो जत्थ बहवे समण जाव उवागमिस्संति, सेवं नच्चा नो गामाणुगामं दूइज्जिज्जा । अर्थस्तु-अथैवं जानीयात् यथा चत्वारोऽपि मासा प्रावृट्कालसम्बन्धिनोऽतिक्रान्ताः, कार्तिकचातुर्मासकमतिक्रान्तमित्यर्थः । तत्रोत्सर्गतो यदि न वृष्टिः, ततः प्रतिपद्येवान्यत्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

गत्वा पारणं विधेयम् । अथ वृष्टिः ततो हेमन्तस्य पञ्चसु दशसु वा दिनेषु पर्युषितेषु-गतेषु गमनं विधेयं । तत्रापि यद्यन्तराले पन्थानः साण्डा यावत्ससन्तानका भवेयुः, न च तत्र बहवः श्रमणब्राह्मणादयः समागताः समागमिष्यन्ति वा । ततः समस्तमेव मार्गशिरं (र्ष) यावत् तत्रैव स्थेयं, तत ऊर्ध्वं यथा तथाऽस्तु न स्थेयम् । (इत्याचारे) ।

तित्थगराण भगवओ पवयणपावयणि अइसइड्ढीणं ।
अहिगमणनमणदरिसण कित्तणसंपूयणा थुणणा । (आ० ३३०)
गाथार्थस्तु

प्रवचनस्य द्वादशाङ्गस्य प्रावचनिकानाम्-आचार्यादीनां तथाऽति-शयिनाम्-ऋद्धिमतां यदभिगमनं, गत्वा च दर्शनं तथा गुणोत्कीर्त्तनं, सम्पूजनं गन्धादिना, स्तोत्रैः स्तवनम् इत्यादिका दर्शनभावना इत्यनया आचारनिर्युक्तिगाथातः गन्धपूजा गुरोरभिगमनं च समर्थ्यते ।

'जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे आसाढसुद्धे तस्स णं असाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं हत्थुत्तराहि न क्खत्तेणं जोगमुवागएणं' इत्याद्याचारालापकेन चतुर्दशी पक्षान्तो न भवति ।

"तेणं बहूइं वासाइं समणोवासगपरियायं पालइत्ता छण्हं जीवनिकायाणं सारक्खणनिमित्तं आलोइत्ता निंदित्ता गरहित्ता भत्तं पच्चक्खाइत्ता अपच्छिमाए मारणंतियाए संलेहणाए झुसियशरीरा कालमासे कालं किच्चा तं सरीरं विप्पजहित्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने वीरमायपियरे इति शेषः" इत्यनेन आचारसूत्रालापकेन आलोचना श्रावकाणां भणिता ।

सूत्रकृतः—जे धम्मलद्धं विणिहाय भुंजे वियडेण साहट्टु य जो सिणाइं । जो धोवइ लूसयइ व वत्थं अहाहु से नागणियस्स दूरे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

सूत्रकृताङ्गस्य विचारा:

अस्यार्थः— ये केचन शीतलविहारिण: धर्मेण मुधिकया लब्धम् उद्देशिकक्रीतकृतादि-दोषरहितमित्यर्थ: । तदेवंभूतमप्याहारजातं विनिधाय-व्यवस्थाप्य सन्निधिं कृत्वा भुञ्जते । तथा ये विकटेन-प्रासुकोदकेनापि सङ्कोच्याङ्गानि प्रासुक एव प्रदेशे देशसर्वस्नानं कुर्वन्ति । तथा यो वस्त्रं धावति-प्रक्षालयति । तथा लूषयति-शोभार्थं दीर्घं सत् पाटयित्वा ह्रस्वं करोति ह्रस्वं वा सन्धाय दीर्घं करोति इत्येवं लूषयति स निर्ग्रन्थभावस्य-संयमानुष्ठानस्य दूरे वर्तते, न तस्य संयमो भवतीत्यर्थ: । एवं तीर्थकर-गणधरादय आहु'रिति सूत्रकृताङ्गे कुशीलाध्ययने उक्तम् । कम्मं परिण्णाय दगंसि धीरे वियडेण जीविज्ज य आइमुक्खं । से बीयकंदाइ अभुंजमाणे विरए सिणाणाइसु इत्थियासु ॥ २२ ॥ धीर उदकसमारम्भे सति कर्मबन्धो भवतीत्येवं परिज्ञाय किं कुर्यात् ? इत्याह-विकटेन-प्रासुकोदकेन सौवीरादिना जीव्यात्, आदि:- संसार: तस्मात् मोक्ष आदिमोक्षः संसारविमुक्तिं याव'दिति सूत्रकृताङ्गकुशीलाध्ययने उक्तम् ।

आयरियपरंपरएण आगयं जो उ छेयबुद्धीए ।
कोवेइ छेयवाई जमालिनासं स णासिहिति ॥ १२५ ॥
इति सूत्रकृताङ्गयाथातथ्याध्ययने निर्युक्तावुक्तम् ।

चाउद्दसमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे' इति । 'आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता' इति आहारपरिज्ञाध्ययने सूत्रकृदङ्गस्य श्रावकं प्रत्युक्तं, साधुं प्रति तु चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ उदकसाधुरितिशेष: । ततो यादृशं प्रतिक्रमणं साधो: तादृशं श्रावकस्यानुमीयते । एतदपि सूत्रकृति । 'चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु' इत्यस्यार्थो यथा-चतुर्दश्यष्टम्यादिषु तिथिषु उद्दिष्टासु-महाकल्याण-सम्बन्धितया पुण्यतिथित्वेन प्रख्यातासु तथा पौर्णमासीषु च तिसृष्वपि चतुर्मासकतिथिषु इत्यर्थः । एवम्भूतेषु धर्मदिवसेषु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

सुष्टु-अतिशयेन प्रतिपूर्णो यः पौषधः-व्रताभिग्रहविशेषः तं सुप्रतिपूर्णम् आहारशरीरसत्कारब्रह्मचर्याव्यापाररूपं पौषधम् मनुपालयन् सम्पूर्ण श्रावकधर्मअनुचरतीति व्याख्या सूत्रकृति कृतां केचन मन्यन्ते।

(स्थानस्य) 'तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु नो आलोएज्जा नो पडिक्कमेज्जा नो निंदेज्जा नो गरहेज्जा नो विउट्टेज्जा नो विसोहेज्जा नो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा नो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा। तं० अकरिंसु वाहं करेमि वाहं करिस्सामि वाहं' इति जीवाधिकारे सामान्येन भणितं त्रिस्थानकतृतीयोद्देशके आलोचनाभिधायकम्।

अस्यार्थस्तु-आलोचनं-गुरुनिवेदनं, प्रतिक्रमणं-मिथ्यादुष्कृतदानं, निन्दा-आत्मसाक्षिका, गर्हा-गुरुसाक्षिका, वित्रोटनं-तदध्यवसायविच्छेदनं, विशोधनं-आत्मनश्चरित्रस्य वाऽतिचारमलक्षालनम् अकरणताऽभ्युत्थानं-पुनर्नैतत्करिष्यामीत्यभ्युपगमः स्थानाङ्गे (सू०१६८)

तिहिं ठाणेहिं वत्थं धारेज्जा, तं जहा-हिरिवत्तियं दुगुंछावत्तियं परिसहवत्तियं धारेज्जा-उवभुंजेज्जा। यतः-'धारणया उवभोगो परिहरणे होइ परिभोगो'। ततः साधुभिः प्रावरणीयमिति सिद्धम्। वृत्तिः पुनरस्य-ह्री-लज्जा संयमो वा प्रत्ययो-निमित्तं यस्य धारणस्य तत्तथा, जुगुप्सा-प्रवचनखिंसा विकृताङ्गदर्शनेन मा भूदित्येतत् प्रत्ययो यत्र तत्तथा, परीसहाः-शीतोष्णदंशमशकादयः प्रत्ययो यत्र तत्तथा स्थानाङ्गसूत्रमिदम् (सू० १७१) असढेण समाइण्णं जं कत्थइ केणई असावज्जं। न निवारियमण्णेहिं बहुमणुमयमेयमायरियं॥ अवलंबिऊण कज्जं जं किंची आयरंति गीयत्था। थेवावराह बहुगुण सव्वेसिं तं पमाणं तु॥ पञ्चवस्तुके

(भगवत्याः) 'चाउद्दसट्ठमुद्दीट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुन्नं पोसहं' इत्यादि। इहोद्दिष्टा-अमावास्या भगवत्यां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

द्वितीयशते उक्तम् । (सू० १०६) 'ण्हाया कयबलिकम्मा' इति कृतं बलिकर्म यैः स्वगृहदेवतानां ते तथा इति । श्रावकवर्णके भगवत्यां शते २ (सू० १०८) ।

समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ, गौतम इति शेषः । इति भगवत्यां (सू० ११०)

किंपत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा नंदीसरवरदीवं गया गमिस्संति य ? गो० जे इमे अरहंता भगवंतो एएसि णं जम्मणमहेसु वा निक्खमणमहेसु वा नाणुप्पायमहिमासु वा परिनिव्वाणमहिमासु वा' इति भगवत्यां शते ३ (सू० १४१) इत्यनेन कल्याणकान्युक्तानि ।

जे णं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव साइमं पढमाए पोरिसीए पडिग्गाहित्ता पच्छिमं पोरसीं उवाइणावित्ता आहारं आहारेइ, एस णं गोयमा ! कालाइक्कंते पाणभोअणे । जे णं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव साइमं पडिगाहित्ता परं अद्धजोयणमेराए विइक्कमावित्ता आहारमाहारेइ, एस णं गो० ! मग्गाइक्कंते पाणभोयणे । भगवत्याम् (सू० ६८)

आगमेणं सुएणं आणाए धारणाए जीएणं इच्चेएहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा । भगवतीसूत्रे (३३९) । तए णं सा देवाणंदा माहणी पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ तं० सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविमोयणयाए, विणओणयाए गायलट्ठीए, चक्खुफासे अंजलिपग्गहेणं, मणसा एगत्तीभावकरणेणं समणं भयवं महावीरं वंदइ वंदित्ता उसभदत्तं माहणं पुरओ कट्टु ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी इत्यादि । ठिया चेवत्ति ऊर्ध्वस्थानस्थितैव अनुपविष्टेत्यर्थः । भगवत्यां (सू० ३८०) । 'तए णं समणे भयवं महावीरे देवाणंदं माहणिं सयमेव पव्वावेइ, सयमेव पव्वावेत्ता सयमेव अज्जचंदणाए अज्जाए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

सीसिणीत्ताए दलयइ । तए णं सा अज्जचंदणा अज्जा देवाणंदं माहणिं सयमेव पव्वावेइ मुंडावेइ सयमेव सेहावइ' इत्यष्टाविचारः । (सू० ३८२) भगवत्यां पुनः 'पव्वावणा'ग्रहणम् अनवगतावगम-विशेषाधानार्थम् ।

तए णं जमाली खत्तियकुमारे पुप्फतंबोलाउहमाइयं पाणहाओ य विसज्जेइ, पाणहाओ विसज्जित्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, उत्तरासंगं करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए अंजलिमउलियहत्थे जेणेव समणे भयवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समणं भयवमित्यादि । 'आयंते' त्ति शौचार्थकृतजलस्पर्शः । 'चोक्खे' त्ति आचमनादपनीताशुचिद्रव्यः । भगवत्यां (सू० ३८४) 'पब्भट्ठउत्तरिज्जा' प्रभ्रष्टं व्याकुलत्वादुत्तरीयं वसनविशेषो यस्याः सा तथा जमालिमातेत्यर्थ' इत्यनेन उत्तरिज्जशब्देन उत्तरीयम्-उत्तरासङ्ग-वस्त्रमुक्तम् (सू० ३८४) । पभू णं भंते ! चमरे असुरिंदे चमरचंचाए रायहाणीए सुहम्माए सभाए चमरंसि सीहासणंसि तुडिएण सद्धि-तुटितं-वर्गः, दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? नो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! नो पभू जाव विहरित्तए ? अज्जो चमरस्स णं चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए माणवए चेइयखंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ-जिनसक्थीनि सन्निक्खित्ताओ चिट्ठंति, जाओ णं चमरस्स ३ अन्नेसिं च बहूणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ चन्दनादिना, वंदणिज्जाओ स्तुतिभिः, नमंसणिज्जाओ प्रणामतः, पूयणिज्जाओ पुष्पैः, सक्कारणिज्जाओ वस्त्रादिभिः, सम्माणणिज्जाओ प्रतिपत्तिविशेषैः, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जाओ भवंति, से तेणट्ठेणं अज्जो ! एवं वुच्चइ-नो पभू चमरे जाव विहरित्तए इति भगवत्यां दशमशतपञ्चमोद्देशके आशातनापरिहार उक्तः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

भगवतीविचाराः

तस्स संखस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था० सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभयारिस्स उम्मुक्कमणि-सुवण्णस्स ववगयमालावन्नगविलेवणस्स निक्खित्तसत्थमुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए । पक्षे-अर्द्धमासे भवं पाक्षिकम् । इति द्वादशशते भगवत्यां (सू० ४३८) । अस्मिन्नेव शते-पोसहसालं पमज्जइ पोसहसालं पमज्जइत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ शङ्खश्रावक इति शेषः ।

तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एज्जमाणं पासइ पासइत्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छित्ता पोक्खलिं समणोवासगं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता आसणेणं उवनिमंतेइ, आसणेण उवनिमंतेत्ता एवं वयासी-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागम-णप्पयोअणं ? इत्यादि । तथा तए णं से पोक्खली जेणेव पोसहसाला जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गमणागमणाए पडिक्कमइ, गमणागमणाए पडिक्कमित्ता संखं समणोवासगं वंदइ नमंसइ इत्याद्यपि द्वादशशते भगवत्यां (सू० ४३८) गमणागमणाए पडिक्कमइत्ति ईर्यापथिकां प्रतिक्रामतीत्यर्थः ।

बउसे णं पुच्छा गो० ! जहन्नेणं अट्ठपवयणमायाओ उक्कोसेणं दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा । वृत्तिर्यथा-अष्टप्रवचनमातृपालनरूपत्वा-च्चारित्रस्य, तद्वतोऽष्टप्रवचनमातृपरिज्ञानेनाऽवश्यंभाव्यं, ज्ञानपूर्वक-त्वाच्चारित्रस्य, तत्परिज्ञानं च श्रुताद् । अत अष्टप्रवचनमात्र-प्रतिपादनपरं श्रुतं बकुशस्य जघन्यतोऽपि भवतीति । तच्च 'अट्ठण्हं पवयणमाईणं' इत्यस्य यद् विवरणसूत्रं तत्सम्भाव्यते । यत्पुनरुत्त-राध्ययनेषु प्रवचनमातृनामकमध्ययनं तद् गुरुत्वात् विशिष्टतर-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

श्रुतत्वाच्च जघन्यतो न सम्भवति, बाहुल्याश्रयं चेदं श्रुतप्रमाणं। तेन न माषतुषादिना व्यभिचार इति। भगवत्याः सूत्रं (७५७) व्याख्या च।

। इति भगवती-विचारः ।

"तं सेयं खलु मम पोसहसालाए पोसहियस्स बंभयारिस्स उम्मुक्कमणिसुवण्णस्स ववगयमालावन्नगविलेवणस्स निक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबीइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स" इति ज्ञातधर्म-कथायाम् (सू० १६) अभयकुमारवक्तव्यतायाम्। सीयं दूरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलया पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया। तं जहा-'सोत्थिय १ सिरिवच्छ २ नंदियावत्त ३ वद्धमाणग पुरुषारूढः पुरुष इत्यन्ये। इति ज्ञातधर्मकथायां (सू० २४) मेघकुमारस्य। 'जाव नंदीसरवरे दीवे महिमा' इति (सू० ६६) जन्मकल्याणं कृत्वा नन्दीश्वरे महिमानं कुर्वते इत्यर्थः। मल्लिवक्तव्यतायाम्। 'मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिमं करिंति करित्ता जेणेव नंदीसरे० अट्ठाहियं करंति करेत्ता पडिगया। (सू० ७७)

सुद्धपावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणघरं अणुविसइ, अणुविसइत्ता जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ करेत्ता लोमहत्थयं परामुसइ एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेइ तहेव भाणियव्वं, जाव धूवं डहइ डहित्ता वामं जाणुं अंचेइ, दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धर-णीतलंसि नमेइ, नमेत्ता ईसिं पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी-नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता जिणघराओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

ज्ञातधर्मकथाविचाराः

अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ' इति ज्ञातधर्मकथा सू० (११९)। वृत्तिस्तु यथा-'जाव धूवं डहित्ता जिणघराओ पडिनिक्खमइ'त्ति यावत्करणादर्थत इदं दृश्यं-लोमहस्तकं परामृशति, ततस्तेन जिनप्रतिमाः प्रमार्ष्टि, सुरभिणा गन्धोदकेन स्नपयति, गोशीर्षचन्दनेनानुलिम्पति, वस्त्राणि निवासयति, ततः पुष्पाणां माल्यानां-ग्रथितानां गन्धानां चूर्णानां वस्त्राणामाभरणानां चारोपणं करोति स्म। मालाकलापावलम्बनं पुष्पप्रकरं तन्दुलैर्दर्पणाद्यष्टमङ्गलकालेखनं च करोति। ततो वामं अंचेइ-उत्क्षिपतीत्यर्थः। दाहिणं धरणितलंसि निहट्टु-निहत्य-स्थापयित्वा निवेशयति निवेसेइ इत्यस्य पर्यायः। 'वंदइ नमंसइ' त्ति। तत्र वन्दते-चैत्यवन्दनविधिना प्रसिद्धेन, नमस्यति पश्चात् प्रणिधानादि-योगेनेति वृद्धाः। न च द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्रं चैत्यवन्दनमभिहितं इत्यन्यस्यापि श्रावकादेस्तावदेव तदिति मन्तव्यं, चरितानुवाद-रूपत्वादस्य। न च चरितानुवादवचनानि विधिनिषेधसाधकानि भवन्ति, अन्यथा सूरिकाभादिदेववक्तव्यतायां बहूनां शस्त्रादिवस्तू-नामर्चनं श्रूयते। किं चाऽविरतानां प्रणिपातदण्डकमात्रमपि चैत्यवन्दनं सम्भाव्यते। यतो वन्दते नमस्यतीति पदद्वयस्य वृद्धान्तरव्याख्या-नमेवमुपदर्शितं जीवाभिगमवृत्तिकृता-विरतिमतामेव प्रसिद्धचैत्यवन्द-नविधिर्भवति, अन्येषां तथाभ्युपगमपुरस्सरकायोत्सर्गाद्यसिद्धेः, ततो वन्दते सामान्येन, नमस्करोति-आशयवृद्धेः प्रीत्युत्थानरूपनमस्कारेणेति। किञ्च-'समणेण सावएण य अवस्स कायव्वयं हवइ जम्हा। अंतो अहोनिसिस्स य तम्हा आवस्सयं नाम'॥ तथा 'जण्णं समणो वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे उभओ कालं आवस्सए चिट्ठइ, तण्णं लोउत्तरीए भावावस्सए' इत्यादेरनु-योगद्वारवचनात्। तथा सम्यग्दर्शनसम्पन्नः प्रवचनभक्तिमान् षड्विधावश्यकनिरतः षट्स्थानकयुक्तश्च श्रावको भवतीत्युमास्वा-तिवाचकवचनाच्च श्रावकस्य षड्विधावश्यकस्य सिद्धावावश्यकान्तर्गतं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

प्रसिद्धं चैत्यवन्दनं सिद्धमेव भवतीति। इति ज्ञातधर्मकथायां द्रौपदीस्वयंवरामण्डपवक्तव्यतायाम् उक्तम्। सिंहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ आमुयइ, आमुइत्ता तित्थयराभिमुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसेइ निवेसित्ता' इति कालीदेवी चमरचंचाए रायहाणीए करोतीति शेषः। ज्ञातधर्मकथायाम्। (सू० १४८)

'तए णं से काली कुमारी पासं अरिहं वंदइ नमंसइ, नमंसित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुयित्ता सयमेव लोयं करेइ जेणेव पासे अरहा तेणेव उवागच्छइ' इति अग्राविचारो ज्ञातायाम्।

'अपमज्जिय-सेज्जासंथारे' इति सूत्रपदवृत्तौ-शय्या-शयनं, तदर्थः संस्तारकः-कुशकम्बलफलकादिः शय्यासंस्तारकः' इति उपासकदशायां श्रावकसंस्तारकविचारः। एवं अप्रमार्जितदुःप्रमार्जित-शय्यासंस्तारकोऽपि नवरं प्रमार्जनं वसनाञ्चलादिना। इति उपासक-दशावृत्तौ श्रावकं प्रति विचारः।

"नो खलु मे भंते! कप्पइ अज्जप्पभिइं अण्णउत्थिया वा अण्णउत्थियदेवयाणि वा अण्णउत्थियपरिग्गहियाइं वा चेइयाइं वंदित्तए नमंसित्तए वा, पुव्विं अणालत्तएणं आलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउं वा। नण्णत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं। कप्पइ मे समणे निग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं पीठफल-गसेज्जासंथारएणं ओसहभेसज्जेण य पडिलाभेमाणस्स विहरित्तए" इति। उपासकदशायां श्रावकस्वरूपम्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

उपासकदशाविचारा:

' अत्थि णं आणंदा ! गिहिणो जाव समुप्पज्जइ, नो चेव णं ए महालए, तं णं तुमं एयस्स ठाणस्स आलोएहि निंदाहि गरिहाहि अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जाहित्ति । (सू० १६) गौतमेनोक्तम् आनन्दं प्रति । आलोचनाविचारोऽयम् ।

जेणेव कुल्लाए सन्निवेसे, जेणेव मित्तनाइनियगसंबंधे परियणे, जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जइत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ दब्भसंथारयं संथरइ दब्भसंथारयं दुरुहइ, पोसहसालाए पोसहिए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, आणंद इतिशेष: । उपासकदशायाम् ।

तए णं सा भद्दा समणोवासयं चुलणीपियं एवं वयासी–नो खलु केइ पुरिसे तव जाव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ निणेइ, निणेइत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवस्सग्गं करेइ । एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे तण्णं तुमं इयाणिं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि, तं णं तुमं पुत्ता ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठेहि अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जाहि, तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मगाए भद्दाए समणोवासियाए तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव पडिवज्जइ इति । वृत्तिस्तु यथा–एस णं तए विदरिसणे दिट्ठत्ति । एतच्च त्वया विदर्शनं–विरूपाकारं बिभीषिकादि दृष्टम् इति । एनमर्थं आलोचय–गुरुभ्यो निवेदय, पडिक्कमाहि–निवर्त्तस्व, निंदाहि–आत्म-साक्षिकं कुत्सां कुरु, गरिहाहि–गुरुसाक्षिकं कुत्सां विधेहि, विउट्टाहि वित्रोट्य तद्भवानुबन्धविच्छेदं विधेहि, विसोहेहि–अतिचारमलक्षालनेन, अकरणयाए अब्भुट्ठेहि–तदकरणाभ्युपगमं कुरु, अहारिहं तवोकम्मं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पायच्छित्तं पडिवज्जाहि'त्ति प्रतीतम् । एतेन च निशीथादिषु गृहिणः प्रायश्चित्तस्याऽप्रतिपादनात् न तेषां प्रायश्चित्तमस्तीति ये प्रतिपद्यन्ते, तन्मतमपास्तं, साधूद्देशेन गृहिप्रायश्चित्तस्य जीतव्यवहारानुपातित्वादिति । उपासकदशा-तृतीयाध्ययने (सू० ३९) ।

'तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए अण्णया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया जेणेव पुढविसिलापट्टए नामामुद्दगं च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ ठवेइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ' इत्यर्थात् मुखवस्त्रिका श्रावकस्य उत्तरिज्जगं-उत्तरीयवस्त्रं उत्तरिज्जेणं आसं पेहेइ त्ति सर्वत्र दृष्टत्वात् उपासकदशासु (सू० ३६)

कृतबलिकर्मा बलिकर्म-लोकरूढं 'कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता' कौतुकं-मषीपुण्ड्रादि मङ्गलं-दध्यक्षतचन्दनादि, एते एव प्रायश्चित्तमिव प्रायश्चित्तं दुःस्वप्नादिप्रतिघातकत्वेन अवश्यकार्यत्वादिति । उपासकदशावृत्तिव्याख्या । उत्तरीयकम्-उपरितनवसनं उपासकदशाष्टमेऽध्ययने ।

'तए णं सा देवई देवी ते अणगारे इज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठ जाव हियया आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेइत्ता सत्तट्ठपयाइं तिखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेइत्ता वंदइ नमंसइ' त्ति प्रदक्षिणाविचारः अन्तकृद्दशासु । 'तए णं सा पउमावई उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए अवक्कमइ, सयमेव पव्वावेइ पव्वावेत्ता सयमेव मुंडावेइ, सयमेव जक्खणीए अज्जाए सिस्सिणिं दलयइ' कृष्णभार्या इति शेषः । अन्तकृद्दशासु अष्टाविचारः ।

नापि पूजनया - तीर्थनिर्माल्यदानमस्तकगन्धक्षेपमुखवस्त्रिका-नमस्कारमालिकादानादिलक्षणया भैक्ष्यं गवेषणीयमिति शेषः । इति प्रश्नव्याकरणवृत्तौ श्रावकं प्रति मुखपोतिकाविचारः षष्ठेऽध्ययने ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

रायपसेणइयविचारा:

'विदिण्णे य गुरुजणेणं उवविट्ठे संपमज्जिऊण ससीसं कायं तहा करयलं' इति सूत्रं । वृत्तिस्तु–उपविष्ट उचितासने, सम्प्रमृज्य मुखवस्त्रिका–रजोहरणाभ्यां सशीर्षं कायं–समस्तकं शरीरं तथा करतलं–हस्ततलं च इति । भोजनसमये साधुना मुखवस्त्रिका प्रत्युपेक्षणीया । वज्जेयव्वो य सव्वकालं अचियत्तघरप्पवेसो अचियत्तभत्तपाणं अचियत्तपीढफलगसेज्जासंथारगवत्थपत्तकंबलदंडगरउहरणनिसेज्जचोलपट्टगमुहपोत्तियपायपुंछणाइं भायणभंडोवहिउवगरणं । वृत्तिर्यथा-अचियत्तपीठफलकशय्यासंस्तारकवस्त्रपात्रकंबलदण्डकरजोहरणनिषद्याचोलपट्टकमुखपोतिकापादप्रोञ्छनादि प्रतीतमेव । किमेवंविधभेदमित्याह – भाजनं – पात्रं भाण्डं वा तदेव मृन्मयम् उपधिश्च–वस्त्रादि: एत एवोपकरणमिति समास: । तद्वर्जयितव्यम् इति प्रक्रम: । इति मुखवस्त्रिकाक्षराणि प्रश्नव्याकरणे ।

जिणपडिमाओ सुरभिणा गंधोदएण ण्हाणेइ ण्हाणित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपइ अणुलिंपइत्ता० जिणपडिमाणं अहयाइं देवदूसजुयलाइं नियंसेइ नियंसेइत्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं चुण्णारुहणं गंधारुहणं वत्थारुहणं आभरणारुहणं करेइ इति । रायपसेणइए (सू० ४४) ।

जिणपडिमाणं पुरओ अच्छेहिं सण्हेहिं सेएहिं रययमएहिं तंदुलेहिं अट्ठट्ठमंगले आलिहइ इति । रायपसेणइयस्स ।

'जहण्णेणं सत्तरयणीए' त्ति सप्तहस्ते उच्चत्वे सिद्ध्यन्ति महावीरवत् । 'उक्कोसेणं पंचधणुस्सये' ति ऋषभस्वामिवत् । एतच्च द्वयमपि तीर्थकरापेक्षयोक्तम् । अतो द्विहस्तप्रमाणेन कूर्मापुत्रेण न व्यभिचारो, न वा मरुदेव्या सातिरेकपञ्चधनु:शतप्रमाणया इति । औपपातिके (सू० ४३) । ननु नाभिकुलकर: पञ्चविंशत्यधिकपञ्चधनु:शतमान: प्रतीत एव । तद्भार्यापि मरुदेवी तत्प्रमाणैव 'उच्चत्तं चेव कुलगरेहि सम'मिति वचनात् । अतस्तदवगाहना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

उत्कृष्टाऽवगाहनातोऽधिकतरा प्राप्नोतीति कथं न विरोधः । अत्रोच्यते-यद्यप्युच्चत्वं कुलकरतुल्यं तद्योषितामित्युक्तं तथापि प्रायिकत्वादस्य स्त्रीणां च प्रायेण पुंभ्यो लघुतरत्वात् पञ्चैव धनुःशतानि असावभवत् वृद्धकाले वा सङ्कोचात् पञ्च धनुःशतमाना साऽभवत् उपविष्टा वाऽसौ सिद्धा इति न विरोधः । औपपातिकोक्तं (सू० ४४)

सिद्धाययणं अणुप्पयाहिणी करेमाणे करेमाणित्ता पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ । वृत्तिस्तु-सिद्धायतनमागच्छति त्रिःप्रदक्षिणां करोति । ततः पूर्वद्वारेण प्रविशति इति जीवाभिगमे (सू० १४२) प्रदक्षिणाविचारः विजयदेववक्तव्यतायाम् । तथा लोमहत्थपणं पमज्जइ पमज्जित्ता सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेइ ण्हाणेइत्ता दिव्वाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेहिं लूहेत्ता सरसेण गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपइ अणुलिंपित्ता जिणपडिमाणं अहयाइं सेयाइं दिव्वाइं देवदूसजुयलाइं नियंसइ नियंसइत्ता अग्गेहिं वरेहिं य गंधेहि मल्लेहि य अच्चेइ अच्चेइत्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं गंधारुहणं वण्णारुहणं चुण्णारुहणं आभरणारुहणं करेइ० । तथा अच्छरसा तंदुलेहिं जिणपडिमाणं पुरओ अट्ठट्ठमंगलगे आलिहइ इत्यपि विजयदेववक्तव्यतायां जीवाभिगमे (सू० १४२) ।

महावित्तेहि अट्ठसय विसुद्धगंथजुत्तेहि अत्थजुत्तेहि अउणरुत्तेहिं संथुणइ संथुणइत्ता सत्तट्ठपयाइं ओसरइ ओसरइत्ता वामं जाणुं अंचेइ अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निवाडेइ तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवाडेइ निवाडेइत्ता पच्चुन्नमइ पच्चुन्नमइत्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ पडिसाहरइत्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-णमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं-जाव-सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं तिकट्टु वंदइ नमंसइ । इति सूत्रदण्डकः । वृत्तिस्तु-विधिना प्रणामं कुर्वन् प्रणिपातदण्डकं पठति यथा-णमोत्थु णं अरिहंताणं इत्यादि यावन्नमो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचारा:

जिणाणं'ति दण्डकार्थः । चैत्यवन्दनविवरणादवसेयः 'वंदइ नमंसइ' वन्दते ताः प्रतिमाः चैत्यवन्दनविधिना प्रसिद्धेन, नमस्करोति पश्चात् प्रणिधानादियोगेनेत्येके । अन्ये तु विरतिमतामेव प्रसिद्धः चैत्यवन्दनविधिरन्येषां तथाऽभ्युपगमे [पुरःसर] कायव्युत्सर्गासिद्धेरिति वन्दते-सामान्येन, नमस्करोत्याशयवृद्धेः व्युत्थाननमस्कारेण इति तत्त्वमत्र भगवन्तः परमर्षयः केवलिनो विदन्ति इति जीवाभिगमे (सू० १४२) चैत्यवन्दनाविचारः । तत्थ णं बहवे भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया देवा चाउम्मासिय-पाडिवएसु संवच्छरिएसु य अण्णेसु बहूसु जिणजम्मण-निक्खमण-नाणुप्पाय-परिनिव्वाणमाइएसु य देवकज्जेसु य देवसमुदयेसु य देवसमिईसु य देवपयोयणेसु य एगंतओ सहियासमुवागया समाणा पमुइय-पक्कीलिया अट्ठाहियाओ महामहिमाओ करेमाणा पालेमाणा सुहंसुहेण विहरंति इति जीवाभिगमे (सू० १८३) भणितम् । निशीथविचारा यथा-"साहंमियत्थलीसु जाय अद्धे भणावणगिहीसुं । असई पगासगहणं बलवइ दुट्ठेसु छण्णंपि । (गा० ३४५) चूर्णिस्तु असिवगहिए वि सति असिवगहिया वा साहू असंथरंता असिवगहिया वि सउत्तिन्ना वा दुल्लभभत्ते देसे पत्ता असंथरंता साहंमियाथली-देवद्रोणी 'जाय'त्ति आरहंत-पासत्थ परिगहिया देवद्रोणीसु पुव्वं जाययंतीत्यर्थः । इति देवद्रव्यविचारः ॥

अद्धाणे श्रान्तस्य पादादिदेशस्नानं सर्वस्नानं वा कर्त्तव्यं वादिनो वादिपर्षदं गच्छतः पादादिदेशस्नानं सर्वस्नानं वा आचार्यस्य अतिशयमितिकृत्वा देशस्नानं सर्वस्नानं वा ।

मुल्लजुयं पुण तिविहं जहण्णयं मज्झिमं तु उक्कोसं ।
जहण्णेण अट्ठारसगं सयसाहस्सं च उक्कोसं ॥
दो साभरगा दीविच्चगाउ सो उत्तरावहे एक्को ।
दो उत्तरावहा पुण पाडलिपुत्ते हवइ एक्को ॥ (९५७-९५८)

साभरको नाम रूपकः । इति वस्तुमूल्यविचारः ॥ चीराचरियाए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निग्गओ आयरिओ जा न नियत्तइ ता दसाओ न छिज्जंति (९७४ गाथाचूर्णिः ।) इति सूरिणा वस्त्रग्रहणाय गन्तव्यम् । चाउम्मासातीयं वासासु उउबद्ध मासतीयं वा वुड्डा वासातीयं वसमाणे कालउ निरुपम ॥ इति मासकल्पाक्षराणि । सेसं मंडलिराइणिओ सुब्भी दुब्भि दव्वाविराहेण करंबेउं मंडलिए भुंजति, एवं सव्वेसिं समया भवइ । गाथा तु-

तम्हा विहिए भुंजे दिण्णंमि गुरुण सेस राइणिओ ।
भुयइ करंबेऊणं एवं समया उ सव्वेसिं ॥
सागारिउत्ति को पुण काहे कइविहो व सो पिंडो ।
असेज्जायरो व काहे परिहरियव्वो व सो कस्सा ॥
दोसा वा के तस्सा कारणजाए व कप्पए कम्हि ।
जयणाए वा काए एगमणेगेसु घेत्तव्वो ॥ (११३८-९)
सेज्जायरो पहू वा पहुसंदिट्ठो य होइ कायव्वो ।
एगमणेगो व पहु पहुसंदिट्ठो वि एमेव (११४४) ।
जइ जग्गंति सुविहिया करिंति आवस्सगं तु अण्णत्थ ।
सेज्जायरो न होइ सुत्ते व कए व सो होइ ॥
अण्णत्थ व सोऊणं आवस्सग चरिममज्झहिं तु करे ।
दोण्णि वि तरा भवंति सत्थाइसु अन्नहा भयणा (११४८-९)

इदं च प्रायशः सार्थादिषु सम्भवति इत्यर्थः ।

असइ वसहीए वीसुं वसमाणाणं तराउ भइयव्वा ।
तत्थण्णत्थ व वासे छत्तछायं च वज्जंति (११५१)
तण-डगल-छार-मल्लग-सेज्जा संथार-पीठ-लेवाइ ।
सेज्जायरपिंडो सो न होइ सेहो व सोवहिओ ॥
आपुच्छियमुग्गाहिय वसहीओ निग्गहोग्गहे एगो ।
पढमाई जाव दिवसं वुच्छे वज्जेज्जऽहोरत्तं ॥ (११५४-११५५)

एकशब्दः प्रत्येकं सम्बद्ध्यते ॥ 'पढमाइ जाव दिवसं' ति अणुग्गए सूरे निग्गओ सूरोदयाओ असेज्जायरमिच्छइ । अन्नो भणइ सूरुग्गमे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचारा:

निग्गयाण जाव पढमपहरो ताव सेज्जायरो इत्यादि विकल्पा: ॥ पए सव्वे अणापसा । इमो आएसो वुच्छे वज्जेज्जहोरत्तं' न पहरविभागपकप्पणाए विसेसो कोइ अत्थि ॥

लिंगत्थस्स च वज्जो तं परिहरओ व भुंजतो वावि ।

जुत्तस्स अजुत्तस्स व रसावणो तत्थ दिट्ठंतो ॥ (गा० ११५८)

साहुगुणवज्जिओ जो लिंगं धरेइ तस्स जो सेज्जायरो तस्स पिंडं सो भुंजउ मा वा भुंजउ तहावि वज्जो साहुगुणेहि जुत्तस्स अजुत्तस्स इत्यर्थ: ॥

तित्थयरपडिकुट्ठो आणा अन्नाय उग्गमो वि य न सुज्झे ।

अविमुत्ति अलाघवया दुलहसेज्जाए वोच्छेओ (गा० ११५९)

पुर-पच्छिमवज्जेहिं अवि कम्मं जिणवरेहिं सव्वेहिं ।

भुत्तं विदेहएहि य नो सायरियस्स पिंडो उ ॥ (गा० ११६०)

दुविहे गेलम्मी निमंतणा दव्वदुलभे असिवे ।

ओमोयरिय पओसे भए य गहणं अणुण्णायं ॥ (गा० ११६१)

दुविहं गेलण्णं आगाढमणागाढं ।

सागारियं अपुच्छिय पुव्वं अगवेसिऊण जे भिक्खु ।

पविसइ भिक्खस्सट्ठा सो पावइ आणमाइणि ॥ (गा० १२०६)

वर्षासु काष्ठसंस्तारकादिभावे ।

पाणा सीयल कुंथू उप्पायग दीहगोम्हि सुसुणाए ।

पणए य उवहि कुच्छणमल उदगवहो अजीराई (गा० १२४५)

वासाणं एगयरं संथारं जो उवाइणे भिक्खू

दसरायाओ परेणं सो पावइ आणमाईणि ॥ (गा० १२७८)

दशरात्रपरात् यो भिक्षु: उवाइणे अर्पयति इत्यर्थ: । 'उग्गहणंतग' ति जोणिदुवारस्स सामइकी संज्ञा तस्स णं तउ आच्छादकवस्त्रम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

छाएइ अणुकुइए गंडे पुण कंचुओ असिव्वियओ ।
एमेव य उक्कच्छिआ सा नवरं दाहिणे पासे ॥ (गा० १४०४) इति । गाथार्थो यथा-अणुकुंचिया अनुक्षिप्ता इत्यर्थः । गंड इति स्तनाः । अहवा 'अणुकुंचिय' त्ति अनुः-स्वल्पं 'कुञ्च स्पन्दने' कञ्चुकाभ्यन्तरे सप्रविचाराः न गाढमित्यर्थः । गाढपरिधाने प्रतिविभागे विभक्ता जनहार्या भवन्ति, तस्मात् कञ्चुकस्य प्रशिथिलं परिधानमित्यर्थः । स च कंचुगो दीहत्तणे सहत्थेण अड्ढाइज्जहत्थो, पुहत्तेण हत्थो, कच्छाए समीवं उवकच्छं वकारलोपं काउं तं आच्छादयतीति उक्कच्छिका एमेव य उक्कच्छियाए प्रमाणं वाच्यं । सा य समचउरंसा सहत्थेण दिवड्ढहत्था उरं दाहिणपासं पट्टिं च छायंती परिहिज्जइ, खंधे वामपासे य जोत्तपडिबद्धा भवइ इति गाथार्थः ।

अक्खा संथारो य एगमणेगंगिओ य उक्कोसो ।
पोत्थगपणगं फलगं बिइयपए होइ उक्कोसो ॥ १४१६ ॥

समोसरण-अक्खा । संथारगो एगंगिओ अणेगंगिओ य । फलगं जत्थ पढिज्जइ, मंगलफलगं वा जं वुड्ढवासिणो । एस बिइयपएण उक्कोसो उवग्गहिओ ।

वासत्ताणे पणगं चिलिमिलिपणगं दुगं च संथारे ।
दंडाईपणगं पुण मत्तगतिग पायलेहणिया ॥ १४१४ ॥ गाथार्थो यथा-वासत्ताणे पणगं-वाले सुत्ते सुई पलास कुडसिसगछत्तए य । वालः-कम्बलः, सुत्ते पटी, शूची तालपत्राणां, पलास छत्रं, कुडसि-सगछत्तयं, सिरिवन्नि खुंपकं । चिलिमिलीपणगं-पोत्ते वाले रज्जु य कडग दंडमई । संथारगदुगं-झुसिरो अज्झुसिरो य । दंडपणगं-दंडे विदंडे लट्ठी विलट्ठी नालिया य । मत्तयतियं-खेल काइय सन्ना य ।

मुहपोत्तिगरयहरणे कप्पतिग-निसेज्ज-चोलपट्टो य ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचाराः

संथारुत्तरपट्टे व पेक्खिए जहुग्गमे सूरो ॥ इति प्राभातिक-पडिलेहणगाथा (१४२५) एतेसु प्रेक्षितेसु यथा रविः उदेति । चउफलं मोक्कलं वा खंधे करेइ दुवार इति सीसदुवारिया करेइ । दो वि बाहाओ छाइंतो संजइ पाउरणेण पाउरइ ॥ एगओ दुहओ वा कप्पअंचला खंधारोविया गल्लपक्खं पाउणइ । इति (१५२५) प्रावरणविचारः ।

भिक्खुवियार विहारे दुइज्जंते व गाममणुगामं ।

सीसदुवारं भिक्खू जे कुज्जा आणमाईणि ॥ १५२४ ॥

अनेन सीसढक्कणनिषेधः ।

जल्लो उ होइ कमढं मलो उ हत्थाइघट्टिओ सडइ ।

पंको पुण सेउल्लो चिक्खलो बावी जो लग्गो ॥ १५२२ ॥

सक्कमहो इंदमहो आइसद्दाओ सुगिम्हगाइ, जो व जत्थ महामहो एएसु मा पमत्ते देवया छलेज्जा । तेण अणागाढजोगनिक्खेवो । किञ्चाऽन्यत्-तेसु य सक्कमहादिदिवसेसु विगइलाभो भवइ, ताओ दुब्बलसरीरा भुंजंति, ताहे पीणिज्जन्ति (बलिनो भवन्तीत्यर्थः) । इयरे नाम आगाढजोगवाही ते जोगं वहंति, न तेसिं उद्देसो न वा पुव्वुद्दिट्ठं पढंति (१६०८) इत्यक्षरैरनध्याये योगोद्वहननिषेधः । तक्काइ एगंगियं भुंजइ इति (१६०७) तक्राम्बिलाक्षराणि ।

विगई विगईभीओ विगइगयं जो उ भुंजए भिक्खू ।

विगई विगइसहावा विगई विगइं बला नेइ ॥ १६२२ ॥

व्याख्या-घृतादिविगई, बिइयविगइगहणेण कुगई । विगईए कयं विगइकथं जहा विस्संदणं, विगई वा गयं जम्मि दव्वे तं दव्वं विगइगयं, जहा दध्योदनः । विगईए भुत्ताए साहु विगयसहावो भवइ, सा य विगई भुत्ता विगइं नरगाइयं बला नेइ इत्यर्थः ।

विगइमणट्ठा भुंजइ न कुणइ आयंबिलं न सद्दहइ ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

एसो उ सव्वभंगो देसे भंगो इमो तत्थ ॥ १५९५ ॥
काउस्सग्गमकाउं भुंजइ भोऊणं कुणइ वा पच्छा ।
सय काऊण व भुंजइ तत्थ लहू तिन्नि उ विसिट्ठा ॥ १५९ ॥
जावच्चिय कालगया ताहे विय दोण्णि तिण्णि वा दिवसे ।
गच्छेज्ज संजइणं अणुसट्ठिं गणहरो दाउं ॥ १७५१ ॥
पडिणीय-मेच्छ सावय-गय-महिसा तेण साणमाईसु ।
आसन्ने उवस्सग्गे कप्पइ गमणं गणहरस्स ॥ १७३४ ॥
संयतीवसतौ इत्यर्थः ।

पियधम्मो दढधम्मो मियवाई अप्पकोऊहल्लो य ।
अज्जं गिलाणियं खलु पडिजग्गइ एरिसो साहू ॥ १७५१ ॥
जेण पहेण पक्खियाइसु आगच्छन्ति, तम्मि पहे दंडाइ उवगरणं न मुंचंति इतिशेषः । (उ०४ सू०२४)

पासित्ता भासित्ता सोउं सरिऊण धावि जे भिक्खू ।
विप्फालित्ताणं मुहं सवियारकहं कहं हसइ ॥ १८२३ ॥
पासवणुच्चारं वा जे भिक्खू वोसिरेज्ज अविहीए ।
सो आणा अणवत्थं मिच्छत्तविराहणं पावे ॥ १८२६ ॥

पट्ठीवंसो दो० इत्यादि गाथा, वंसगकडणुक्कं वण० इत्यादि गाथा ।
तम्हा सव्वाणुन्ना सव्वनिसेहो य पवयणे नत्थि ।
आयव्वयं तुलेज्जा लाहाकंखि व्व वाणियओ ॥ २०६७ ॥
जो चेव य उवहिम्मि गमो उ सो चेव होइ भत्तपाणम्मि ।
भुंजण वज्जमणुन्ने तिण्णि दिणे कुणइ पाहुण्णं ॥ २०९८ ॥
जत्थ संजईओ संजयाण किइकम्मं करंति, तत्थ सव्वं उद्धट्ठिया सुत्तावत्ताइ करंति, न मुद्धाणं (उ) ट्ठिए रयहरणे पाडिंति । केइ आयरिया भणंति-उद्धट्ठिया चेव रओहरणे सिरे पणमंति तं चेव तेसिं मुद्धाणंति । संयतीविचारः (२११७ गाथा चू०) ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचाराः

वद्धमाणसामिस्स सिस्सो सुहम्मो, तस्स जंबुनामा, तस्सवि पभवो, तस्स सेज्जंभवो, तस्सवि सिस्सो जसभद्दो, जसभद्दस्स सिस्सो संभूओ, संभूयस्स थूलभद्दो, थूलभद्दं जाव सव्वेसिं एकसंभोगो आसि । थूलभद्दस्स जुगप्पहाणा दो सीसा अज्जमहागिरी अज्जसुहत्थी य । इति पर्वक्रम उक्तः (२१५४ गाथाचूर्णिः) ।

जे भिक्खू सुहुमाइं करेज्ज रयहरणसीसगाइं च ।
सो आणा अणवत्थं मिच्छत्तविराहणं पावे ॥ २१७१ ॥

रयहरणसीसगाणि–रयहरणदसाओ ।

तिण्हुवरि बंधाणं दंडतिभागस्स हेट्ठ उवरिं वा ।
दोरेण असरिसेण व संतरं बंधंत आणाइ ॥ २१७८ ॥

असरिसो अतज्जाओ इत्यर्थः ।

नाणाइसंधणट्ठा वि सेविया नेइ उप्पहं विगई ।
किं पुण जो पडिसेवइ विगइं वण्णाइणं कज्जे ॥ २२८४ ॥

जे भिक्खू आगंतागारेसु जाव परियावसहेसु वा एगो इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेइ, उच्चारं पासवणं वा परिट्ठवेइ, अण्णयरं वा अणारियं निट्ठुरं असमणपाओग्गं कहं कहेइ कहंतं वा साइज्जइ (उ० ८ सू० १) । जे उज्जाणंसि वा उज्जाणगिहंसि वा एगो एगाए–इत्थिए सद्धिं जाव कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ (उ० ८ सू० २) इत्येकाकिस्त्रीकथाविचारः ।

अवि मायरं पि सद्धिं कहा उ एगाणियस्स पडिसिद्धा ।
किं पुण अणारगाई तरुणित्थीहिं सह गयस्स ॥ २३४४ ॥
अन्नावि अप्पसत्था थीसु कहा किमु अणारि असब्भा ।
चंकमणज्झायभोयण उच्चारेसुं तु सविसेसा ॥ २३४५ ॥
चक्की वीसइ भागं सव्वेवि य केसवाओ दस भागं ।
मडलिया छब्भागं आयरिया अद्धमद्धेणं ॥ २३५५ ॥

पापेन गृह्यन्ते इतिशेषः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

नि:शेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

रोहेउ अट्ठमासे वासासु सभूमिए निवा जंति ।
रुद्धेण तेण नगरे हावंति न मासकप्पं तु ॥ २३७५ ॥
गुत्तागुत्तदुवारा कुलपुत्ते सत्तमंतगंभीरे ।
भीयपरिसे मद्दविए अज्जासेज्जायरे भणिए ॥ २४५७ ॥
घणकुड्डा सकवाडा सागारिय भगिणि माउ पेरंता ।
निप्पच्चवाय जोग्गा विच्छिन्न पुरोहडा वसही ॥ २४५५ ॥
संयतीशय्यागाथे ।

जो मुद्धा अभिसित्तो पंचहि सहिओ अ भुंजए रज्जं ।
तस्स उ पिंडो वज्जो तव्विवरीयम्मि भयणा उ ॥ २४९७ ॥
सेणावइ-अमच्च-पुरोहिय-सेट्ठि-सत्थवाहेहिं पंचहिं सहिओ ।
मुदिए मुद्धभिसित्ते मुइओ जो होइ जोणिसुद्धो उ ।
अभिसित्तो उ परेहिं सयं च भरहो जहा राया ॥ २४९८ ॥
असणाईया चउरो वत्थे पाए य कंबले चेव ।
पाउंछणए य तहा अट्ठविहो रायपिंडो उ ॥ २५०० ॥
जे भिक्खू राईणं निग्गच्छंताण अहव निंताणं ।
चक्खुवडियाए पयमवि अभिधारे आणमाईणि ॥ २५३९ ॥
जइ खलु पुरिमं संघं उद्दिसई मज्झिमस्स तो कप्पे ॥ २६७० ॥

अस्या अर्थो यथा-रिसभसामिणो तित्थे जे समणा समणीओ वा ते उद्दिसिउं करेइ, तो तेसिं अकप्पं, मज्झिमाण पुण कप्पं, तेसिं मज्झिमाण कडं दोण्हवि पुरिम-मज्झिमाण अकप्पं इत्यर्थः । इत्याधाकर्मविचारः ।

गुरुणो जावज्जीवं सुद्धमसुद्धेण होइ कायव्वं ।
वसहे बारस वासा अट्ठारस भिक्खुणो मासा ॥ २६८६ ॥
वसहे-उपाध्याये इत्यर्थः ।

जह भमरमहुयरिगणा निवयंति कुसुमियंमि वणसंडे ।
तह होइ निवइयव्वं गेलण्णे कइवयजढेण ॥ २९७१ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचारा:

तेगिच्छगस्स इच्छाणुलोमणं जो न कुज्ज सइ लामे ।
असंजमस्स भीओ अलस पमाई च गुरुगा से ॥ ३०६२ ॥

तेगिच्छगो–गिलाणपडिजागरक: ।

खंतिखमं मद्दवियं असढमलोलं च लद्धिसंपन्नं ।
दक्खं सुभरमसुविरं हियग्गाहिं अपरितंतं ॥ ३१०५ ॥
सुत्तत्थापडिबद्धं निज्जरपेही जिइंदियं दंतं ।
कोउहलविप्पमुक्कं अणाणुकित्ति सउच्छाहं ॥ ३१०६ ॥
आगाढमणागाढे सद्दहगनिसेवगं च सट्ठाणे ।
आउरवेयावच्चे एरिसयं तु निउंजेज्जा ॥ ३१०६ ॥

असुविरो–अनिद्रालु, सुत्तत्थापडिबद्धो–गृहीतसूत्रार्थ: । को अन्नो एवं काउं समत्थो, तुज्झ वा एरिसं तारिसं मए कयंति एवं जो नवि कथयति सो अणाणुकित्ती ।

पर्युषणाविचारो यथा–पज्जोसवणाए अक्खराइ हुंति उ इमाइं गोण्णाइं ।

परियागववत्थवणा पज्जोसवणा य पागइया ॥ ३१३८ ॥
परिवसणा पज्जुसणा पज्जोसवणा य वासवासो य ।
पढमं समोसरणं ति य ठवणा जेट्ठोग्गहेगट्ठा ॥ ३१३९ ॥

जम्हा पज्जोसवणादिवसे पव्वज्जापरियागो पत्तिया मम वरिसा उट्ठावियस्स तम्हा परियागववत्थणा भण्णइ ।

ऊणाइरित्तमासे अट्ठ विहरिऊण गिम्हहेमंते ।
एगाहं पंचाहं मासं व जहा समाहीए ॥ ३१४४ ॥
पडिमापडिवन्नाणं एगाहो पंचाहो तहाऽलंदे ।
जिणसुद्धाणं मासो निक्कारणओ य थेराणं ॥ ३१४७ ॥

'जिणसुद्धाणं'ति जिणकप्पियाणं थेराणं चेत्यर्थ: । कहं पुण ऊणा अइरित्ता वा उउबद्धिया मासा भवंति ? इत्याह–

काऊण मासकप्पं तत्थेव उवागयाण ऊणाउ ।
चिक्खल्लवासरोहेण वा बितीए ठिया नूणं ॥ ३१४५ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

जत्थ खेत्ते आसाढमासकप्पो कओ, तत्थेव खेत्ते वासावासत्तेण उवागया एवं ऊणा अट्ठ मासा । अहवा सचिक्खल्ला पंथा, वासं वा अज्जवि नो विरमइ, नगरं वा रोहियं, बाहिं वा असिवाइ कारणं, तेण मग्गसिरे सव्वे ठिया, अओ पोसाइआ आसाढंता सत्त विहरणकाला भवंति ।

इयाणिं जह अइरित्ता अट्ठ मासा विहारो तहा भण्णइ-

वासाखेत्तालंभे अद्धाणाईसु सत्थवसगा वा ।
वासगवाघाएण व अपडिक्कमिउं जइ वयंति ॥ ३१४६ ॥

अर्थो यथा-आसाढे सुद्धवासावासपाओग्गं खेत्तं मग्गंतेहिं न लद्धं ताव जाव आसाढचाउमासाओ परओ सविसइराए मासे अइक्कंते लद्धं, ताहे भद्दवयजोण्हपंचमीए पज्जोसियं, नव मासा एवं, एवं च अट्ठ मासा अइरित्ता । अहवा साहू अद्धाणपडिवन्ना सत्थवसेणं आसाढचाउम्मासाओ परेण पंचाहेण दसाहेण वा पक्खेण वा जाव वीसइराए वा मासे वासाखेत्तं पत्ताणं अइरित्ता अट्ठ मासा विहारो भवइ । अहवा वासवाघाए अणावुट्ठीए आसोए कत्तिए निग्गयाण अट्ठ अइरित्ता भवंति । वसहिवाघाए वा कत्तियचाउम्मासियस्स आरओ चेव निग्गया । आयरियाणं कत्तियपुण्णिमाए परओ वा साहगं नक्खत्तं न भवइ, अन्नं वा रोहाविकं जाणिऊण कत्तियचाउम्मासियं अपडिक्कमिउं जया वयंति तया अइरित्ता अट्ठ मासा भवंति ।

वासावासे कम्मि खेत्ते कम्मि काले पविसियव्वं ? इत्याह-

आसाढपुण्णिमाए वासावासासु होइ ठायव्वं ।
मग्गसिरबहुलदसमीओ जाव एक्कम्मि खेत्तम्मि ॥ ३१४९ ॥

कहं पुण वासापाउग्गं खेत्तं पविसंति ? इत्याह-

बाहिठिया वसभेहिं खेत्तं गाहित्तु वासपाउग्गं ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचाराः

कप्पं कहित्तु ठवणा सावणबहुलस्स पंचाहे ॥ ३१५० ॥

अर्थः-आसाढपुण्णिमाए पविट्ठा, पडिवयाओ आरब्भ पंच दिणाइं संथारग-तण-डगल-छार-मल्लगाईयं गेण्हंति ।

एत्थ उ अणभिग्गहियं वीसइरायं सवीसई मासं ।
तेण परमभिग्गहियं गिहिनायं कत्तिओ जाव ॥ ३१५१ ॥

अर्थः-इत्थ आसाढपुण्णिमाए सावणबहुलपंचमीए वासपज्जोसविए वि अप्पणो अणभिग्गहियं । अहवा जइ गिहत्था पुच्छंति अज्जो ! तुब्भे एत्थ वरिसाकाले ठिया अह न ठिया ? एवं पुच्छिएहि अणभिग्गहियं ति संदिद्धं वक्तव्यं । वीसइरायं सवीसइरायं मासं । जइ अभिवड्ढियवरिसं तो वीसइरायं जाव अणभिग्गहियं । अह चंदवरिसं तो सवीसइरायं मासं जाव अणभिग्गहियं तत्कालात् परतः अभिगृहीतं 'इह व्यवस्थिता' इति पुच्छंताणं कहंति ।

असिवाइकारणेहिं अहवा वासं न सुट्ठु आरद्धं ।
अभिवड्ढियंमि वीसा इयरेसु सवीसईमासो ॥ ३१५२ ॥

अर्थः-असिवाइएहि कारणेहिं जइ अच्छइ तो आणाइया दोसा । अह गच्छंति तो गिहत्था भणंति-एए सव्वण्णुपुत्तगा न किंचि जाणंति, मुसावायं च भासंति । ठियामो त्ति भणित्ता जेण निग्गया । तम्हा अभिवड्ढियवरिसे वीसइराए गए गिहिनायं करिंति । तिसु चंदवरिसेसु सवीसइराए मासे गए गिहिनायं करिंति । जत्थ अहिगमासगो पडइ-(चटति) वरिसे तं अभिवड्ढियवरिसं भण्णइ । जत्थ न पडइ तं चंदवरिसं । सो य अहिगमासगो जुगस्स अंते मज्झे वा भवइ । जइ अंते तो नियमा दो आसाढा भवंति अह मज्झे तो दो पोसा । सीसो पुच्छइ-कम्हा अभिवड्ढियवरिसे वीसतिरायं चंदवरिसे सवीसइमासो ? उच्यते-जम्हा अभिवड्ढियवरिसे गिम्हे चेव सो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

मासो अइक्कंतो तम्हा वीस दिणा अणभिग्गहियं कीरइ, इयरेसु तिसु चंदवरिसेसु सवीसइमास इत्यर्थः ।

एत्थ उ पणगं पणगं कारणियं जाव सवीसईमासो ।
सुद्धदसमीठियाण व आसाढी पुण्णिमोसमणा ॥ ३१५३ ॥

अर्थः-अहवा जत्थ आसाढमासकप्पो कओ तं वासपाउग्गं खेत्तं, अन्नं च नत्थि वासपाउग्गं ताहे तत्थेव पज्जोसविंति । एक्कारसीओ आढवेउं डगलाइयं गेण्हंति, पज्जोसवणाकप्पं च कहिंति, ताहे आसाढपुण्णिमाए पज्जोसविंति । एस उस्सग्गो । सेस कालं पज्जोसविंताणं सव्वो अववाओ । अववाएवि सवीसइराइमासाओ परेण अइक्कमेउं न वट्टइ । सवीसइराए मासे पुण्णे जइ वासखेत्तं न लब्भइ तो रुक्खहेट्ठा वि पज्जोसवेयव्वं । तं च पुण्णिमाए पंचमीए दसमीए एवमाइएसु पव्वेसु पज्जोसवियव्वं नो अपव्वेसु । सीसो पुच्छइ-इदाणिं कहं चउत्थीए-अपव्वे पज्जोसविज्जइ ? । आयरिओ भणइ-कारणिया चउत्थी अज्जकालगायरिएण पवत्तिया । ताहे रण्णा भणियं-तद्दिवसं मम लोगाणुवत्तिए इंदो अणुजाएयव्वो होहित्ति साधू चेइए न पज्जुवासिस्सं, ता छट्ठीए पज्जोसवणा कज्जउ ? । आयरिएण भणियं-न वट्टइ अइक्कामेउं, ताहे रण्णा भणियं-एवं तो अणागयं चउत्थीए पज्जोसविज्जउ । आयरिएण भणियं-एवं भवउ । ताहे चउत्थीए पज्जोसवियं । एवं जुगप्पहाणेहिं चउत्थी कारणे पवत्तिया । सा चेवाणुमया सव्वसाहूणं । रण्णा य अंतेउरिगा भणिया-तुम्हे अमावासाए उववासं काउं पडिवयाए सव्वखज्जभोज्जविहीहिं साहू उत्तरपारणए पडिलाभित्ता पारेह, पज्जोसवणाए अट्ठमंति काउं पडिवयाए उत्तरपारणयं भवइ । तं च सव्वलोगेणवि कयं, तओ पभिइ मरहट्ठविसए 'समणपूय' त्ति छणो पयडेइ ।

इयाणिं पंचगपरिहाणिमधिकृत्य कालावग्रह उच्यते-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचाराः

इय सत्तरी जहण्णा असिइं नउई दसुत्तरं च सयं ।
जइ वासइ मग्गसिरे दसरायं तिण्णि उक्कोसा ॥ ३१५४ ॥

अर्थो यथा-'इय' त्ति उपप्रदर्शने । जे आसाढचाउमासियातो सवीसइराए मासे गए पज्जोसविंति तेसिं सत्तरि दिवसा जहण्णओ वासकालुग्गहो भवइ । कहं सत्तरि ? उच्यते-चउमासाणं वीसुत्तरं दिवससयं भवइ, सवीसइ मासो पण्णासं दिवसा, ते वीसुत्तरसय-मज्झाओ सोहिआ सेसा सत्तरि । जे भद्दवयस्स बहुलदसमीए पज्जोसविंति तेसिं असीइ दिवसा मज्झिमो वासकालोग्गहो भवइ । जे सावणपुण्णिमाए पज्जोसविंति तेसिं नउइं दिवसा मज्झिमो चेव वासकालोग्गहो भवइ । जे सावणबहुलदसमीए पज्जोसविंति तेसिं दहुत्तरसयं मज्झिमो चेव वासकालोग्गहो भवइ । जे आसाढपुण्णिमाए पज्जोसविंति तेसिं वीसुत्तरं दिवससयं जेट्ठो वासकालोग्गहो भवइ । सेसंतरेसु वि दिवसपमाणं वत्तव्वं । एवमाइएगारेहि वरिसारत्तं एगखेत्ते अच्छित्ता कत्तियचाउमासियपडिवयाए अवस्सं निग्गंतव्वं । अह मग्गसिरे मासे वासइ चिक्खल्लजलाउला पंथा तो अववाएण एक्कं उक्कोसेण तिण्णि वा दसराया जाव तंमि खेत्ते अच्छंति । मार्गसिरपूर्णमासीं यावत् इत्यर्थः । मग्गसिरपुण्णिमाए परओ जइ वि सचिक्खला पंथा वासं वा गाढं अणुवरयं वासइ जइ विप्लवंतेहिं तहावि अवस्सं निग्गंतव्वं । अह ण णिग्गच्छंति तो चउगुरुगा एवं पंचमासिओ जेट्ठोग्गहो जाओ । तथाहि-

पण्णासा पाडिज्जइ चउण्ह मासाण मज्झओ ।
तओ उ सत्तरी (जहण्णा) होइ जहण्णो वासुवग्गहो ॥ ३१५५ ॥ तथा
काऊण मासकप्पं तत्थेव ठियाणऽतीयमग्गसिरे ।
सालंबयाण छम्मासिओ अ जेट्ठोग्गहो होइ ॥ ३१५५ ॥
जइ अत्थि पयविहारो चउ पाडिवयंमि होइ निग्गमणं ।
अहवा वि अणितस्सा आरोवण पुव्वनिद्दिट्ठा ॥ ३१५७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

अर्थो–वासाखेत्ते निव्विग्घेण चउरो मासा अच्छिउं कत्तियचाउम्मासं पडिक्कमिउं मग्गसिरबहुलपडिवयाए निग्गंतव्वं एस चेव चउपाडिवओ । तथा–

काइयभूमि संथारए य संसत्त दुल्लभे भिक्खे ।
एएहिं कारणेहिं अप्पत्ते होइ निग्गमणं ॥ ३१५९ ॥
राया कुंथू सप्पे अगणि गिलाणे य थंडिलस्स असई ।
एएहिं कारणेहिं अप्पत्ते होइ निग्गमणं ॥ ३१५८ ॥
वासं व न उ विरमइ पंथा वा दुग्गमा सचिक्खल्ला ।
एएहिं कारणेहिं अइक्कंते होइ निग्गमणं ॥ ३१६० ॥

एष पर्युषणाविचारः । वर्षाकाले खेत्ते ठवणा जहा–

उभओ वि अद्धजोयण अद्धकोसं तह हवइ खेत्तं ।
होइ सकोसं जोयण मोत्तूणं कारणज्जाए ॥ ३१६२ ॥

अर्थो–पुव्वावरेण दक्खिणुत्तरेण वा । अहवा उभओत्ति सव्वओ समंता अद्धजोयणं सह अद्धकोसेण एगदिसाए खेत्तप्पमाणं भवइ । उभओ वि मेलिउं गमागमेण वा सकोसं जोयणं भवइ । 'कारणज्जाएण' त्ति अववायकारणं मोत्तूण एरिसं उस्सग्गेण खेत्तं भवइ । वासासु एरिसं खेत्तठवणं ठवेइ । तथा–

उड्ढमहे तिरियंमि य सकोसं हवइ सव्वओ खेत्तं ।
इंदपयमाइएसू छद्दिसि सेसेसु चउ पंच ॥ ३१६३ ॥

नइमादिजलेसु इमा विही ।

दगघट्ट तिण्णि सत्त व उउवासासु न हणंति ते खेत्तं ।
चउरऽट्ठाइ हणंती जंघद्धेक्को वि य परेणं ॥ ३१५५ ॥ वर्षाकाले च–
उच्चारपासवण खेलमत्तए तिण्णि तिण्णि गिण्हंति ।
संजमआएसट्ठा भिज्जेज्ज व सेस उज्झंति ॥ ३१७२ ॥
धुवलोओ उ जिणाणं निच्चं थेराण वासवासासु ।
असहू गिलाणगस्स व तं रयणिं तू नइक्कामे ॥ ३१७३ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचाराः

अर्थो-थेराण वि वासासु धुवलोओ चेव । असह गिलाणाणं तु पज्जोसवणराइं नाइक्कमंति ।

वर्षासु च-मोत्तुं पुराण-भावियसड्ढे सच्चित्तसेसपडिसेहो ।
मा होहिति निद्धम्मो भोयणमोए य उड्डाहो ॥ ३१७४ ॥

अर्थो यथा-जइ सो भण्णइ-वरसंते मा नीहि, आउक्कायविराहणा भवइ । ताहे सो भणाइ-जइ एए जीवा तो निसग्गमाणे किं भिक्खं गिण्हह ? वियारभूमिं वा गच्छह ? कहं वा तुब्भे अहिंसगा साहवो य वासासु चलणे न धोवंति पायलेहणियाए निल्लिहंति ? ताहे सो भणाइ-असुइं चिक्खल्लं मद्दिऊण पाया न धोवंति, असुइणो एए समलस्स य कओ धम्मो ? । एवं विप्परिणओ उन्निक्खमइ । सागारियं ति काउं साधवो पाए धोवंति तो असामायारी पाउसदोसो य । वासे पडंते अभाविए सेहे वसहीओ अनिंते जइ मंडलीए भुंजइ तो उड्डाहं करेइ, पाणा इव एए परोप्परं संसट्ठं भुंजंति । अहंपि णेहिं विट्टालिओ ताहे विप्परिणमइ । अह मंडलीए न भुंजइ ताहे असमायारी । जइ वा ते साहवो निसग्गमाणे मत्तएसु उच्चारपासवणाइं आयरंति, सो य तं दट्ठुं विप्परिणामेज्जा ।

वर्षासु च-मणवयणकायगुत्तो दुच्चरियाइं च निच्चमालोए ।
अहिगरणे उ दुरूवग पज्जोओ चेव द्रमओ य ॥ ३१७९ ॥

प्रतिष्ठाविषयो यथा-ताहे सो विज्जुमाली भणाइ-इयाणिं किं मया कायव्वं ? अच्चुयदेवेण भणियं बोहिनिमित्तं जिणपडिमावयारं करेहि । तओ सो विज्जुमाली अट्ठाहियामहवंते गंतुं चुल्लहिमवंतं गोसीसदारुमयं पडिमं देवयाणुभावेण निव्वत्तेइ, रयणविचित्ता-भरणेहिं सव्वालंकारविभूसियं करेइ । तया ताहे पभावई ण्हाया कयकोउयमंगला सुक्किलवासपरिहाणपरिहिया बलिपुप्फधूवकडच्छुयहत्था गया । तओ पभावईए सव्वं बलिमादि काउं भणियं-'देवाहिदेवो महावीरवद्धमाणसामी तस्स पडिमा कीरउ'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

त्ति पहराहि वाहिओ कुहाडो, पगघाए चेव दुहा जायं, पेच्छंति य पुव्वनिव्वत्तिय-सव्वालंकारविभूसियं भगवओ पडिमं, सा णेउं रण्णा घरसमीवे देवाययणं काउं तत्थ ठविया । तत्थ किण्हगुलिया नाम दासचेडी देवसुस्सूसाकारिणी निउत्ता । अट्ठमि-चाउद्दसीसु य पभावई देवी भत्तिरागेण सयमेव (राउ) नट्टोवहारं करेइ । राया वि तयाणुवित्तीए मुरये पवाएइ । अण्णया पुणो वि पभावईए ण्हायकय-कोउयाए दासचेडी वाहित्ता देवयगिहपवेसा सुद्धवासा आणेहि त्ति भणिया । ते य सुद्धवासा आणिज्जमाणा कुसुंभरागरत्ता इव अंतरे संजाया । इति श्वेतधौतिकबलिप्रतिष्ठाविचारः ।

चंपानगरी अणंगसेणो सुवण्णकारो, विज्जमाली जक्खो, नाइलो सावओ, किण्हगुलिया, उद्दायणो । उज्जेणी विइब्भयाओ असीइ जोयणाइं चंडपज्जोओ राया । दिट्ठसुयमणुभूयं जं वत्तं पंचसेलए दीवे नलगिरी सुवण्णगुलिया ।

पुव्वाधीयं नस्सइ नवं च छाओ न पच्चलो घेत्तुं ।
खमगस्स व पारणए वरिसति असहू य बालाई ॥ ३२०७ ॥

वर्षतिभिक्षां कुर्वंति ।

धुवलोओ उ जिणाणं वरिसासु य होइ गच्छवासीणं ।
उडु तरुणे चउमासो खुर-कत्तरि छल्लहु गुरुगा ॥ ३२१३ ॥
पढमंमि समोसरणे वत्थं पायं च जो पडिग्गाहे ।
सो आणा अणवत्थं मिच्छत्त-विराहणं पावे ॥ ३२२२ ॥
पज्जोसवणे केसे गावीलोमप्पमाणमेत्ते वि ।
जो भिक्खू वाइणावती सो पावइ आणमाईणि ॥ ३२१० ॥
डगलग-ससरक्ख कुडमुह-मत्तगतिगलेव-पायलेहणिया ।
संथारफलगपीढग निज्जोगो चेव दुगुणो उ ॥ ३२३८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचारा:

पुरिमा उ उसभसामिणो सिस्सा, चरिमा वद्धमाणसामिणो । एसिं एस कप्पो चेव । जं वासासु पज्जोसविज्जंति, वासं पडउ वा मा वा । मज्झिमयाणं पुण भइयं–पज्जोसविंति वा न वा । जइ दोसा अत्थि तो पज्जोसविंति, इहरा नो । मंगलं च वद्धमाणसामितित्थे भवइ । जेण य मंगलं तेण सव्वजिणाणं चरियाइं कहिज्जंति, समोसरणाणि य, सुहम्माइयाण थेराणं आवलिया कहिज्जति ।

पढमंमि समोसरणे जावइयं पत्त–चीवरं गहियं ।
सव्वं वोसिरियव्वं पायच्छित्तं च वोढव्वं ॥ ३२५३ ॥
पुण्णंमि निग्गयाणं साहम्मियखेत्तवज्जिए गहणं ।
संविग्गाण सकोसं इयरे गहियंमि गिह्णंति ॥ ३२५८ ॥
सखित्ते परखित्ते दो मासे परिहरित्तु गिह्णंति ।
जं कारणं न निग्गया तंपि बहिं झोसियं जाणे ॥ ३२६० ॥
चिक्खल्ल–वास–असिवाइएसु जहिं कारणेसु उ न निंति ।
दिते पडिसेहित्ता गेह्णंति उ दोसु पुण्णेसु ॥ ३२६१ ॥
बिइए वि समोसरणे मासा उक्कोसगा दुवे हुंति ।
ओमंथगपरिहाणी य पंच पंचेग य जहण्णे ॥ ३२६६ ॥

मासकल्पे इत्यर्थः । इति वर्षादिविचार: ।

जइ वि य फासुगदव्वं कुंथू–पणगादि तहवि दुप्पस्सा ।
पच्चक्खणाणिणो वि हु राईभत्तं परिहरंति ॥ ३४११ ॥
जइ वि य पिपीलिगाई दिसंति पईव–जोइउज्जोए ।
तह वि खलु अणाइण्णं मूलवयविराहणा जेण ॥ ३४१२ ॥

उवाइयं अणोवाइयं वा जं पुण्णभद्द–माणिभद्द–सव्वाण–जक्ख महुंडिमाइयाण निवेइज्जइ, सो दुविहो–निस्समनिस्साकडो य । इति बलि: ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

अट्ठारस पुरिसेसुं वीसं इत्थीसु दस नपुंसेसु ।
पव्वावणा अणरिहा अनला अह एत्तिया भणिया ॥ ३५०५ ॥

अनलाः-प्रव्रज्याया अयोग्याः ।

बाले वुड्ढे नपुंसे य जड्डे कीवे य वाहिए ।
तेणे रायावयारी य उम्मत्ते य अदंसणे ॥ ३५०६ ॥
दासे दुट्ठे य मूढे अणत्ते जुंगिए इय ।
उवद्धए य भयए सेहे निप्फेडियाइय ॥ ३५०७ ॥

एते अष्टादश पुरुषाः प्रव्राजयितुं न कल्पन्ते । एत एवाष्टादशभेदाः गुर्विणी-बालवत्साभ्यां सहिताः स्त्रीपक्षे विंशतिर्भेदाः । परं नपुंसकद्वारे विसेसो इत्थीणं, इत्थीनपुंसिया इत्थीवेदो वि से नपुंसगवेदंपि वेएइ । अदंसणो-अन्धः । अणत्ते-रिणवान् । जुंगिओ-जात्यादिदूषितः कुण्टमण्टो वा । उवसंपयं बद्धो ओबद्धो । भइउ-मूल्यकर्मकरः । सेहनिप्फेडिउ-अट्ठवरिसाइउ माइमाईहिं अमुक्कलिओ । नपुंसकभेदा यथा

पंडए वाइए कीवे कुंभी ईसालुए इय ।
सउणी तक्कम्मसेवी य पक्खियापक्खिए इय ॥ ३५६१ ॥
सोगंधिए य आसत्ते वद्धिए चिप्पिए इय ।
मंतोसही उवहए इसिसत्ते देवसत्ते य ॥ ३५६२ ॥ गाथाद्वयम् ।

अर्थस्तु-पंडगो-नपुंसकः । वातिगो-जस्स वायवसेण लिंगं उड्ढं चेव चिट्ठइ । कुंभी-जस्स वसणा सुज्झंति । यस्येर्ष्या उत्पद्यते अभिलाषः स ईर्ष्यालुः । उक्कडवेयत्तणाओ सउणी व सउणी । तक्कम्मपडिसेवी-जया बीयनिसग्गो तया साणो इव जीहाए लिहइ । सुक्कपक्खे सुक्कपक्खे अईव मोहुब्भवो 'अपक्ख' त्ति कालपक्खो तत्थ अप्पो भवइ स पक्खियापक्खिओ । सुभं-सागारियस्स गंधं मण्णइ त्ति सोगंधी । आसत्तो-इत्थीसरीरे । वद्धिओ-वध्रितः । जस्स जायमेत्तस्स अंगुट्ठपएसिणीमज्झिमाहि चमढिज्जंति स चिप्पओ इत्यर्थः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचाराः

ऊणट्ठे नत्थि चरणं पव्वावितो वि भस्सई चरणा ।
मूलावरोहिणी खलु नारभई वाणिओ चेट्ठं ॥ ३५३२ ॥

न्यूनेषु अष्टवर्षेषु न प्रव्रज्येत्यर्थः । मागहद्धविसयभासानिबद्धं अद्धमागहं । अट्ठविहा वाही-

जर-सास-कास-दाहो अइसार भगंदले य सूले य ।
तत्तो अजीरगायग आसु विरेचा हि रोगविही ॥ ३६४७ ॥

उत्थगच्छी-रयहरणाओ अयोमयं कीलयं कड्ढिऊण दोवि अच्छीणि उद्धरित्तु ढोक्केइ । इति रजोहरणे लोहकीलिकाक्षराणि ।

पच्छा वि हुंति विगला आयरियत्तं न कप्पई तेसिं ।
सीसो ठावेयव्वो काणगमहिसो व्व निन्नंमि ॥ ३७१० ॥

अर्था-जइ पच्छा सामण्णभावट्ठिओ सरीरजुंगिओ हवेज्ज, सो अपरिवज्जो । जइ सो आयरियगुणोवेओ तहा वि आयरिओ न कायव्वो । अह पच्छा आयरिओ विगलो होज्ज तेण सीसो ठवेयव्वो, अप्पणा अप्पगासभावो चिट्ठइ । जो आयरिओ स काणगमहिसो । जहा सो अप्पगासे चिट्ठइ, तहा गुरूवि ।

इमे गुव्विणी दोसा-उक्कोसेण द्वादश वर्षाणि गर्भत्वेन तिष्ठतीत्यर्थः । हस्तपादकर्णनासाक्षिवर्जितं बिंबं मृगावतीपुत्रवत्, वैकृतं सर्पादिवत् भवेत् ।

पुव्वं जाहे सत्थपरिण्णा सुत्तओ अहिया, ताहे उवट्ठावणापत्तो भवइ । दसवेयालियउप्पत्तिकालओ पुण जाहे छज्जीवणिया अहिया । जद्दिवसं उवट्ठाविओ तद्दिवसं केसिंचि अभत्तट्ठो भवइ, केसिंचि आयंबिलं, केसिंचि निव्वितियं । केसिंचि न किंचि, जस्स वा जं आयरियपरंपरागयं छट्ठट्ठमाइयं कराविज्जइ । (३७५३ गाथा चूर्णौ) जं एगंगियं खुहापसमणे असमत्थं आहारे य अईइ, तं आहारेण संजुत्तं असंजुत्तं वा आहारो चेव नायव्वो । जहा असणे लोणं हिंगूजीरककडुगं मंडं च असणं । (३७९० गाथाचूर्णौ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

जे मे आणंति जिणा अवराहा जेसु जेसु ठाणेसु ।
तेहं आलोएउं उवट्ठिओ सव्वभावेणं ॥ ३८७३ ॥
जह सुकुसलो वि वेज्जो अण्णस्स कहेइ अप्पणो वाहिं ।
वेज्जस्स य सो सोउं तो पडिकम्मं समारभए ॥ ३८६० ॥
जाणंतेण वि एवं पायच्छित्तविहिमप्पणो निउणं ।
तह वि य पागडतरगं आलोएयव्वगं होइ ॥ ३८६१ ॥
तणकंबलपावारे कोयवतूली य भूमिसंथारे ।
एमेव अणहियासे संथारगमाइ पल्लंके ॥ ३९०७ ॥
एतानि अनशनिनः कल्पन्ते इतिशेषः ।
जति ताव सावया कुलगिरिमंदरविसमकडगदुग्गेसु ।
साहेंति उत्तिमट्ठं धितिधणियसहायगा धीरा ॥ ३९१२ ॥
किं पुण अणगारसहायएण अण्णोण्णसंगहबलेण ।
परलोइओ न सक्कइ साहेउं उत्तिमो अट्ठो ॥ ३९१३ ॥
सव्वाहिं वि लद्धीहिं सव्वे वि परीसहे पराइत्ता ।
सव्वे वि य तित्थगरा पाओवगया उ सिद्धिगया ॥ ३९१६ ॥
अवसेसा अणगारा तीतपडुप्पण्णणागता सव्वे ।
केई पाओवगता पच्चक्खाणिंगणिं केई ॥ ३९१७ ॥
सव्वाओ अज्जाओ सव्वे वि य पढमसंघयणवज्जा ।
सव्वे य देसविरता पच्चक्खाणेण उ मरंति ॥ ३९१८ ॥
सव्वसुहप्पभावाओ जीवितसारातो सव्वजणितातो ।
आहारातो न तरणं न विज्जती उत्तिमं लोए ॥ ३९१९ ॥
विग्गहगते य सिद्धे मोत्तुं लोयंमि जत्तिया जीवा ।
सव्वे सव्वावत्थं आहारे हुंति उवउत्ता ॥ ३९२० ॥
तं तारिसगं रयणं सारं जं सव्वलोगरयणाणं ।
सव्वं परिच्चइत्ता पाओवगता परिहरंति ॥ ३९२१ ॥
केइ परीसहेहिं वाउलीउवेतणुज्जुतो वा वि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचारा:

ओभासिज्ज कयाती पढमं बितियं व आसज्ज ॥ ३९२३ ॥
हंदी परीसहचमू जोहेयव्वा मणेण काएणं ।
तो समरदेसकाले कवयतुल्लो उ आहारो ॥ ३९२५ ॥

इति गाथाद्वयम् अनशने भक्तदानार्थम् ।

कम्ममसंखेज्जभवं खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो ।
अन्नतरगंमि जोगे वेयावच्चे विसेसेणं ॥ ३९०४ ॥

चाउज्जायं-जाइफलं कोलयं कप्पूरं लवंगं ।

जइ तेसिं जीवाणं तत्थ गयाणं तु लोहियं होज्जा ।
पीलिज्जंते धणियं गलेज्ज तं अक्खरे फुसिउं ॥ ४००७ ॥

जहा तिलेसु पीलिज्जंतेसु तेसु तेल्लं नीति तहा जइ तेसिं रुहिरं होज्जा, तो पोत्थगबंधणकाले तेसिं जीवाणं सुट्ठु पीलिज्जंताणं अक्खरे फुसिउं रुहिरं गलेज्ज इत्यर्थ: ।

दुप्पडिलेहियदूसं अद्धाणाई विवित्त गेण्हंति ।
घेप्पइ पोत्थगपणगं कालिगनिज्जुत्तिकोसट्ठा ॥ (४०२०)

मेहाउगहणधारणाइपरिहाणि जाणित्ता कालियसुयट्ठा कालियसुयनिज्जुत्तिनिमित्तं वा पोत्थगपणगं घेप्पइ, कोसो त्ति समुदाय इत्यर्थ: ।

साहूणं दाहामि त्ति मलिणं धोवइ विहिं अजाणंतो धाउमाइसु रत्तं काउं दलाइ रयगसज्जियं निप्पंककयं च चोक्खं अब्भुइमुवलित्तं धोउं सुइं पयावत्थं कयं साहूणा पडिसिद्धं पुर:कर्मत्वादितिशेष: । (गाथा चू० ४१०७)

पुव्वाए भत्तपाणं घेत्तूणं जे उवाइणे चरिमं ।
सो आणा अणवत्थं मिच्छत्तविराहणं पावे ॥ ४१४१ ॥

उवाइणइ-अतिक्रामति ।

निस्संचया उ समणा संचइउ गिही उ होंति धारिंता ।
संसत्त अणुवभोगा दुक्खं च विगिंचिउं होइ ॥ ४१५४ ॥

गाथाद्वयेन प्रथमपौरुष्यां गृहीतं चतुर्थ्यां न शुद्ध्यति ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

जे भिक्खु उवगरणं वहावे गिहि अहव अण्णतित्थीहिं ।
आहारं वा देज्जा पडुच्च तं आणमाईणि ॥ ४२०४ ॥
सत्त उ वासासु भवे दगघट्टा तिण्णि होंति उउबद्धे ।
जे उ न हणंति खेत्तं भिक्खायरियं च न हरंति ॥ ४२४७ ॥
थेरुवमा अक्कंते मत्ते सुत्ते व जारिसं दुक्खं ।
एमेव य अव्वत्ता वियणा एगिंदियाणं तु ॥ ४२६३ ॥
गिहिनिक्खमण-पवेसे आवाह विवाह विक्कयकए वा
गुरुलाघवं कहिंते गिहिणो खलु संपसारीओ ॥ ४३६२ ॥
संपसारकः स साधुः स्यादित्यर्थः ।
जाई कुले विभासा इत्यादि (४४१२) गाथायां-
'तुन्नाइ सिप्प णावज्जगं च कम्मेयरावज्जं 'ति ।
व्याख्या-अनावर्जकं कर्म, इतरत् आवर्जकं शिल्पमित्यर्थः ।
उग्गाइकुलेसु वि एमेव गणे मंडलप्पवेसाई ।
देउलदरिसणभासा उवणयणे दंडमाई वा ॥ ४४१५ ॥

व्याख्या-प्रथमं पदं गतार्थम् । मंडलमालिहियं दट्ठुं मल्लाइगणेसु हीणाहियं विवरीयं वा तत्थ वि अप्पाणं जाणावेइ । गणोत्ति गयं । सिप्पे अहिणवग्घडण चिरकयं वा सिप्पयं दट्ठुं भणाइ-अहो ! देवकुलस्स उवणओ उवसंघारो संवरणेत्यर्थः । पहाणो वा अप्पहाणो त्ति । अहो ! आयामवित्थरे दट्ठुं भणाइ-एवइए दंडे एयस्स उ त्ति । इह दंडो हस्त उच्यते । इति गाथार्थः ।

कत्तारि पयोयणावेक्ख वत्थु बहुवित्थरेसु एमेव ।
कम्मेसु य सिप्पेसु य सम्ममसम्मेसु सूइयरा ॥ ४४१६ ॥

गाथार्थो यथा-कत्तारि-एव कर्त्ता, पयोयणं-कारणं दविणं तं च अवेक्ख-दृष्ट्वा वत्थु (खा) उक्खियाइ बहुवित्थरं-अणेगभेयं । एतानि दृष्ट्वा सूयया असूयया वक्तीत्यर्थः ।

निग्गंथ सक्क तावस गेरुय आजीव पंचहा समणा ।
तेसिं परिवेसणाए लोभेण वणेज्ज को अप्पं ॥ ४४२० ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचारा:

अर्था यथा-निग्गंथा-साहू खमणा वा, सक्का-रत्तपडा, तावसा-वणवासिणो, गेरुया - परिवायगा, आजीविगा - गोसालगसिस्सा पंडरभिक्खुया वि भन्नति । इति गाथार्थः ।

'पएण मज्झ भावो विद्धो लोगे पणातइयज्जंमि'त्ति (४४२८) गाथापूर्वार्द्धव्याख्या-पणातइज्जंमि इमंति लोगे जो मणोगयं भावं जाणइ तस्स लोगो आउट्टइ । विशुद्धो ना इत्यर्थः ।

'छिन्नमछिन्ने दुविहे' इत्यादि (४५०९) गाथायां-तदुलघयाइ जत्थ परिमाण-परिच्छिन्ना दिज्जंति सो छिन्नो भण्णइ । तप्पडिवक्खो अछिन्नो इत्यर्थः ।

हत्थस्स छब्भाया-जहा अंगुलीणं अग्गपव्वा पढमभागो, बीओ मज्झापारे भागो, तइओ अंगुलीमूले भागो, आउरेहाए चउत्थो भागो, अंगुट्ठस्स अब्भिंतरकोडिए पंचमो भागो, सेसो छट्ठो भागो । एवं हस्ते भागाः षट् ।

देसो व सोवसग्गो वसणी व जहा अजाणगनरिंदो ।
रज्जं विलुत्तसारं जह तह गच्छोवि निस्सारो ॥ ४७९६ ॥
इत्थी जूयं मज्जं मिगव्व वयणे तहा फरुसया य ।
दंडफरूसत्तमत्थस्स दूसणं सत्त वसणाणि ॥ ४७९९ ॥
पण्णवणिज्जा भावा अणंतभागो उ अणभिलप्पाणं ।
पण्णवणिज्जाणं पुण अणंतभागो सुयनिबद्धो ॥ ४८२३ ॥
जं चउद्दसपुव्वधरा छट्ठाणगया परोप्परं हुंति ।
तेण उ अणंतभागो पण्णवणिज्जाण जं वुत्तं ॥ ४८२४ ॥
अक्खरलंभेण समा ऊणहिया हुंति मइविसेसेणं ।
ते वि य मइविसेसा सुयनाणब्भंतरे जाण ॥ ४८२५ ॥
जोयणसयं तु गंता अणाहारेणं तु भंडसंकंती ।
वाया अगणी धूमेहि य विद्धत्थं होइ लोणाई ॥ ४८३२ ॥
हरियालमणोसिलि पिप्पली य खज्जूर मुद्दिया अभया ।
आइण्णमणाइण्णा तेवि हु एमेव नायव्वा ॥ ४८३४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

खज्जरादयो अणाइण्णा इत्यर्थः। सामण्णं परिणामकारणं जहा-

आरुहणे ओरुहणे निसियण गोणाइणं च गाउम्हे ।
भूमाहारच्छेओ उवक्कमेणं तु परिणामो ॥ ४८३५ ॥

उवक्कमणं-स्वकायपरकायशस्त्रम् ।

पत्ताणं पुप्फाणं सरडुफलाणं तहेव हरियाणं ।
विंटंमि मिलाणंमी नायव्वं जीवविप्पजढं ॥ ४८४० ॥

जं तरुणं बद्धट्ठियं अबद्धट्ठियं वा जाव कोमलं ताव सरडुफलं भण्णइ, वत्थुलाइ हरियं वा। जइ जं जं गुरूहिं चिण्णं तं तं पच्छिमेहि अणुचरियव्वं, तो तित्थगरेहिं पाहुडिया साइज्जिया पागारतियं देवच्छंदओ पीढं च अइसया य एयं तेहि उवजीवियं अम्हवि एवं किं न उवजीवामो ? उच्यते-न सव्वहा अणुधम्मो, यतो गुरुः तीर्थकरः अतिशयाः तस्यैव भवन्ति नान्यस्य। अनुधर्मताऽत्र न चिन्त्यन्ते 'सो तित्थयरजीयकप्पो त्ति काउं' तीर्थकरकल्पत्वादेव। (४८५५ गाथा चूर्णौ)

जे भिक्खु वत्थाई दिज्जा गिहि अहव अण्णतित्थीणं ।
पडिहारगं च तेसिं पडिच्छए आणमाईणि ॥ ४९८० ॥

बहूणि वा वत्थाणि उप्पाएयव्वाणि ताहे पिडएणं सव्वे उट्ठेति। गणित्ति आयरिओ तं मोत्तूणं, आयरिया पुण जइ अप्पणा हिंडंति तो चउगुरुगा उभावण दोसे हि आयरिउ हुंतउ अप्पणा हिंडइत्तूण एयस्स आयरियत्तणंपि एयारिसं चेव चीराणंपि णाहइ।

पगई पेलवसत्ता लोभिज्जइ जेण तेण वा इत्थी ।
अवि य हु मोहो दिप्पइ तासिं सइरं सरीरेसु ॥ ५०७३ ॥

अथो-जेण तेण वत्थमाइणा लोभिज्जइ, दाणलोभिया य अकज्जंपि करेइ, अविय ताओ बहुमोहाओ, तेसिं च पुरिसेहिं संलावं करंतीणं दाणं च गेण्हतीणं पुरिससंपक्काओ मोहो दिप्पइ सइरं सरीरेसु। ततः संयत्यो वस्त्राणि स्वयं न गृह्णन्ति इतिशेषः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथविचाराः

नवभागकए वत्थे चउसु वि कोणेसु होइ वत्थस्स ।
लाभो विणासमन्ने अंते मज्झेसु जाणाहि ॥ ५०८६ ॥

नवभागकए वत्थे चउसु, तम्मज्झेसु य दोसु एएसु छसु अंतविभागेसु लाभो भवइ । 'विणासमन्ने'त्ति अन्ने मज्झिल्ला तिन्नि विभागा तेसु विणासं जाणिहीत्यर्थः ।

अंजण खंजणकद्दमलित्ते मूसगभक्खिय अग्गिविदड्ढे ।
तुण्णाय कोट्टिय पज्जव लीढे होइ सुहोअसुहो वा ॥ ५०८७ ॥

पज्जवलीढ–चर्वितम् ।

चउरो य दिव्विया भागा दोण्णि भागा य माणुसा ।
आसुरा य दुवे भागा मज्झे वत्थस्स रक्खसो ॥ ५०८८ ॥
देवेसु उत्तमो लाभो माणुसेसु य मज्झिमो ।
आसुरेसु य गेलण्णं मज्झे मरणमाइसे ॥ ५०८९ ॥
उस्सग्गेण निसिद्धाणि जाणि दव्वाणि संथरे मुणिणो ।
कारणजाए जाए सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ॥ ५२४५ ॥
नवि किंचि अणुण्णायं पडिसिद्धं वावि जिणवरिंदेहिं ।
एसा तेसिं आणा कज्जे सच्चेण होयव्वं ॥ ५२४८ ॥

इमाओ सत्त पिंडेसणाओ–दायगो असंसट्ठेहिं हत्थमत्तेहिं देहित्ति असंसट्ठा, संसट्ठेहिं हत्थमत्तेहिं संसट्ठा, जत्थ उवक्खाडियं भायणे ताओ उद्धरियं देइ छव्वगाइसु एस उद्धडा, जस्स दिज्जमाणस्स दव्वस्स निप्फावचणगाइगस्स लेवो न भवइ सा अप्पलेवा, जं परिएसगेण पडिसेवणाए परस्स कडच्छुवाइणा आणियं तेण य तं पडिसिद्धं तं तहुक्खित्तं चेव साहुस्स देइ एस उवहिया, जं असणाइगं भोउकामेण कंसाइभायणे गहियं भुंजामि त्ति असंसट्ठिए चेव साहू आगओ तं चेव देइ एस उग्गहिओ, जं असणाइगं गिहि उज्झिउकामो साहू य उवट्ठिओ तं तस्स देइ न य तं कोइ अण्णो दुपयाइ अहिलसइ एस उज्झियधम्मो ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

नि:शेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

ओसण्णो वि विहारे कम्मं सिढिलेइ सुलभबोहीओ ।
चरणकरणं विसुद्धं उववूहंतो परूवेंतो ॥ ५४३६ ॥
छम्मासे उवसंपय जहण्ण बारस समा उ मज्झिमिया ।
आवकहा उक्कोसे पडिच्छसीसे तु जाजीवं ॥ ५४५२ ॥
सुयसुहदुक्खे खेत्ते मग्गे विणए य होइ बोद्धव्वे ।
उवसंपया य एसा पंचविहा देसिया सुत्ते ॥ ५५२१ ॥
पडिलेह दिय तुययट्टण निक्खिवणायाण विणय सज्झाए ।
आलोय-ठवण-भत्तट्ठ-भास-पडलग-सेज्जायराईसु ॥ ५५५५ ॥

अर्थो-पक्खियाइसु आलोयणं न पउंजति भत्ताइ वा न आलोयंति, संखडीए वा भत्तं आलोयंति निरीक्षन्ते इत्यर्थः । ठवणकुलाणि न ठविंति, विसंति भत्तट्ठं, मंडलिए न भुंजंति, गुरुणो वा आलोगे न भुंजंति, अगारभासाहि भासंति, पडलएहिं आणियं अभिहडं भुंजंति सेज्जायरपिंडं वा भुंजंति आइग्गहणेणं उग्गाइ न सोहिंति इति गाथार्थः ।

राइ सद्दे आएस दुग-संझा राई संझावगमो राई ।
सो रायावंतिवइ समणाणं सावओ सुविहियाणं ।
पच्चंतियरायाणो सव्वे सद्दाविया तेण ॥ ५७५२ ॥
कहिओ य तेसिं धम्मो सवित्थरो गाहिया य सम्मत्तं ।
अप्पाहियाय बहुसो समणाणं सावगो होइ ॥ ५७५३ ॥
अणुयाणे अणुजाई पुप्फारुहणाइ उक्खिरणगाणि ।
पूयं च चेइयाणं ते वि सरज्जेसु कारिंति ॥ ५७५४ ॥
जइ मं जाणह सामिं समणाणं पणमहा सुविहियाणं ।
दव्वेण मे न कज्जं एयं खु पियं कुणह मज्झं ॥ ५७५५ ॥
वीसज्जिया य तेणं गमणं घोसावणं सरज्जेसु ।
साहूण सुहविहारा जाया पच्चंतिया देसा ॥ ५७५६ ॥
समण भडभाविएसुं तेसु रज्जेसु एसणाईहिं ।
साहू सुहपविहरिया तेणं चिय भद्दगा ते उ ॥ ५७५७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथ-विचाराः

चूर्णिर्यथा–तेण संपइणा रण्णा विसज्जिया, सरज्जाणि गंतुं अमाघायं घोसिंति, चेइयहरे करिंति रहजाणे य। अंधदमिडकुडुक्कमरहट्ठया एए पच्चंतिया, संपइकालाओ आरब्भ सुहविहारा जाया। संपइणा साहू भणिया–गच्छह एए पच्चंतविसए बोहिंता हिंडह, तओ साहूहिं भणियं–एए न किंचि कप्पाकप्पं वा एसणं वा जाणंति कहं विहरामो? ताहे तेण संपइणा 'समणगाहे' इत्यादि। प्रतिष्ठाविचारः षोडशोद्देशे।

रहगओ पुप्फफले खज्जगे य कवड्डगवत्थमाई उक्खिरणे करेइ।
तक्कतपरंपरओ पलोट्टछिन्ने य भेय कायवहो।
अहिमुसलालविच्छुग संचयदोसा पसंगो य ॥ ५७६६ ॥

अस्थानमुक्ते भक्तादौ।

आहारउवहिदेहं गुरुणो संघट्टियाण पाएहिं।
जे भिक्खू न खामेइ सो पावइ आणमाईणि ॥ ५७८१ ॥

गुरुसंस्तारकस्थाने न पादौ मोक्तव्यः, यतः —

कमरेणु अबहुमाणो अविणय परियावणा य हत्थाई।
संथारगहणमतो उच्छुवणस्सेव वइ रक्खा ॥ ५७८३ ॥

यथा वृतिरक्षायां इक्षुवनं रक्षितमेव। एवं गुरुसंस्तारके रक्षिते गुरवोपि रक्षिता इत्यर्थः।

कप्पा आयपमाणा अड्डाइज्जा य वित्थडा हत्था।
एयं मज्झिममाणं उक्कोसं हुंति चत्तारि ॥ ५७९४ ॥

उक्कोसेण चत्तारि हत्था दीहत्तणेण, एयं पमाणं अणुग्गहत्थं थेराण भवइ, पुहुत्ते वि छ अंगुला समहिया कज्जंति। दढो जो चोलपट्टो सो दीहत्तणे दो हत्था वित्थारेण हत्थो सो दुगुणो कओ समचउरंसो भवइ। जो दढदुब्बलो सो दीहत्तणेण चउरो हत्था सो वि चउगुणो कअ हत्थमेत्तो चउरंसो भवइ चोलपट्ट इत्यर्थः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

वारत्तपुरं नगरं तत्थ अभग्गसेणो राया, तस्स अमच्चगो वारत्तगो नाम सो घरसारं निसिउं पव्वइओ, तस्स पुत्तेण पिउभत्तीए देवकुलं काराविय, रयहरणमुहपोत्तियपरिग्गहधारी पिउपडिमा तत्थ ठाविया । इति स्थापनाचार्यविचारः ।

पढमुस्सेइमउदयं अकप्पकप्पं च होइ केसिंचि ।
तं तु न जुज्जइ जम्हा उसिणं मीसं तु जा दंडो ॥ ५९७१ ॥
मरेज्ज सह विज्जाए कालेणं आगए विऊ ।
अपत्तं च न वाएज्जा पत्तं च न विमाणए ॥ ६२३० ॥

गिहि अन्नपासंडि वा पव्वज्जाभिमुहं सावगं वा छज्जीवणीय त्ति जाव सुत्तओ, अत्थओ जाव पिंडेसणा, एस गिहत्थाइसु अववाओ ।

पंचविहो मासो-नक्खत्तो, चंदो, उऊ, आइच्चो, अभिवड्ढिओ य । तथाहि —

अहोरत्ते सत्तवीसं तिसत्त सत्तट्ठिभाग नक्खत्तो ।
चंदो अउणत्तीसं बिसट्ठि भागा उ बत्तीसं ॥ ६२८४ ॥
उउमासो तीसदिणो आइच्चो होइ तीस अद्धं च ।
अभिवड्ढिओ वि मासो पगतं पुण कम्ममासेणं ॥ ६२८५ ॥
एक्कतीसं च दिणा दिणभागसयं तहेक्कवीसा य ।
अभिवड्ढिओ उ मासो चउवीससएण छेएणं ॥ ६२८६ ॥

चूर्णिर्यथा-नक्खत्तमासो सत्तावीसं अहोरत्तो 'तिसत्त'त्ति एक्कवीसं च सतसट्ठि भागा, एस लक्खणओ परिमाणओ य नक्खत्तमासो । चंदमासो अउणत्तीसं अहोरत्ते बत्तीसं च बिसट्ठिभागा । उउमासो तीसं चेव पुन्ना दिणा । आइच्चमासो तीसं दिणा दिणद्धं च । अभिवड्ढिओ अहिमासगो भण्णइ । एएसिं पंचण्ह मासाणं इह 'पगयंति अहिगारो कम्ममासेणं, कम्ममासो त्ति उउमासो । अभिवड्ढियस्स इमं पमाणं-एक्कतीसं दिवसा दिवसस्स य चउवी-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथ-विचाराः

ससयखंडियस्स एगवीसुत्तरं ३१-१२१/१२४ च भागसयं अहिमास-गप्पमाणंति । कालमासेण अहिगारो तत्थ वि उउमासेण, सेसा सीसस्स विकोवणट्ठा भणिया । कम्ममासो सावनमासो उउमासो इत्येकार्थाः ।

पक्खिय चउ संवच्छर उक्कोसं बारसण्ह वरिसाणं ।
समणुन्ना आयरिया फड्डगवइया वि विगडंति ॥ ६३१३ ॥
इत्यालोचनादिनानि ।

जीहाए वि लिहंतो ण भद्दओ जत्थ सारणा नत्थि ।
दंडेण वि ताडिंतो स भद्दओ सारणा जत्थ ॥ ६६१४ ॥
जह सरणमुवगयाणं जीवियववरोवणं नरो कुणइ ।
एवं सारणियाणं आयरिओ असारओ गच्छे ॥ ६६१५ ॥
दुग्गविसमे वि न खलइ जो पंथे सो समे कहं खलइ ।
कज्जे विऽवज्जवज्जी स कहं सेवेज्ज दप्पेणं ? ॥ ६६९८ ॥
अम्हे वि एय धम्मा आसी वट्टंति जत्थ सोयारा ।
इइ गारवलहुकरणं कहए न य सावए लज्जा ॥ ६६९९ ॥

इति निशीथविचाराः समर्थिताः । सुभाषितगाथा निशीथे —

सूईपयप्पमाणाणि परछिद्दाणि पाससि ।
अप्पणो बिलमेत्ताणि पासंतो वि न पाससि ॥ ॥
सिरिए मइमं तुस्से अइसिरिं नो उ पत्थए ।
अतिसिरिमिच्छंतीए थेरीए विणासिओ अप्पा ॥ ॥

उत्तरगुणा इमे—

पिंडस्स जा विसोहि समिइओ भावणा तवो दुविहो ।
पडिमा अभिग्गहा वि य उत्तरगुणमो वियाणाहि ॥ ६५३४ ॥
पञ्च वर्द्धन्ति कौन्तेय ! सेव्यमानानि नित्यशः ।
आलस्यं मैथुनं निद्रा क्षुधा क्रोधश्च पञ्चमः ॥ ॥

दर्शनविषये—

सुलसा अमूढदिट्ठी सेणिय उववूह थिरकरण साढो ।
वच्छल्लंमि य वइरा पभावगा अट्ठ पुण हुंति ॥ ३२ ॥
अइसेस इड्ढि धम्मकहि कवि वाइ आयरिय खमग नेमित्ति ।
विज्जा राया गणसंमया य तित्थं पभाविंति ॥ ३३ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पुव्वं अपासिऊणं छूढे पायंमि जं पुणो पासे ।
न य तरइ नियत्तेउं पायं सहसाकरणमेयं ॥ ९७ ॥
जंघद्धा संघट्टो नाभी लेवो परेण लेवुवरिं ।
एगो जले थलेगो निप्पगलणतीरमुस्सग्गो ॥ १९५ ॥

एगो जले थलेगो-गगने इत्यर्थः ।

भाष्यगाथा-

कंजिय आयामासइ संसट्टसुणोदगेसु वा असई ।
फासुगमुदगं तसजढं तस्सासइ तसेहि जं रहियं ॥ २०० ॥

कंजियं देसीभासाए आरनालं, आयामं-अवस्सामणं, संसट्टोदगं-गोरसादिभाजनधावनं ।

जा चेट्ठा सा सव्वा संजमहेउं तु होइ समणाणं ।
संसत्तुवस्सए पुण पच्चक्खमसंजमकरी सो ॥ ६२ ॥
तद्दिवसकयाण उ सत्तुयाण गहियाण चक्खुपडिलेहा ।
तेण परं नववारे असुद्धे निसिरेत्तु भुंजे ॥ ८० ॥

प्रथमदिनादनन्तरदिनेषु नव वाराः प्रत्युपेक्षणीयाः इत्यर्थः ।

उड्डाहरक्खणट्ठा संजमहेउं व बोहिगे तेणे ।
खेत्तंमि व पडिणीए सेहे वा खिप्पलोए वा ॥ ३२१ ॥

रूपगत-रूपसहगतमैथुनस्य लक्षणं यथा—

जीवरहिओ उ देहो पडिमाओ भूसणेहिं वावि जुयं ।
रूवमिइ सहगयं पुण जीवजुयं भूसणेहिं वा ॥ ३५४ ॥
कारणपडिसेवा वि य सावज्जा निच्छए अकरणिज्जा ।
बहुसो वियारइत्ता अधारणिज्जेसु अत्थेसु ॥ ४५९ ॥

असिवाइकारणेसु उप्पण्णेसु जइ अण्णो नत्थि नाणाइसंधणो-वाओ तो वियारेऊण अप्पबहुत्तं अधारणिज्जेसु अर्थेषु प्रवर्तितव्य-मित्यर्थः ।

कामोपशमार्थं गाहा—

निव्विगइ निब्बले ओमे तव उद्धट्ठाणमेव उब्भामे ।
वेयावच्चाहिंडण मंडलि कप्पट्ठियाहरणं ॥ ५७४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

बृहत्कल्पस्य विचाराः

निवलं चणकादीत्यर्थः । ओम-ऊनोदरतेत्यर्थः । उब्भामे-ग्रामादौ । मंडलि-सूत्रस्येत्यर्थः । चिलिमिलीगाथा यथा—

हत्थपणगं तु दीहा तिहत्थ-रुंदोन्निया असई खोमा ।
एयपमाणं गणणेक्कमेक्कगच्छं च जा चेहे ॥ ६५२ ॥

सूची गाथा—

उवग्गहिया सूयाइया तु एक्केक्कए गुरुस्सेव ।
गच्छं च समासज्जा अणायसेसेक्कसेसेसु ॥ ६६३ ॥

सूई पिप्पलउ नहच्छेयणं कन्नसोहणं उवग्गहिओवगरणं एए य एक्केक्का गुरुस्स भवंति । सेसा तेहिं चेव कज्जं करंति । महल्ल-गच्छं च समासज्ज अणायसा-अलोहमया वंससिंगमई वा सेस-साहूण एक्केक्का भवइ ।

तिण्णि उ हत्था दंडा दोण्णि उ हत्थे विदंडओ होइ ।
लट्ठी आयपमाणा विलट्ठि चउरंगुलेणूणा ॥ ७०० ॥
णिण्हुपरि फालियाणं वत्थं जो फालियं तु संसीवे ।
पंचण्हं एगयरे सो पावइ आणमाईणि ॥ ७८७ ॥
वेलुमओ वेत्तमओ दारुमओ वावि दंडओ तस्स ।
रयणिप्पमाणमेत्ता तस्स दसा हुंति भइयव्वा ॥ ८३० ॥

रजोहरणगाथेयम् ।

एसेव गमो नियमा समणीणं पायपुच्छणे दुविहे ।
नवरं पुण णाणत्तं चप्पडउ दंडओ तासिं ॥ ८४४ ॥

एता अपि निशीथगाथाः ।

कल्पविचारा यथा—

सम्मत्ते पुण लद्धे पलियपुहुत्तेण सावओ होइ ।
चरणोवसमखया पुण सागरसंखंतरा हुंति ॥ १०६ ॥
एवं अप्परिवडिए सम्मत्ते देवमणुयजम्मेसु ।
अण्णयरसेढिवज्जं एगभवेणं व सव्वाइं ॥ १०७ ॥
उवसामगसासायण खयोवसमियं च वेययं खइयं ।
सम्मत्तं पंचविहं जह लब्भइ तं तहा वोच्छं ॥ ९० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

'देसकुलजाइरूवी' त्यादिगाथासु अणासंसी-न सायारेहिंतो वत्थाईणि आसंसइ। आसन्नलद्धपइभो-परवाइणा आभट्ठो लहुं उत्तरं दाहिइ। सिवो-अकोहणो सोमो-अघोरदिट्ठी।

तं पुण चेइयनासे तद्दव्वविणासणे दुविहभेए।
भत्तोवहिवोच्छेए अभिवायण-बधघायाई ॥ ३८९ ॥

अर्थो यथा-तं शृङ्गकार्थं 'चेइयनास'त्ति। लोउत्तरघरपडिम-विणासे चेइयदव्वविणासे। दुविहभेय त्ति। मारणे उ पच्चावणे य जो वा भत्तं ति-भिक्खं वारेइ, उवहिं वा वारेइ, जहा वा कोइ मणेज्जा बंभणे अभिवाएह, जो वा बंधइ, जो वा पहारेहिं पिट्टावेइ। आइग-हणेणं जो वा निव्विसए आणवेइ।

पट्ठिवंसो दो धारणा य चत्तारि मूलवेलीओ।
मूलगुणेहिं उवहया जा सा उ अहाकडा वसही ॥ ५८२ ॥
वंसगकडणुक्कंवण छायणा लेवण दुवारभूमी य।
सप्परिकम्मा वसही एसा मूलुत्तरगुणेसु ॥ ५८३ ॥
दूमिय धूमिय वासिय उज्जोइय बलिकडा अवत्ता य।
सित्ता संमट्ठा वि य विसोहिकोडिगया वसही ॥ ५८४ ॥
कालाइक्कंतोवट्ठाणा अभिकंत अणभिकंता य।
वज्जा य महावज्जा सावज्ज महप्पकिरिया य ॥ ५९२ ॥
उउवासासमईया कालाईया उ सा भवे सेज्जा।
सा चेव उवट्ठाणा दुगुणादुगुणं अवज्जित्ता ॥ ५९५ ॥
जावंतिया उ सेज्जा अन्नेहिं निसेविया अभिक्कंता।
अन्नेहिं अपरिभुत्ता अणभिकंता उ पविसंते ॥ ५९६ ॥
अत्तट्ठकडं दाउं जईण अन्नं करिंति वज्जा उ।
जम्हा तं पुव्वकडं वज्जंति तओ भवे वज्जा ॥ ५९७ ॥
पासंडकारणा खलु आरंभो अहिणवो महावज्जा।
समणट्ठा सावज्जा महसावज्जा य साहूणं ॥ ५९८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

बृहत्कल्पस्य विचाराः

जा खलु जहुत्तदोसेहि वज्जिया कारिया सयट्ठाए ।
परिकम्मविप्पमुक्का सा वसही अप्पकिरिया उ ॥ ५९९ ॥

उउबद्धे मासो वासावासासु चत्तारि मासा । एयं दुगुणादुगुणं अपरिहरंता जत्थ पुणो एंति सा उवट्ठाणसेज्जा भवइ । यदुक्तं-उउबद्धे दो मासे वासासु अट्ठमासे अवज्जिता एइ । अन्ने भणंति-जत्थ वासावासं ठिया तीए दो वासारत्ते अण्णत्थ काउं जइ एइ तो उवट्ठाणा न भवइ ।

देविंद-राय-गहवइ उग्गहो सागारिए य साहम्मि ।
पचविहंमि परूविए नायव्वो जो जहिं कमइ ॥ ६६९ ॥
अणुण्णाए वि सव्वंमि उग्गहे घरसामिणा ।
तहा वि सीमं छिंदंति साहू तप्पियकारिणो ॥ ६७९ ॥
गीयत्थो य विहारो बीओ गीयत्थनिस्सिओ भणिओ ।
एत्तो तइयविहारो नाणुण्णाओ जिणवरेहिं ॥ ६८८ ॥
आयारपकप्पधरा चउदसपुव्वी य जे य तं मज्झा ।
तन्निस्साए विहारो सबालवुड्ढस्स गच्छस्स ॥ ६९३ ॥

एगंमि वा दोसु वा जत्तिएहि वा कप्पेहि वेट्ठउ सुहं वायणं देइ तेत्तिएहि कप्पेहिं निसज्जा कीरइ । इति निषद्याविचारः । एते पीठिकायाः ।

नक्खत्तो खलु मासो सत्तावीसं भवंतऽहोरत्ता ।
भागा य एक्कवीसं सत्तट्ठिकएण छेएणं ॥ ११२८ ॥
अउणत्तीसं चंदो बिसट्ठि भागा य हुंति बत्तीसं ।
कम्मो तीसइ दिवसो तीसा अद्धं च आइच्चो ॥ ११२९ ॥
अभिवड्ढि एक्कतीसा चउवीसं भागसयं च तिगहीणं ।
भावे मूलाइजुओ पगयं पुण कम्ममासेणं ॥ ११३० ॥

चूर्णिर्यथा-एत्थ कालमासेणं अहिगारो । तत्थ वि उउमासेणं स एव कम्ममासो भण्णइ । एस सो मासो जो सपरिक्खेवंसि अबाहिरियंसि कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा मासं वत्थए । इति मासविचारः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

आहावसी पहावसी ममं चावि निरिक्खसि ।
लक्खिओ ते मए भावो जवं पत्थेसि गद्दभा ! ॥ ११५७ ॥
इउ गया इउ गया मग्गिज्जंती न दीसई ।
अहमेयं विजाणामि अगडे छूढा अडोलिया ॥ ११५८ ॥
सुकुमालग भद्दलया रत्तिं हिंडणसीलया ।
भयं ते नत्थि ममूला दीहपट्ठाओ ते भयं ॥ ११५९ ॥
सिक्खियव्वं मणुस्सेण अवि जारिस तारिसं ।
पेच्छ मुद्धसिलोगेहिं जीवियं परिरक्खियं ॥ ११६० ॥

उज्जेणी जवराया, गद्दभिल्लो जुवराया, दीहपिट्ठो अमच्चो, अडोलिया भगिणी ।

भमरेहिं महुयरीहिं य सूतिज्जइ अप्पणो य गंधेणं ।
पाउसकालकलंबा जति वि णिगूढा वणनिगुंजे ॥ ११८४ ॥
कत्थ व न जलइ अग्गी कत्थ व चंदो न पागडो होइ ।
कत्थ वरलक्खणधरा न पागडा होंति सप्पुरिसा ॥ १२४५ ॥

वासावासे अइक्कंते अट्ठसु उउबद्धएसु मासेसु चारो भवइ । मासे मासेऽन्यत्र गमनमित्यर्थः । इति मासः । देवकुलं चेइयाइं वंदित्ता घरचेइयाइं वंदियव्वाइं । तत्थ कईहि वि जणेहिं सद्धिं आयारओ वंइओ जाइ । इयरे भिक्खं चेव हिंडंता वंदिहिति । तत्थ जइ फासुएणं आयरिओ निमंतिज्जइ तो घेत्तव्वं ।

एमेव य सन्नीण वि जिणाण पडिमासु पढमपट्ठवणे ।
मा परवाई विग्घं करेज्ज वाई अओ विसइ ॥ १७९२ ॥

चूर्णिर्यथा-सावओ कोइ पढमं जिणपडिमाए पइट्ठवणं करेइ । इति कल्पे प्रतिष्ठाविचारः ।

निस्सकडमनिस्सकडे वावि चेइए सव्वहिं थुई तिन्नि ।
वेलं व चेइयाणि य नाउं एक्केक्किया वावि ॥ १८०४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निस्सकडे ठाइ गुरू कइवयसहिएयरा वए वसहिं।
जत्थ पुण अनिस्सकडं पूरिंति तहिं समोसरणं ॥ १८०५ ॥
संविग्गेहि य कहणा इयरेहिं अपच्चओ न ओवसमो।
पवज्जाभिमुहा वि य तेसु वए सेहमाई वा ॥ १८०६ ॥
पूरिंति समोसरणं अन्नासइ निस्सचेइएसुं पि।
इहरा लोगविरुद्धं सद्धाभंगो य सड्ढाणं ॥ १८०७ ॥
एसेव कमो नियमा सपरिक्खेवे सबाहिरीयंमि।
नवरं पुण नाणत्तं अतो मासो बहिं मासो ॥ २०३४ ॥

बहिर्वसमानलोके क्षेत्रे मासद्वयं क्रियते इति। कोटसहिते मासद्वयविचार: कल्पे ॥

पुरओ य मग्गओ या थेरीओ मज्झ हुंति तरुणीओ।
अइगमणे निग्गमणे एस विही होइ कायव्वो ॥ २०८९ ॥

चूर्णिः- पुरओ थेरीओ, मग्गओ वि थेरीओ, मज्झ तरुणीओ, एवं बहुईणं। जहण्णेणं पुण तिण्णि निग्गच्छंति। एत्थ एगा थेरी पुरओ, एगा मग्गओ, तरुणी मज्झे।

मंसाइपेसिसरिसी वसहिखेत्तं च दुलभं जोग्गं।
एएण कारणेणं दो दो मासा अवरिसासु ॥ २९०४ ॥

व्रतिनीनामिति शेषः। कल्पः।

ओली निवेसणे वा वज्जि-तु अटंति जत्थ व पविट्ठा।
न य वदणं न नमणं न य संभासो न वि य दिट्ठी ॥ ३२१६ ॥

ओलीप्रभृतिषु गृहेषु यत्र साधव: प्रविष्टा: तेषु न संयत्य: अटन्ति इत्यर्थ:। 'सो रायावंतिवइ समणाणं'' ॥ ३२८३ ॥ इत्यादि कल्पभाष्येऽपि। इति कल्पप्रथमोद्देशकविचारा: ॥ द्वितीयस्य—

उवस्सगपडिस्सगसेज्जा आलयवसही निसीहिया ठाणे।
एगट्ठवंजणाइं ....॥ ३२९५ ॥ उपाश्रयस्येत्यर्थ: ॥

'सागारिउ त्ति को पुण काहे वा कइविहो व से पिंडो' ३५१९ ॥ इत्यादि कल्पद्वितीयोद्देशकेऽपि अस्ति। जो तरुणो बलवंतो तस्स कप्पा आयपमाणा, जो पुण थेरो सो खीणबलो न सक्केइ संकुंचिउ सुविउं ताहे तस्स आयपमाणाउ छ अंगुलाणि अब्भहियं कीरइ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पेहुल्लेण वि अड्ढाइज्जे हत्थेहिंतो छ अंगुलाणि अब्भहियाणि कीरंति। इति कल्पविचारः ॥

कप्पा आयपमाणा अड्ढाइज्जा उ वित्थडा हत्था ।
एयं मज्झिममाणं उक्कोसं हुंति चत्तारि ॥ ३९६९ ॥
संथारुत्तरपट्टा अड्ढाइज्जा उ आयया हत्था ।
तेसिं विक्खंभो पुण हत्थं चउरंगुलं चेव ॥ ३९८० ॥
तिण्णि कसिणे जहण्णे पंच य दढ दुब्बलाइं गेण्हेज्जा ।
सत्त य परिजुण्णाइं एयं उक्कोसगं गहणं ॥ ३९८६ ॥
वस्त्राणीति शेषः ॥

अक्खा संथारो या दुविहो एगंगियरो चेव ।
पोत्थगपणगं फलगं बिइयपए होइ उक्कोसो ॥ ४०९९ ॥

इति सामान्येन उत्कृष्ट उपधिर्भणितः कल्पे। भाष्यस्य चूर्णौ तु-अक्खा संथारओ दुविहो एगंगिओ अणेगंगियो य। जं वा अणिद्दिसित्ता कीयंतं जइ कीयं संतं भणइ इमाणि मम होहिंति, इमाणि सेसाणं साहूणं देमि त्ति दलमाणस्स कप्पइ। अह निद्दिट्ठं जं साहूणं अणुवट्ठा बियगस्स दिंति असइ सेहे अणिच्छमाणे वा परिट्ठावेयव्वो। इति प्रव्रज्याग्रहीतुरुपकरणविचारः ॥

समणीणं नाणत्तं निज्जोगा तासि अप्पणो चउरो ।
चउरो पंच व सेसा आयरियाईण अट्ठाए ॥ ४२३४ ॥

प्रव्रजितुकामाया व्रतिन्या उपकरणसङ्ख्येयं ज्ञेया ॥

पर्युषणादिविचारः —

आषाढपुण्णिमाए वासावासासु होइ अतिगमणं ।
मग्गसिरबहुलदसमीउ जाव एगंमि खेत्तंमि ॥ ४२८० ॥

'मग्गसिरबहुलदसमीउ' इत्याद्यर्थो यथा चूर्णौ उक्तः - ताहे आसाढपुण्णिमाए अइगंतु पंचहि दिवसेहि पज्जोसवणाकप्पं कहित्ता सावणबहुलपक्खस्स पंचमीए पज्जोसविंती, पज्जोसवित्ता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

उक्कोसेण मग्गसिरबहुलदसमीउ जाव तत्थ अच्छियव्वं, किं कारणं एच्चिरं कालं वसंति? अइ चिक्खल्लो वासं वा पडइ तेण इच्चिरं, इहरा कत्तियपुण्णिमाए चेव निग्गंतव्वं ॥

एत्थ उ पणगपणगं कारणिगं जा सविसईमासो।
सुद्धदसमीठियाण व आसाढीपुण्णिमोसरणं ॥ ४२८४ ॥
काऊण मासकप्पं तत्थेव ठियाणऽतीते मग्गसिरे।
सालंबणाण छम्मासिओ उ जेट्ठोग्गहो होइ ॥ ४२८६ ॥
अह अत्थि पयविचारो चउ पाडिवयंमि होइ निग्गमणं।
अहवा वि अणिंताणं आरोवण पुव्वनिद्दिट्ठा ॥ ४२८७ ॥

तथा 'सवीसइराए मासे पज्जोसवित्ता कत्तियपुण्णिमाए पडिक्कमित्ता बिइयदिवसे निग्गयाणं पंचसत्तरि' इत्यादि पर्युषणादिको विचारः ॥

वर्षातिक्रमे उपधिग्रहण-विचार: —

पुण्णंमि निग्गयाणं साहम्मियखेत्तवज्जिए गहणं।
संविग्गाण सकोसं इयरे गहियंमि गेण्हंति ॥ ४२८८ ॥

चूर्णिर्यथा-जत्थ साहम्मिएहिं न कओ वासारत्तो तत्थ गेण्हंति वत्थाइं। जत्थ पुण कओ वासारत्तो तत्थ सकोसे जोयणं परिहरित्ता गेण्हंति। 'इयरे'त्ति-पासत्थाईतेहिं जत्थ कओ वासारत्तो तत्थ तेहिं गहिए गेण्हंति। किं कारणम्? उच्यते—

वासासु वि गेण्हंती नेव य नियमेण इयरे विहरंती।
तेहि उ सुद्धमसुद्धे गहिए गेण्हंति जं सेसं ॥ ४२८९ ॥
सक्खेत्ते परखेत्ते वा मासा परिहरि-तु गेण्हंति।
जं कारणं न निग्गय तंपि बहिं झोसियं जाण ॥ ४२९० ॥

इति वर्षातिक्रमे उपधिग्रहणविचारः ॥

मासकल्पानन्तरोपधिग्रहणविचार: —

बिइयंमि समोसरणे मासा उक्कोसगा दुवे हुंति।
ओमत्थग परिहाणिय पंच पंचेव य जहण्णे ॥ ४२९७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

चूर्णिस्तु-जत्थ मासकप्पं करिंति तत्थ उवहिं उप्पायंति, तओ निग्गएहि दो मासे परिहरित्ता गेण्हियव्वं आगंतव्वं वा । इति मासकल्पानन्तरोपधिग्रहणविचारः ॥

प्रावरणविचारः — पाणदयानिमित्तं मसगाइणं जयणा भवउ त्ति पाउणइ सीए वि पाउणइ । इति प्रावरणविचारः ॥

आयरियस्स आयरियं पाहुणयमागयं अणब्भुट्ठितस्स, आयरियस्स वसभं पाहुणयमागयं अणब्भुट्ठितस्स एक । भिक्खुं अणब्भुट्ठितस्स खुड्डयं भिन्नमासो ॥

जहि नत्थि सारणा वारणा य पडिचोयणा य गच्छंमि ।
सो उ अगच्छो गच्छो संजमकामीहि मोत्तव्वो ॥ ॥
असढेण समाइण्णं जं कत्थइ कारणे असावज्जं ।
न निवारियमन्नेहि य बहुमणुमयमेयमाइण्णं ॥ ४४९९ ॥
थुइमंगलंमि गुरुणा उच्चारिए सेसगा थुई बेंति ।
पम्हुट्ठमेरसारण विणओ य न फेडिओ एवं ॥ ४५०१ ॥
उप्पन्नकारणंमि किइकम्मं जो न कुज्ज दुविहं पि ।
पासत्थाईयाणं उग्घाया तस्स चत्तारि ॥ ४५४० ॥
अणवट्ठिया तहिं हुंति उग्गहा रायमाइणो चउरो ।
पासाणंमि व लेहा जा तित्थं ताव सक्कस्स ॥ ४७७८ ॥
देविंदराय-उग्गह गहवइ सागारिए य साहम्मी ।
पंचविहंमि परूविए नायव्वं जं जहिं कमइ ॥ ४७८४ ॥

अक्खेत्तं केरिसं ? इत्याह भाष्यकारः —

इंदक्खीलमणुग्गहो जत्थ य राया जहिं व पंच इमे ।
सेट्ठि अमच्च पुरोहिय सेणावइ सत्थवाहो य ॥ ४८५३ ॥

आयरिओ अप्पबिइओ [अप्पबिइओ] गणावच्छेइओ य अप्पतइओ गच्छो परिसा तिन्नि गच्छा, एते पण्णरस उउबद्धे जहण्णेणं जत्थ संतरंति । वासासु सत्तउ गच्छो आयरिओ अप्पतइओ गणावच्छेइओ अप्पचउत्थो एस सत्तउ गच्छो ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

अप्पतइओ गणावच्छेइओ अप्पचउत्थो एस सत्तउ गच्छो ।

उग्गमादि असुद्धं जइ आउट्टियाए गेण्हइ, अप्पणा भोक्खामि सेहस्स वा दाहामि जेण दोसेण असुद्धं तमावज्जइ । एयं जत्थ अणाभोगेण गहियं, तं जइ अजयणाए देइ तो इमे दोसा । इति सेहं प्रति विचारः ।

खमणे य असज्झाए रायणिय महानिनाय नियए वा ।
सेसेसु नत्थि खमणं नेव असज्झाइयं होइ ॥ ५५५० ॥
दिवंगतेष्विति शेषः ।

दीहाइमाइसु उ विज्जबंधं कुव्वंति उल्लोयं कडं च पोत्तिं ।
कप्पासईए खलु सेसगाणं मोत्तुं जहन्नेण गुरुस्स कुज्जा ॥ ५६८१ ॥

उल्लोचो बद्ध्यते इति शेषः । एते कल्पचतुर्थोद्देशकविचाराः । पञ्चमस्य यथा—

आवस्सिगा निसीहिय अकरिंति असारणे तमावज्जे ।
परलोइयं च न कयं सहायगत्तं उवेहाए ॥ ५९९५ ॥
जं वा भुक्खत्तस्स उ संकममाणस्स देइ अस्सायं ।
सव्वो सो आहारो अकामऽनिट्ठं चणाहारो ॥ ६०८३ ॥

जं वा तंमि चउव्विहे अईइ अन्नं लोणाई एस आहारो । पञ्चमोद्देशके । षष्ठे यथा—

सामाइए य छेए निव्विसमाणे तहेव निविट्ठे ।
जिणकप्पे थेरेसु य छव्विह कप्पट्ठिई होइ ॥ ६२५७ ॥
सेसा वेढियपोत्तं नइ उयरणंमि नग्गयं बेंति ।
जुण्णेहिं नग्गिया मी तुर सालिय ! देहि मे पोत्तं ॥ ६३६६ ॥
जुण्णेहि खंडिएहि य असव्वतणुपाउएहिं न य निच्चं ।
संतेहिं वि निग्गंथा अचेलगा हुंति चेलेसु ॥ ६३६७ ॥
सव्वाहिं संजईहिं किइकम्म संजयाण कायव्वं ।
पुरिसुत्तरिओ धम्मो सव्वजिणाणं पि तित्थेसु ॥ ६२९९ ॥
तओ पारंचिआ वुत्ता अणवट्ठप्पा य तिण्णि उ ।
दंसणंमि य वंतंमि चरित्तंमि य केवले ॥ ६४१० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

अदुवा चियत्तकिच्चे जीवकाए समारंभे ।
सेहे दसमे वुत्ते जस्सुवट्ठावणा भणिया ॥ ६४११ ॥

अपवादपदे कृत्वा ततः पुनः करोतीत्यर्थः ।

केवलगहणा कसिणं जइ वमई दंसणं चरित्तं वा ।
तो तस्स उवट्ठवणा देसे वंतंमि भयणा उ ॥ ६४१५ ॥
अप्पच्छित्ते पच्छित्तं पच्छित्ते अइमत्तया ।
धम्मस्सासायणा तिव्वा मग्गस्स य विराहणा ॥ ६४२२ ॥
सपडिक्कमणो धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स ।
मज्झिमयाण जिणाणं कारणजाए पडिक्कमणं ॥ ६४२५ ॥
गमणागमणवियारे सायं पाओ य पुरिमचरिमाणं ।
नियमेण पडिक्कमणं अइआरो होउ वा मा वा ॥ ६४२६ ॥
ठवणाकप्पो दुविहो अकप्पठवणा य सेहठवणा य ।
पढमो अकप्पिएणं आहाराई न गेण्हावे ॥ ६४४२ ॥

अकल्पिकेन आहारादिकं न ग्राहणीयम् इत्येकः ।

अट्ठारसेव पुरिसे वीसं इत्थीओ दस नपुंसा य ।
दिक्खेइ ओ न एए सेहठवणाए सो कप्पो ॥ ६४४३ ॥
द्वितीयोऽयम् ।

खेत्तकप्पो जहा—सिंधुविसए पाउएहिं हिंडिज्जइ, वासावासे मासकप्पेणं वा पाउएहिं हिंडिज्जइ, अभाविओ सेहो सो पाउए हिंडइ जाव भाविज्जइ, असहू सीयं नाहियासेइ उण्हे वा काले पच्चूसे पविसंतो भिक्खाइसु अट्ठाए अद्धाण दंडपरिहारेणं पाउया जइ सागारियपडिबद्धे वि या तेणं एए पाउया निग्गच्छंति । इति कल्पचूर्णौ षष्ठोद्देशके । समाप्ताः कल्पविचारा इति ।

व्यवहारविचारा यथा—

जं जस्स व पच्छित्तं आयरियपरंपराए अविरुद्धं ।
ओगा य बहुविगप्पा एसो खलु जीयकप्पो उ ॥ १२ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

व्यवहारस्य विचाराः

चूर्णिर्यथा–जहा अपच्चक्खाणे अन्ने निव्विइय, अन्ने आयंबिल-मिच्छंति । जोगा य बहुविहा य त्ति । जहा नाइलकुलव्वियणं आयाराओ आढवेत्ता जाव दसाओ ताव नत्थि आयंबिलं, निव्वि-गईएणं पढंति, विहीए आयरियाणुण्णायं काउस्सग्गं काउं परिभुंजंति विगइं, तहा कप्पववहाराणं केसिंचि आगाढं जोगं केसिंचि अणागाढं इत्यर्थः । पंचविहो ववहारो–आगमे, सुए, आणा, धारणा, जीए । पडिसेवणापच्छित्तस्स इमे भेया ।

आलोयणपडिक्कमणे मीसविवेगे तहा विउस्सग्गे ।
तव छेय मूल अणवट्ठया य पारंचिए चेव ॥ ५३ ॥

अर्थो–यावान् कश्चिदतिचारः आलोचनया शुद्ध्यति स आलो-चनारिह इत्युच्यते, परस्य प्रकटीकरणमित्यर्थः ।

गुत्तीसु य समिईसु य पडिरूवजोगे तहा पसत्थे य ।
वइक्कमेऽणाभोगे पायच्छित्तं पडिक्कमणं ॥ ६० ॥

मीसपायच्छित्तं इत्थं कृतं नवेत्यादिकं ।

पक्खियाइसु चेइयवंदओ गंतुं इरियावहियाए पडिक्कमित्ता विस्समइ अविस्समंतस्स गमणागमणं ।

गमणागमणवियारे सुत्ते वा सुमिणदंसणे राओ ।
नावानइसंतारे पायच्छित्तं विउस्सग्गो ॥ १११ ॥

चशब्देन एएसु चेव अट्ठमीपमुहेसु इतिशेषः । चेइयाइं साहुणो वा जे अन्नाए वसहीए ठिया ते न वंदइ मासलहु, जइ चेइयघरे ठिया वेयालियं कालं पडिक्कंता अकए आवस्सए गोसे य कए आवस्सए चेइए न वंदंति तो मासलहु इति ।

तपसः क्रमो यथा—

निव्वीए पुरिमड्ढे एक्कासणयंबिले चउत्थे य ।
पणगं दस पण्णरसा वीसा तह पण्णवीसा य ॥ १६४ ॥
मासो लहुओ गुरुओ चउरो मासा हवंति लहुगुरुगा ।
छम्मासा लहुगुरुगा छेओ मूलं तह दुगं च ॥ १६५ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

संभोइयो आयरिया पक्खिए आलोयंति, उमो रायणिस्स आलोएइ, रायणिओ वि उमरायणियस्स आलोएइ, जइ सो रायणिओ नत्थि असइ चाउमासिए (तत्थवि) असइ संवच्छरिए उक्कोसेणं बारसहिं वरिसेहिं दूराओ वि आगंतु आलोएयव्वं । फड्डगवइया वि आगंतुं पक्खियाइसु मूलायरियस्स आलोयंति ।

सच्छंदत्ति । सो भणइ-सन्नाभूमिं पि पगाणियस्स गमणं पडिसेहंति तं असहमाणो आगओ हं । विवरीयं नाम पए रयहरणं निपच्छिमं पडिलेहेइ, अवरण्हे पढमं रयहरणं पडिलेहेइ ।

पिंडस्स जा विसोही समितिओ भावणा तवो दुविहो ।
पडिमा अभिग्गहा वि य उत्तरगुणमो वियाणाहि ॥ २८९ ॥
बायाला अट्ठेव य पणवीसा बार बारस य चेव ।
दव्वाइचउरभिग्गह भेया खलु उत्तरगुणाणं ॥ २९० ॥

काइगाइभूमिपि न पडिलेहंति, सज्झायं वा न करिंति, अपट्ठविए वा परियट्टंति, आवस्सयं वा न करिंति, पाउया वा करिंति, दंडगाईणं गहण-निक्खेवेसु न पडिलेहणपमज्जणाई दुप्पडिलेहियाई वा करिंति, विणयं वा अहा-वत्थुं न करिंति, रायं निग्गच्छमाणं इत्थिं वा सुअलंकियं पज्जमाणिं पलोयंति, नहं वा आघंसंति, नहवीणियं वा करिंति, कंदप्पकोक्कुइयत्तणं करिंति, एएसु वट्टमाणा पडिसेहेयव्वा । यथा-आउत्ता लेहगा सव्वं लिहंति अविस्सरणनिमित्त, एवं सो नायओ हियए सव्वे अवराहे लिहित्ता आयरियाणां कहेइ, आयरिओ, तं सोउं तं निप्फन्नं पच्छित्तं देइ ।

गर्भाष्टमविचारः- 'गिहत्थपरियाओ जहन्नेण एगुणतीसं वरिसाणि । कहं पुण? गब्भट्ठमो पव्वइओ' इत्यक्षराणि गर्भाष्टमविषये ।

अहाछंदस्वरूपं यथा- सच्चेव मुहपोत्तिया सच्चेव पडिलेहणिया भवइ, दोहि अइरेगो भवइ, जो चेव मत्तओ सो चेव पडिग्गहो होउ किं दोहि? सो चेव चोलपट्टओ सो चेव उत्तरपट्टओ होउ इत्यादिकम् ।

खेत्तओ विमग्गेज्जा जाव उ छ सत्त जोयणसयाइं ।
बारस समाउ कालओ उक्कोसेणं विमग्गेज्जा ॥

आलोचनादाता निरीक्षणीयः इति शेषः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

एवं पि विमग्गंतो जइ न लभिज्जा उ गीयसंविग्गं ।
पासत्थाइसु तओ वियडे अ[illegible]सुं पि ॥ ॥
तस्सऽसइ सिद्धपुत्ते पच्छा[illegible]डे चेव होइ गीयत्थे ।
आयकहाए वि लिंगे गेण्हावि[illegible] अणिच्छइत्तरियं ॥ ॥
तेसिं पि य असईए ताहे आलोए देवयसगासे ।
किइकम्म निसेज्जाविही तहेव सामाइयं नत्थि ॥ ॥

अरहंतपडिमाणं आलोएइ सो पायच्छित्तं जाणओ आलोएत्ता सयमेव पायच्छित्तं पडिवज्जइ। असइ पाइन्नाइ अभिमुहो अरहंत-सिद्धाणं अंतिए आलोएइ ।

गीयत्थो य विहारो बीओ गीयत्थनिस्सिओ भणिओ ।
एत्तो तइयविहारो नाणुण्णाओ जिणवरेहिं ॥ २० ॥
वायपराइण कुविओ चेइय-तद्दव्व-संजइग्गहणे ।
पुव्वुत्ताण चउण्ह वि कज्जाण हवेज्ज अण्णयरं ॥ २५२ ॥

'तद्दव्व' इत्यनेन देवद्रव्यविचार: । व्यवहारद्वितीयोद्देशके । तृतीयोद्देशके यथा—

गणहारिस्साहारो उवगरणं संथवो य उक्कोसो ।
सक्कारो सीसपडिच्छएहिं गिहि-अण्णतित्थीहिं ॥ ४६ ॥

गणभृत: आहारादि उत्कृष्टं देयं, ततश्च सत्कार: स्यात् शिष्यादिभिरित्यर्थः ।

हत्थे पाये कण्णे नासाउट्ठेहिं वज्जियं जाणे ।
वामणगमडभकोढिय काणा तह पंगुला चेव ॥ ९४ ॥
दिक्खिउं पि न कप्पंति जुंगिया कारणे वि दोसा वा ।
अण्णायदिक्खिए वा नाउं न करिंति आयरिए ॥ ९५ ॥
पच्छा वि हुंति विगला आयरियत्तं न कप्पइ तेसिं ।
सीसो ठावियव्वो काणगमहिसो व्व निन्नंमि ॥ ९६ ॥
पुव्वं चउद्दसपुव्वी इण्हिं जहण्णो पकप्पधारी उ ।
मज्झिमग पकप्पधारी किं सो उ न होइ गीयत्थो ? ॥ १७३ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

प्रकल्पो-निशीथः तद्धारी जघन्यगीतार्थः । कल्पधरो मध्यम इत्यर्थः ।

पुव्वं सत्थपरिण्णा अहीयपढियाइ होउ उवट्ठवणा ।
इण्हि छज्जीवणिया किं सा उ न होउ उवट्ठवणा ?॥ १७४ ॥
आयारस्स उ उवरिं उत्तरज्झयणाउ आसि पुव्विं तु ।
दसवेयालिय उवरिं इयाणि किं ते न हुंती उ ? ॥ १७६ ॥

व्यवहारतृतीयोद्देशके । आचार्यादिपदविचारः—

तिवासपरियागस्स उवज्झायत्तं कप्पइ, तस्स अप्पपरियागस्स नत्थि खेयबहुओ जेण आयरियत्तं पि काहिइ पंचवासपरियागस्स उवज्झायत्तं आयरियत्तं पि कप्पइ, बहुतरवासपरियागत्तेण खेयसहतराउ तेण तस्स दो ठाणाणि कप्पंति, छण्हं वासाणं परेण वि य दुवासपरियाओ भवइ, तस्स सव्वाणि वि सट्ठाणाणि कप्पंति । उवज्झायत्तं आयरियत्तं गणित्तं पवत्तित्तं थेरत्तं गणावच्छेइयत्तं (१८३) इत्याचार्यादिपदविचारः ।

राइत्थीए जाए ताए अग्गमहिसीए कुलकण्णगाए वा पयासु तिसु वि पारंचिओ, अमच्चीए अणवट्ठो, विहवाए अविसेसियाए पागइत्थीए य [अवसेसियाए] मूलं, तम्हा एयाओ परिहरियव्वाओ । (२४९-२५०) इति उत्थापनाविषयः ।

संघो गुणसंघाओ संघायविमोयओ य कम्माणं ।
रागद्दोसविमुक्को होइ समो सव्वजीवाणं ॥ ३२२ ॥
परिणामियबुद्धीए उववेओ होइ समणसंघो उ ।
कज्जे निच्छियकारी सुपरिच्छियकारओ संघो ॥ ३२३ ॥
दुक्खेण लभइ बोहिं बुद्धो वि य न लभइ चरित्तं तु ।
उम्मग्गदेसणाए तित्थयरासायणाए य ॥ ३२५ ॥

चतुर्थोद्देशके यथा—

जाओ य अजाओ वा दुविहो कप्पो उ होइ नायव्वो ।
एक्केक्को वि य दुविहो समत्तकप्पो य असमत्तो ॥ १५ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

गीयत्थो जायकप्पो अगीओ खलु भवे अजाओ उ ।
पणगं समत्तकप्पो तदूणगो होइ असमत्तो ॥ १६ ॥
महइ वियारभूमी विहारभूमी य सुलभवित्ती य ।
सुलभा वसही य जहिं जहण्णतं वासखेत्तं तु ॥ ४० ॥
चिक्खल्ल-पाण-थंडिल-वसही-गोरस जणाउलो वेज्जो ।
ओसह-निचयाऽहिवई पासंडा भिक्ख सज्झाए ॥ ४१ ॥
एते त्रयोदश गुणा वर्षाक्षेत्रे ।
तरुणे वसहीपाले कप्पट्ठिसलिंगमाइ आउभया ।
... उ पसज्जंति अकप्पिए दोसिमे अण्णे ॥ ९० ॥
अकल्पिके च साधौ दोषाः ।

अह न संथरंति ताहे आयरिओ हिंडइ तंमि वाडए वसहिं पलोएंतो हिंडइ । परिमियं नाम इयरे साहू जावइयं उद्धडाउ ऊणं आणिंति तावइयं अज्झापूरं हिंडित्ता आयरिओ खिप्पं संनियट्टइ । वासावासे वीसुंति पिहप्पिहं ठिया असमत्तकप्पिया य ते 'अमणुन्न'त्ति । न परोप्परं उवसंपन्ना नत्थि तेसिं उग्गहो समं जइ दोण्णि समत्तकप्पिया पज्ज तेसिं साहारणं खेत्तं ।

एगो एगस्स पासे आवस्सयं अहिज्जइ, आवस्सगवायणायरिओ पुण आवस्सगपडिपुच्छगस्स सगासे दसवेयालियं अहिज्जइ, दसवेयालियवायणायरिओ हरइ । एवं जाव दिट्ठिवाओ । एवं सुत्ते अत्थे वि एवं चेव, नवरं उवरिम अत्थायरियाणं छेयसुयअत्थायरिओ हरइ । इति वर्षाक्षेत्रे आभाव्यव्यवहारः । गाथाश्च भाष्यस्य यथा–

वासासु अमणुण्णा असमत्ता जे ठिया भवे वीसुं ।
तेसिं न होइ खेत्तं अह पुण समणुण्णा य करिंति ॥ ९१ ॥
ता तेसि होइ खेत्तं ... उ पहू तेसि जो उ रायणिओ ।
लाभो पुण जो तत्था सो सव्वेसिं तु सामण्णो ॥ ९२ ॥
अहव जइ वीसु वीसुं ठियाओ असमत्तकप्पिया होज्जा ।
अण्णो समत्तकप्पी एज्जाही तस्स तं खेत्तं ॥ ९३ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

अहवा दोण्णि व तिण्णि व समगं पत्ता समत्तकप्पीओ ।
सव्वेसिं तु तेसिं तं खेत्तं होइ साहारणं ॥ ९४ ॥
पडिभग्गेसु मएसु व असिवाइकारणेसु फिडिया वा ।
एएण उ एगागी असमत्ता वा भवे थेरा ॥ ७१ ॥
इंदक्कीलमणोग्गाहो जत्थ व राया जहिं व पंच इमे ।
अमच्च पुरोहिय सेट्ठी सेणावइ सत्थवाहो य ॥ ७८ ॥
यत्रेन्द्रकीलः तत्रानवग्रह इत्यर्थः ।

सारूवी जा जीवं पुव्वायरियस्स जे य पव्वावे ।
अपव्वाविए स छंदो इच्छाए जस्स सो देइ ॥ १४० ॥
जो पुण गिहत्थमुंडो अहवा मुंडो उ तिण्ह वरिसाणं ।
आरेणं पव्वावे सयं च पुव्वायरिये सव्वं ॥ १४१ ॥
अपव्वाविए सछंदा तिण्हं उवरिं तु जाणि पव्वावे ।
अपव्वावियाणि जाणि य सो वि य जस्सिच्छए तस्स ॥ १४२ ॥

तओ वत्तव्वं एयस्स गणहरत्तं अणुण्णायं, वायाए न सक्केइ वोत्तुं ताहे तस्स उवरिं चुन्नानि च्छुभंति एस गणहरो ठविओ त्ति ।

एगं व दो व दिवसे संघाडट्ठाए सो पडिच्छेज्जा ।
असई एगाणी उ जयणा उवही न उवहम्मे ॥ १९३ ॥

सङ्घाटकार्थं एगं द्वे वा दिने प्रतीक्षेत, असति यतनया एकाकिनोऽपि नोपहन्यते इति तात्पर्यार्थः ।

ताओ संजईओ दुविहाओ-कालचारिणीओ अकालचारिणीओ य । तत्थ कालचारिणीओ जाओ पक्खियासु एंति, पयव्वइरित्तेसु एज्जमाणीओ अकालचारिणीओ, ताओ पुण अकालचारिणीओ सज्झायट्ठाए वा एंति, भत्तं पाणं वा दाउं गेण्हिउं वा इंति, कंदप्पट्ठाए वा इंति, अकालचारिणीसु बहुदोसा वसही ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

व्यवहारस्य विचारा:

संनिसेज्जागयं दिस्स सिस्सेहिं परिवारियं ।
कोमुईजोगजुत्तं वा तारापरिवुडं ससिं ॥ २७३ ॥
गिहत्थपरतित्थीहिं संसयत्थीहिं निच्चसो ।
सेविज्जंतं विहंगेहिं सरं व कमलुज्जलं ॥ २७४ ॥
खग्गूडे अणुसासंतं सद्भावंतं समुज्जए ।
गणस्स अगिला कुव्वंतं संगहं विसए सए ॥ २७५ ॥
आचार्यमिति शेषः ।

अहवा गुरुणो जावज्जीवं फासुअ-अफासुएण तेइच्छं ।
वसभे बारस वासा अट्ठारस भिक्खुणो मासा ॥ ३०३ ॥
चिकित्सा इयम् ।

फासुय आहारो से अणहिंडंतो उ गाहए सिक्खं ।
ताहे उ उवट्ठावण छज्जीवणियं तु पत्तस्स ॥ ३१० ॥
षड्जीवनिकाध्ययनं ज्ञेयम् ।

अपत्ते अकहित्ता अणहिगय अपरिच्छ अइक्कमे वा से ।
एक्केक्के चउगुरुगा चोयगसुत्तं तु कारणियं ॥ ३११ ॥
इइ खलु आणाबलिया आणासारो य गच्छवासो उ ।
मोत्तुं आणापाणुं सा कज्जा सव्वहिं जोगे ॥ ३४७ ॥

गिम्हाइसु जे अणागाढजोगपडिवन्ना तेसिं जोगो निक्खिप्पइ मा पमत्तं देवया छलेज्ज तेण निक्खिप्पइ, तेहिं दिवसेहिं विगइओ लब्भंति, ते आहारित्ता दुब्बला अप्पाइज्जंति एएण कारणेणं निक्खिप्पइ जोगो । इतरे नाम आगाढजोगवाही तेसि न निक्खिप्पइ जोगो न पुण उद्दिसई न वा पढंति । ४१० ।

ओसन्नाण बहूण वि गीयमगियाण उग्गहो नत्थि ।
सच्छंदीय गीयाणं असमत्त अणीसगीए वि ॥ ४९० ॥

तिविहो उग्गहकालो-उउबद्धे वासारत्ते वुड्ढवासे, उउबद्धे एक्कं मासं उस्सग्गेण वासासु चत्तारि मासा गेलन्नं पडुच्च सोलस वरिसा व मासा वा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

खेत्तेण अद्धजोयण कालेणं जाव भिक्खवेलाओ ।
खेत्तेण य कालेण य जाणसु सपरक्कमं थेरं ॥ ५३७ ॥
जो गाउयं समत्थो सूराद्दारब्भ भिक्खवेलाओ ।
विहरउ एसो सपरक्कमो उ नो विहरे तेण परं ॥ ५३८ ॥
भागे भागे मासं काले वी जाव पक्कहिं सव्वं ।
पुरिसेसु वि सत्तण्हं असईए जाव एक्कउ [सहाओ] ॥ ५५८ ॥
थिरमउयस्स उ असई अप्पडिहारियस्स चेव वच्चंति ।
बत्तीस जोयणाणि वि आरेण अलब्भमाणंमि ॥ ५५७ ॥
काष्ठसंस्थारके इतिशेषः ।
आसज्ज खेत्तकाले बहुपाउग्गा न संति खेत्ता वा ।
निच्चं व विभत्ताणं सच्छंदाइ बहूदोसा ॥ ५७० ॥

चूर्णिर्यथा— आसज्ज त्ति पडुच्च अण्णेसु खेत्तेसु असिवाईणि कालो जहा-संपयं नत्थि अण्णाणि खेत्ताणि जेसु संथरंति, महाजणपाओग्गाणि वा नत्थि खेत्ताणि पिहप्पिहं च जइ हुंत सच्छंदाई दोसा भवंति । एएहिं कारणेहिं उउ-वासाइयंमि एगखेत्ते जयणाए अच्छेज्ज, इति व्यवहाराक्षरैः केचिन्नित्यवासं समर्थयन्ति ।

कल्पचतुर्थोद्देशकस्यैते । पञ्चमे यथा—

अवि य विणा सुत्तेणं ववहारेऊ अपच्चओ होइ ।
तेणं उभयधरो उ गणहारी सो अणुण्णाओ ॥ ३१ ॥
ता जाव अज्जरक्खिय आगमववहारिणो वियाणित्ता ।
न भविस्सइ दोसु त्ति तो वायंती उ छेयसुयं ॥ ६२ ॥

आर्यिकाः छेदश्रुतं पाठयन्तीत्यर्थः । षष्ठोद्देशके यथा—

चरणकरणस्स सारो भिक्खायरिया तहेव सज्झाओ ।
एत्थउ उज्जयमाणं तं जाणसु तिव्वसंविग्गं ॥ ३९ ॥

आयरिय-उवज्झायगणंसि पंच अइसेसा पण्णत्ता, तं आयरिय-उवज्झायस्स उच्चारपासवणं अंतो उवस्सयस्स य निग्गिज्झिय निगज्झिय पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा नाइक्कमइ, आयरिय-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

व्यवहारस्य विचाराः

उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स उच्चार पासवणं वा विगिंचमाणे वा विसोहमाणे वा नाइक्कमइ, आचार्यश्चासावुपाध्यायश्च आयरियउवज्झाए एसो केसिंचि आयरिओ केसिंचि उवज्झाओ नियमेण पुण सो आयरिओ कुलाइकज्जेणं निग्गओ पडियागओ उस्सग्गेण ताव वसहीए बाहिं चेव पाए पप्फोडेइ, निक्कारणे पाए बाहिं न पप्फोडेइ, पंच राइंदियाणि । जइ बाहिं सागारियं होज्ज तो वसहिं पविसित्ता पप्फोडणा, तत्थ विहीए पप्फोडेयव्वं पडिलाभित्ता पमज्जित्ता । सो अभिग्गहिओ आयरियसंतिएणं रयहरणेणं आयरियस्स पाया पमज्जइ । अहव उन्निओ पायपुंछणो तेण वा ।

सुत्तवंतंमि परियारवं च वणियंतरावणुट्ठाणे ।
दुट्ठाणनिग्गमंमी य हाणि य परमुहावन्नो ॥ ९७ ॥

इत्याचार्येण बहिर्भूमौ न गन्तव्यम् ।

उप्पण्णनाणा जह नो अडंती चोत्तीसबुद्धाइसया जिणिंदा ।
एवं गणी अट्ठगुणोववेओ सत्था व नो हिंडइ इड्ढिमं तु ॥ १२५ ॥

इत्याचार्येण न भिक्षणीयम् ।

सुत्तस्स मंडलीए नियमा उट्ठंति आयरियमाई ।
मोत्तूण पवायंतं न उ अत्थे दिक्खण गुरुंपि ॥ १९८ ॥

अनुयोग इति शेषः ।

भत्ते पाणे धोवण पसंसणा हत्थपायसोए य ।
आयरिए अइसेसा अणाइसेसा अणायरिए ॥ २२९ ॥
कालसभावाणुमयं भत्तं पाणं अचित्तं खेत्ते ।
मलिणा मलि य जाया चोलाइ तस्स धोवंति ॥ २३० ॥
परवाईण अगम्मो नेव अवण्णं करेंति सुयसेहा ।
जइ अकहिउ वि नज्जइ एस गणी ओज्जपरिहीणो ॥ २३१ ॥
एए पुण अइसेसे उवजीवेयावि कोवि दढदेहो ।
निदरिसणंएत्थभवे अज्जसमुद्दा य मंगू य ॥ २३९ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

करचरणनयणदसणाइ-धोवणं पंचमो उ अइसेसो।
आयरियस्स उ सययं कायव्वो होइ नियमेण ॥ २३६ ॥

जइवि य निग्गयभावो तहवि य रक्खिज्जए स अण्णेहिं।
वंसकडिल्ले छिन्नो वि वेणुओ पावए न महिं ॥ २४९ ॥

विज्जाणं परिवाडी पव्वे पव्वे य दिंति आयरिया।
मासद्धमासियाणं पव्वं पुण होइ मज्झं तु ॥ २५१ ॥

पक्खस्स अट्ठमी खलु मासस्स य पक्खियं मुणेयव्वं।
अण्णं पि होइ पव्वं उवरागो चंदसूराणं ॥ २५२ ॥

चूर्णिर्यथा- 'पक्ख पव्वस्स मज्झं अट्ठमि बहुलाइया मास त्ति काउं मासस्स मज्झे पक्खियं किण्हपक्खस्स चउद्दसीए विज्जासाहणोवयारो' इति पाक्षिकविचारः।

अह उग्घाडपोरिसीए इंतवव्वंताणं पोरिसीभंगो भवइ तो आयरिएण चेव अकयसुयाणं सगासं गंतव्वं, अह आयरिओ वुड्ढत्तणेणं गेलण्णेण वा न सक्केइ गंतुं ताहे अकडसुत्ता मज्झे आयरियसगासमागंतुं आलोइंति' इति अन्यत्र उषितानां प्रभातादौ आलोयणकस्य विचारः।

जहा य अंबुनाहंमि अणुबंधपरंपरा।
वीई उप्पज्जए एवं परिणामो सुभासुभो ॥ ३१६ ॥
षष्ठस्यैते समाप्ताः।

सप्तमे तु यथा—
धम्मकहनिमित्तेहि य विज्जामंतेहिं चुण्णजोगेहिं।
इब्भाइं जोसियाणं संथवदाणे जिणाययणं ॥ ३ ॥

संबोहणट्ठयाए विहारवत्ती व जिणवरमहे वा।
महयरिया तत्थ गया निज्जरणं भत्तवत्थाणं ॥ ४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

अणुसट्ठउज्झमंती य विवज्जते चेइयाण सारवए।
पडिवज्जंति अविज्जंतए उ गुरुया अभत्तीए ॥ ५ ॥

चूर्णिर्यथा— कस्सइ आयरियस्स सिस्सिणी सा सुत्तत्थाणि घेत्तुं धम्मकहाओ य पढित्ता निमित्ताणि य घेत्तुं आइग्गहणेणं विज्जाओ मंताणि चुण्णजोगा य जाणित्ता निग्गया गच्छाओ ताहे सा इब्भइणं इत्थियाओ आउट्टावेत्ता संथवेण जिणाययणं कारित्ता विउलं सक्कारसमुदयं अणुभवइ। अहण्णया सा महत्तरिया से तीसे संबोहणट्ठाए वा विहारपत्तियं वा चेइयमहे वा तत्थ गया। तओ सा सिस्सिणी तीसे परितुट्ठा मयहरियाए विरूवरूवं असणाइ वत्थाणि य महारिहाणि निज्झरावेइ इब्भाइघरेसु। अणुसट्ठगाहा। ताहे सा महत्तरियाए अणुसट्ठा। किं अज्जे! पासत्थत्तणेणं अच्छसि? उज्झ- माहि अहवा अप्पणा चेव उज्झमिउकामा एवं तीए उवट्ठियाए जइ चेइयाण अण्णो सुस्सूसओ अत्थि तो पडिक्कमाविज्जइ तस्स ठाणस्स। अह अण्णो नवि चेइयाणं सुस्सूसओ तो जइ ताओ पडिक्कामित्ता णिंति तो चउगुरुयं तासिं चेइयाणं अभत्तिनिमित्तं। इति प्रतिष्ठा- विचारः लिंगिकारितादिजिनचैत्यवंदनादिविचारश्चेति।

अह नवरं पक्खियाइसु अज्जाओ चेइयवंदियाओ पट्ठियाओ इति।

तिण्णि दिणे पाहुण्णं सव्वेसिं असइ बालवुड्ढाणं।
जे तरुणा सग्गामे वत्थव्वा बाहि हिंडंति ॥ ८६ ॥
अट्ठमि पक्खिए मोत्तुं वायणाकालमेव य।
पुव्वुत्ते कारणे वावि गमणं होइ अकारणे ॥ २२९ ॥

व्यवहारे सप्तमस्य समर्थिताः। अष्टमे तु यथा—

उच्चारं पासवणं, अणुपंथे चेव आयरंतस्स।
लहुओ य होइ मासो, चाउम्मासो य वित्थारो ॥ (व्यव० भा० १७७)

नवमे यथा—

चेइयदव्वं विभया करेज्ज कोई नरो सयट्ठाए।
समणं वा सोवहियं, विक्केज्जा संजयट्ठाए ॥ ६२ ॥

चूर्णिर्यथा—

चेइयदव्वं हत्वा चोरा विभएज्ज। तत्थ कोइ अप्पणगं भागं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

समणाणं देज्ज जो वा संजयं सोवहियं विक्किणित्ता तं फासुगं समणाणं देज्ज तं किं कप्पइ न कप्पइ वा? उच्यते इत्याह यथा—

चेइयदव्वं विभया करेज्ज कोई नरो सयट्ठाए ।
समणं वा सोवहियं, विक्केज्जा संजयट्ठाए ॥
एयारिसंमि दव्वे समणाणं किण्णु कप्पए घेत्तुं ? ।
चेइयदव्वेण कयं मोल्लेण वज्जं सुविहियाणं ॥
तेणपडिच्छा लोए वि गरहिया उत्तरे किमंग पुण ।
चेइय जइ पडिणीए जो गेण्हइ सो वि हु तहेव ॥ (६३, ६४)
जा तित्थयराण कया वंदण आवरिसणाइ पाहुडिया ।
भत्तीए सुरवरेहिं समणाण तहिं कहं भणियं ? ॥ (६६)

चूर्णिर्यथा—

उच्यते (भगवतः) प्रवचनातीतत्वात् कल्पते । किं चान्यत्

जइ समणाण न कप्पइ, एयं एगाणिगा जिणवरिंदा ।
गणहरमाई समणा अकप्पए नेव चिट्ठंति ॥ ६७ ॥
तम्हा कप्पइ ठाउं जह सिद्धायणंमि होइ अविरुद्धं ।
जम्हा उ न साहंमी सत्था अम्हं तओ कप्पे ॥ ६८ ॥

चूर्ण्यक्षराणि यथा—

जत्थ निस्सा नत्थि तत्थ कप्पइ सिद्धाययणे ठाइउं, किं कारणं ? उच्यते—

साहम्मियाण अट्ठा चउव्विहो लिंगओ जह कुटुंबी ।
मंगलसासयभत्तीए जं कयं तत्थ आएसो ॥ ६९ ॥

पूर्वोक्ता कल्पे ।

एसा जत्थ निस्सा नत्थि तत्थ वि चेइयघरे न कल्पते ठाउं, इमेण कारणेण—

जइवि न आहाकम्मं भत्तिकयं तह वि वज्जयंतेहिं ।
भत्ती खलु होइ कया जिणाण लोगे वि दिट्ठं तु ॥
बंधित्ता कासवओ वयणं अट्ठपुडसुद्धपोत्तीए ।
पत्थिवमुवासए खलु वित्तिनिमित्तं भया चेव ॥ (७०, ७१)

चूर्णिस्तु एवं-रायत्थाणीयस्स तित्थगरपडिमाभत्तिनिमित्तं । मा वाउनिसग्गो उस्सासनिस्सास निया (निग्गमा) विस्संति तेण न

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

कप्पइ चेइयघरे ठाउं। अत्र कारणं—

दुब्भिगंधपरिस्सावी तणुरप्पेसऽण्हाणिया।
दुहा वाउवहो चेव तेण ठुंति न चेइए॥
तिण्णि वा कड्ढए जाव थुइओ तिसिलोइया।
ताव तत्थ अणुण्णायं कारणंमि परेण वि (७२, ७३)

इति व्यवहारे देवद्रव्यस्य तीर्थंकरनिमित्तं कृते समवसरणे साधूनां कल्पते इत्यस्य च जिनगृहनिवासनिषेधस्य स्तुतित्रयस्य च विचारः नवमोद्देशके।

(वर्षाप्रवेशादिविचारः)

चउग्गुणोववेयं तु खेत्तं होइ जहण्णयं।
तेरसगुणमुक्कोसं दोण्हं मज्झंमि मज्झिमगं॥ ६७॥
महई विहारभूमी वियारभूमी य सुलभवित्ती य।
सुलभा वसही य जहिं जहण्णगं वासखेत्तं तु॥ ६८॥
चिक्खल्ल १ पाण २ थंडिल ३ वसही ४ गोरस ५ जणाउले ६ वेज्जे ७।
ओसह ८ निचया ९ हिवई १० पासंडा ११ भिक्ख १२ सज्झाए॥ ६९॥
खेत्ताण अणुण्णवणा जेट्ठा मूलस्स सुद्धपडिवए।
आहिगरणो माणो मा मणसंतावा न होहिंति॥ ७१॥
जयणाए समणाणं अणुण्णवित्ता वसंति खेत्तवहिं।
वासावासट्ठाणं आसाढे सुद्धदसमीए॥ ९३॥
संविग्गबहुलकाले एसा मेरा पुराउ आसी य।
इयरबहुले उ संपइ पविसंति अणागयं चेव॥ ९८॥

॥ व्यवहारे दशमोद्देशके वर्षाप्रवेशादिविचारः॥

अष्टविधा गणिसंपद्

अट्ठविहा गणिसंपय एक्केक्का चउव्विहा उ बोद्धव्वा।
एसा खलु बत्तीसा ते पुण ठाणा इमे हुंति॥ २५२॥
आयार १ सुय २ सरीरे ३ वयणे ४ वायण ५ मई ६ पओगमई ७।
एएसु संपया खलु अट्ठमिगा ८ संगहपरिण्णा॥ २५३॥
आयारसंपयाए संजमधुवजोगजुत्तया पढमा १।
बिइय असंपग्गहिया २ अनिययवित्ती भवे तइया ३॥ २५५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

तत्तो य वुड्ढसीले आयारे संपया चउद्धेसा ४ ।
चरणं तु संजमो ऊ तट्ठियं निच्च तु उवओगो ॥ २५८ ६
बहुसुय १ परिजियसुत्ते २ विवित्तसुत्ते य होइ बोद्धव्वे ३ ।
घोसविसुद्धिकरे या ४ चउहा सुयसंपया होइ ॥ २५९ ॥
घोसा उदात्तमाई तेहिं विसुद्धं तु घोसपरिसुद्धं ।
एसा सुओवसंपय सरीरसंपयमओ वोच्छं ॥ २६२ ॥
आरोह-परीणाहो १ तह य अणुत्तप्पया सरीरंमि २ ।
पडिपुण्णमिंदिएहि य ३ थिरसंघयणो य बोद्धव्वो ४ ॥ २६३ ॥
तए लज्जाए घाऊ अलज्जणीओ अहीणसव्वंगो ।
होइ अणुत्तप्पेसो अविगलइंदी उ पडिपुण्णो ॥ २६५ ॥
वचनसंपत् यथा—
आदेज्ज १ महुरवयणे २ अनिस्सियवयणो ३ तहा असंदिद्धो ।
आदेज्ज गज्झवक्को अत्थवगाढं भवे महुरं ॥ २६७ ॥
वायणभेया चउरो विजिओद्दिसणा १ समुद्दिसणओ अ २ ।
परिनिव्वयनिवायाए ३ निज्जवणा चेव अत्थस्स ॥ २७० ॥
'विजिय'त्ति परीक्ष्येत्यर्थः ।
निज्जवओ अत्थस्स जो उ वियाणाइ अत्थसुत्तस्स ।
अत्थेण वि निव्वहई अत्थं पि कहेइ जं भणियं ॥ २७१ ॥
मइसंपय चउभेया उग्गह १ ईहा २ अवाय ३ धारणया ४ ।
उग्गहमइ छब्भेया तत्थ इमा होइ नायव्वा ॥ २७६ ॥
खिप्प १ बहु २ बहुविहं च ३ धुव ४ अणिस्सिय ५ तह य होइ
असंदिद्धं ६ । ओगिण्हइ एवीहा अवायमवि धारणा चेव ॥ २७७ ॥
एत्तो उ पओगमई चउव्विहा होइ आणुपुव्वीए ।
आय १ पुरिसं च २ खेत्तं ३ वत्थुं वि य पउंजए वायं ॥ २८३ ॥
बहुजणजोगं खेत्तं १ पेहे तह फलगपीढमाइण्णं २ ।
वासासु एए ३ दोण्णि वि काले य समाणए कालं ४ ॥ ॥
इति द्वात्रिंशत् स्थानानि । ततश्च—
जा भणिया बत्तीसा तं छोढूण विणयपडिवत्तिं ।
चउभेयं तो होइ छत्तीसा एस ठाणाणं ॥ ३०१ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

विनयश्चतुर्द्धा यथा—

आयारे १ सुतविणए २ विक्खेवण चेव होइ बोधव्वे ३ ।
दोसस्स य निग्घाए ४ विणए चउद्देस पडिवत्ती ॥ ३०३ ॥

आयारे विणओ खलु चउव्विहो होइ आणुपुव्वीए ।
संजमसामायारी १ तवे य २ गणविहरणा ३ चेव ॥ ३०४ ॥

सुत्तं १ अत्थं २ च तहा हिय ३ निस्सेसं ४ तहा पवाएइ ।
एसो चउव्विहो खलु सुयविणओ होइ नायव्वो ॥ ३१२ ॥

विक्खेवणा-विणओ जहा—

अदिट्ठं दिट्ठं खलु १ दिट्ठं साहम्मियत्तविणएण २ ।
चुयधम्म धम्मे ठावे ३ तस्सेव हियट्ठमब्भुट्ठे ४ ॥ ३१५ ॥

दोषनिर्घातविनयो यथा—

कुद्धस्स कोहविणयण १ दुट्ठस्स दोसविणयणं जं तु २ ।
कंखिए कंखछेओ ३ आयप्पणिहाण चउद्देसो ४ ॥ ३२३ ॥

इति अट्ठविहा गणिसंपया ॥

इति व्याख्यातं व्यवहारे दशमोद्देशके ॥

(तपोविचारः)

पक्खियपोसहिएसुं कारेइ तवं सयं कारविय ।
भिक्खायरिए तहा निजुंजइ परं सयं वावि ॥ १ ॥

अर्थस्तु पाक्षिकं पाक्षिकमेव, पोसहियं तु पोसहदिणं अट्ठमी-चउद्दसीलक्खणं । इत्यक्षराणि पाक्षिकविषये ।

दशविधं पायश्चित्तं यथा—

आलोयण १ पडिकमणे २ मीस ३ विवेगे ४ तहा विउस्सग्गे ५ ।
तव ६ छेय ७ मूल ८ अणवट्ठया य ९ पारंचिए १० चेव ॥ ३५२ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

दस जा अणुसज्जंति चउद्दसपुव्विए पढमसंघयणं ।
तेण परेणऽट्ठविह' जा तित्थं ताव होहिती (बोधव्वं) ॥ ३५३ ॥

एगाहं नाम अभत्तट्ठो तम्मि सेविए पंचराइंदियाणि देज्ज बहुतरं वा । पंचाहं वा सेवित्ता एगाहं देज्ज आयंबिलं वा पुरिमड्ढं वा एगासणं वा निव्वियं वा पोरिसिं वा नमोक्कारं वा, स। पुण वुड्ढी वा हाणी वा रागदोसवेरग्गभावणाईहिं पुव्वभणिएहिं भवति ।

॥ इति तपोविचारः ॥

न विणा तित्थं नियंट्ठेहिं नियंट्ठा व अतित्थया ।
छक्कायसंजमो जाव ताव अणुसज्जणा दोण्हं ॥ ३८९ ॥
तस्स य चरिमाहारो इट्ठो दायव्वो तण्हछेयट्ठा ।
सव्वस्स चरिमकाले अईव तण्हा समुप्पज्जे ॥ ४९६ ॥
सरीरमुज्झियं जेण को संगो तस्स भोयणे ? ।
समाहिसंधणाहेउं दिज्जए सो उ अंतए ॥ ५४४ ॥
कप्पस्स य निज्जुत्ति ववहारस्स य परमनिउणस्स ।
जो अत्थओ विजाणइ ववहारी सो अणुण्णाओ ॥ ६०७ ॥

कुलाइकज्जववहारे ओए जं भगवया भद्दबाहुणा सुत्तं निज्जूढं कप्पववहारा तं सुत्तं उच्चारित्ता तस्स अत्थं भाणिऊणं निद्दिसइ ।

वत्तणुवत्तपवत्तो बहुसो अणुवत्तिओ महाणेण ।
एसो उ जीयकप्पो पंचमओ होइ नायव्वो ॥ ६९३ ॥
वत्तो नामं एक्कसि अणुवत्तो जो पुणो बितियवारं ।
तइयवारं पवत्तो परिग्गहिओ महाणेणं ॥ ६९४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

चूर्णिस्तु वत्तं नाम एक्कसि तेण ववहरियं, अणुवत्तो दुण्णि वाराओ तेण ववहारेण ववहरियं, पवत्तो त्ति तिण्णि वारा तेण ववहारेण ववहरियं ।

'बहुसो बहुस्सुएहिं जो वत्तो न य निवारिओ होइ ।
वत्तणुवत्तपमाणं जीएण कयं हवइ एयं' ॥

जं जीयं सावज्जं न तेण जीएण होइ ववहारो ।
जं जीयमसावज्जं तेण उ जीएण ववहारो ॥ ७१५ ॥

जं जीयमसोहिकरं पासत्थपमत्तसंजयाईणं ।
जइ वि महाजणाइण्णं न तेण जीएण ववहारो ॥ ७२० ॥

जं जीयं सोहिकरं संविग्गपरायणेण दंतेणं ।
एगेण वि आइण्णं तेण उ जीएण ववहारो ॥ ७२१ ॥

॥ इति जीतविचार: ॥

मणपरमोहिपुलाए ३ आहारग ४ खवग ५ उवसमे ६ कप्पे ७ ।
संजमतिय ८ केवलि ९ सिज्झणा य १० जंबुम्मि वुच्छिण्णा ॥ ६९९ ॥

'खवग'त्ति । उवसामगसेढिदुगं, 'कप्प'त्ति । जिणकप्पो, 'संजमतियं' ति । सुद्धपरिहारियसंजमो सुहुमसंपरायसंजमो अहक्खायसंजमो ।

संघयण संठाणं च पढमगं च २ जो य पुव्वउवओगो ३ ।
एए तिण्णि वि अत्था चउदसपुव्विम्मि वोच्छिण्णा ॥ ७०० ॥

संघयणसंठाणाणि पढमाणि पुव्वउवओगो ।
एए तिण्ण वि (अत्था) भद्दबाहुम्मि वोच्छिण्णा ॥ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

व्यवहारसूत्रं (१०) यथा—

नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा ऊणट्ठवासजायं खुड्डयं वा खुड्डियं वा उवट्ठावित्तए।

भाष्यं तु—

ऊणट्ठए चरित्तं न चिट्ठए चालणीए उदयं व।
बालस्स य जे दोसा भणिया आरोवणाए सा ॥ ९५ ॥
॥ उद्देशके दशमे ॥
॥ इति व्यवहारविचाराः समाप्ताः ॥

पञ्चकल्पविचारा यथा—

भद्रबाहुना दशाकल्पव्यवहारनिशीथमहाकल्पसूत्राद्याः प्रवचनाभिहिता निज्जूढाः। जम्हा तेण भगवया आयारपकप्पो दसाकप्पववहारा य नवमपुव्वनीसंदभूया निज्जूढाः।

सामाइय छेओवट्ठावणं च परिहारसुद्धियं चेव।
तत्तो य सुहुमरागं अहखायं चेव बोधव्वं ॥ ७९ ॥
कस्सेयं चारित्तं नियंठ तह संजयाण ते कइहा ?।
पंच नियंठा पंचेव संजया हुंतिमे कमसो ॥ ८३ ॥
पुलए बउस कुसीले होइ नियंठे तहा सिणाए य।
एएसिं एक्केक्को पंचविहो होइ बोधव्वो ॥ ८४ ॥
नाणपुलाए तह दंसणे य चारित्तलिंग अहसुहुमे।
एसो पंचविहो खलु पुलगनियंठो मुणेयव्वो ॥ ८५ ॥
आभोगमणाभोगे तह संवुडमसंवुडे अहासुहुमे।
एसो पंचविहो ऊ बउसनियंठो मुणेयव्वो ॥ ८६ ॥
दुविहो होइ कुसीलो पडिसेवणया तहा कसाए य।
एक्केक्को पंचविहो परूवणा तस्सिमा होइ ॥ ८७ ॥
नाणपडिसेवणाए दंसणचरणे य लिंग अहसुहुमे।
पडिसेवणाकुसीलो पंचविहो एस नायव्वो ॥ ८८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

नाणकसायकुसीले दंसणचरणे य लिंग अहसुहुमे ।
एस कसायकुसीले पंचविहो ऊ मुणेयव्वो ॥ ८९ ॥
पढमगसमयनियंठे १ अपढम २ चरिमे य ३ अचरिमए चेव ४।
तत्तो अहासुहुमे पंचमए होइ नायव्वो ॥ ९० ॥
पंचविहसिणाए ऊ अच्छवि तह असबले अकम्मंसे ।
संसुद्धनाणदंसणधरे य होई चउत्थे उ ॥ ९१ ॥
अरहा जिणे उ केवलि अपरिस्साई य होइ पंचमए ।
एए पंच विगप्पा सिणायस्स तो हुंति नायव्वा ॥ ९२ ॥
पंचविह संजया वी सामाइयछेउवट्ठपरिहारे ।
सुहुमे य अहक्खाए एक्केक्के ते पुणो दुविहा ॥ ९३ ॥
इत्तरिए आवकही सामाइयसंजए भवे दुविहे ।
दुविहे य छेउवट्ठे सइयारे निरइयारे य ॥ ९४ ॥
परिहारविसुद्धीए निव्विसमाणे तहेव निव्विट्ठे ।
दुविहे य सुहुमरागे संकिस्संते विसुज्झंते ॥ ९५ ॥
अहखाओ वि य दुविहो छउमत्थो चेव केवली चेव ।
एसो उ संजओ खलु पंचविहो होइ नायव्वो ॥ ९६ ॥
सामाइयम्मि उ कए चाउज्जामं अणुत्तरं धम्मं ।
तिविहेण वि फासिंतो सामाइयसंजओ स खलु ॥ ९७ ॥
छेत्तूण उ परियागं पोराणं तो ठवेइ अप्पाणं ।
धम्मम्मि पंचजामे छेओवट्ठावणो स खलु ॥ ९८ ॥
परिहरइ जो विसुद्धं पंचज्जामं अणुत्तरं धम्मं ।
तिविहेण फासयंतो परिहारियसंजओ स खलु ॥ ९९ ॥
लोभमणुं वेयंतो जो खलु उवसामओ व खमओ वा ।
सो सुहुमसंपराओ अहक्खाया ऊणओ किंचि ॥ १०० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

उवसंते खीणंमि व जो खलु कम्मंमि मोहणिज्जंमि ।
छउमत्थो व जिणो वा अहखाओ संजओ स खलु॥ १०१ ॥
इति पुलाकादिविचारगाथाः ॥

आहारे उवहिंमि य उवस्सए तह य पस्सवणए य ।
सेज्जानिसेज्जठाणे दंडे चम्मे चिलिमिणी य ॥ ७२३ ॥
अवलेहणिया कण्णाण सोहणे दंतधोवणे चेव ।
पिप्पलगसूइनखाण छेयणे चेव सोलसमे ॥ ७२४ ॥
इति षोडशक उपधिः ॥

पुत्तं जणेज्ज कोई आयरिओ मज्झ अपरिवारो त्ति ।
तेसि सहाओ होहिइ पव्वावेउं तु सो कप्पे ॥ ७८२ ॥
एमेव य पच्छाया पुरिसं खेत्तं च कालमासज्ज ।
तिण्णादी जा सत्त तु परिजुण्णा पाउणेज्जाहि ॥ ८०० ॥
पुरिसो असहू कालो सिसिरो खेत्तं व उत्तरपहाई ।
गिम्हे वि पाउणिज्जातारिसयं देसमासज्ज ॥ ८०१ ॥
इति प्रावरणविचारः पञ्चकल्पे ॥

कप्पा दुब्बलसंघयण णं सीयपरीसहवारणनिमित्तं ।
हिरिपच्छायणनिमित्तं वत्थग्गहणं अणुण्णायं ॥ ॥

अज्जाणं पुण पंच वसहीओ घेत्तव्वाओ। कम्हा? जम्हा तासिं दुमासो कप्पो, नवग्गहणं तु सेसाणं संजयाणं वुड्ढावासे अइक्कंते उउवद्धे मासे अइए वासावासे चउम्मासे अइए ओग्गहो तिविहो न भवइ । निक्कारणियाण सचित्ताचित्तमीसओ। अह पुण विद्धेसु आलंबणेसु अइत्थिए वि काले अच्छंति ताहे ओग्गहो भवइ। काणि पुण ताणि आलंबणाणि? नाणदंसणचारित्ताणि जाव तं कज्जं न वोच्छिज्जइ ताव ओग्गहो न लब्भइ । वोच्छिण्णे तम्मि कज्जे असिवासु वा विरहिए नत्थि ओग्गहो । इति अवग्रहविचारः ।

लीहालेट्टुगमाई जो य पढंतो न करइ वक्खेवं ।
अव्वक्खित्तो एसो आउत्तो अणण्णमणसो उ ॥ १२४६ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

दसठाणठिओ कप्पो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स ।
कयरे दस ठाणा ऊ ? भण्णइ आचेलगाइ इमे ॥ १२७० ॥

आचेलुकुद्देसिय २ सेज्जायर ३ रायपिंड ४ किइकम्मे ५ ।
वय ६ जेट्ठ ७ पडिक्कमणे ८ मासं ९ पज्जोसवणकप्पे १० ॥ १२७१ ॥

एएहिं दसहि ठिओ ठियकप्पो होइ उ मुणेयव्वो । (दारं) ।
चउहिं ठिओ छहिं अठिओ अठियकप्पो पुण इमेहि ॥ १२७२ ॥

सेज्जायरपिंडे या १ किइकम्मे २ चेव चाउजामे य ३ ।
रायणियपुरिसजेट्ठो ४ चउसु वि एएसु होंति ठियो ॥ १२७३ ॥

आचेलुकुद्देसिय २ निवपिंडे चेव ३ तह पडिक्कमणे ४ ।
मासं ५ पज्जोसवणा ६ छप्पेए अणवट्ठिया कप्पा ॥ १२७४ ॥

दुविहा होंति अचेला संताचेला असंतचेला य ।
तित्थयर असंतचेला संताचेला भवे सेसा ॥ १२७५ ॥

एत्तो सावज्जाइं चेलाइं संजमोवघाईणि ।
वज्जित्ता विहरंतो होइ अचेलो अपरिजुण्णो ॥ १२८१ ॥

निग्गहियरागदोसो अणवज्जेहिं अहापरित्तेहिं ।
अप्पेहि वि विहरंतो होइ अचेलो उ परिजुण्णो ॥ १२८२ ॥

इति स्थितास्थित-कल्पविचार: ॥

संखेत्ता विवपवहे जह वड्ढइ वित्थरेण वच्चंती ।
उदहिंतेण वरनई तह तह सीलगुणेहि वड्ढाहि ॥ १४०६ ॥

सुस्सूसगा गुरूणं चेइयभत्ता य विणयजुत्ता य ।
सज्झाए आउत्ता साहूण य वच्छला निच्चं ॥ १४०९ ॥

एस अखंडियसीलो बहुस्सुओ य अपरोवतावी य ।
चरणगुणसुट्ठिओ त्ति य धण्णा णयरीइ घोसणयं ॥ १४१० ॥

इति अनुशास्ति: ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

ते भगवंतो रागदोसनिग्गहपरा मा य पडिमाए वा पाउयाण वा रागद्दोसा न भवंति।

इति प्रावरणविचारः॥

रसपरिच्चागं न करेइ निच्चमेव विगइपडिबद्धो कायकिलेसं न करेइ ठाणासणमोणाईणि पायच्छित्तं विसंभोगो वा।

इति रसत्यागविचारः॥

चोएइ चेइआणं खेत्तहिरण्णाइ गामगावाई।
लग्गंतस्स व जइणो तिगरणसोही कहं नु भवे?॥ १५६९॥
भण्णइ एत्थ विभासा जो एयाई सयं विमग्गेज्जा।
न हु तस्स होइ सोही अह कोइ हरेज्ज एयाइं॥ १५७०॥
तत्थ करित उवेहं जा सा भणिया तु तिगरणविसोही।
सा य न होइ अभत्ती य तस्स तम्हा निवारेज्जा॥ १५७१॥

उपेक्षां कुर्वाणे त्रिकरणशुद्धिर्न भवति अभक्तिश्च कृता स्यात् तस्मान्निवारयेदित्यर्थो ज्ञेयः।

सव्वत्थामेण तहिं संघेणं होइ लग्गियव्वं तु।
सचरित्तऽचरित्ताण उ सव्वेसिं एय कज्जं तु॥ १५७२॥

चूर्णिस्तु—रुप्पहिरण्णसुवण्णाइ साहुणा आयट्ठिएण तवनियम-जुत्तेण चेइयनिमित्तं रुप्पहिरण्णसुवण्णं अपुव्वं उप्पाएइ, तस्स नाणदरिसणचरित्तमणोकरणाइया तिगरणसोही न भवइ। जया पुण पुव्वपवत्ताणि खेत्तहिरण्ण-दुपयचउप्पयाई जइ भंड वा चेइआणं लिंगत्था वा चेइयदव्वं राउलबलेण खायंति, रायभडाइ वा अच्छि-देज्जा, तया तवनियमसंपउत्तो वि साहू जइ न मोएइ वावारं वा न करेइ, तया तस्स नाणाइसुद्धी न भवइ, आसायणा य भवइ। एवं समुप्पन्ने कज्जे रायाईणं पुव्वं अणुसट्ठी करेइ, धम्मो वा से कहिज्जइ, अणिच्छंतस्स अंतद्धाणेण वा अवहरंति।

इति देवद्रव्यविचारः पञ्चकल्पे॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

चरित्तमणोकरणाइया तिगरणसोही न भवइ। जया पुण पुव्वपवत्ताणि खेत्तहिरण्ण-दुपयचउप्पयाई जइ भंडं वा चेइआणं लिंगत्था वा चेइयदव्वं राउलबलेण खायंति, रायभडाइ वा अच्छिंदेज्जा, तया तवनियमसंपउत्तो वि साहू जइ न मोएइ वावारं वा न करेइ, तया तस्स नाणाइ सुद्धी न भवइ, आसायणा य भवइ। एवं समुप्पन्ने कज्जे रायाईणं पुव्वं अणुसट्ठी करेइ, धम्मो वा से कहिज्जई अणिच्छंतस्स अंतद्धाणेण वा अवहरंति।

इति देवद्रव्यविचारः पञ्चकल्पे ॥

तत्थेगपडिग्गहए भत्तं लेवाडं पि गेण्हंति।
एगत्थ दवं मत्तग दोण्ह पी रित्तगपकप्पो ॥ १५९३ ॥

मात्रकं द्वाभ्यामपि रिक्तं कार्यं इत्यर्थः।

चूर्णिस्तु — दोण्ह वि हिंडंताणं एगपडिग्गहे कूरं, एगपडिग्गहे पाणयं मत्तया रित्तया।

कालपमाणाइक्कमे कुज्जा पाउरणगं अकाले वि। दारं।
वसई कालाईयं असिवादणुवासणं एयं ॥ १६२५ ॥

इति प्रावरणविचारः ॥

गब्भाणं आयाणं करेइ तह साडणं च गब्भाणं।
अभिजोगवसीकरणे विज्जाजोगाइहिं कुणइ ॥ १६५४ ॥
विच्छिगमच्छिगभमरे मंडुक्के मच्छए तहा पक्खी।
संमुच्छा वेमाई जो जोणीपाहुडेणं च ॥ १६५५ ॥
एमाइ अकरणिज्जं निक्कारणे जो करेइ ऊ भिक्खू।
सव्वो सो उक्कप्पो। दारं। एतोऽकप्पं तु वोच्छामि। इति ॥ १६५७।
गच्छो सकारणो त्ती गिलाण वुड्ढे य बालमसहाई।
तेसट्ठा अइरेगं घेप्पइ मा होज्ज दुलभं ति ॥ १८८२ ॥
जस्सेव अभिमुहत्ती जं चेव य काउ विहरए पुरओ।
आयरिय उवज्झाया तस्सेव य तं तु आलोए ॥ १९३० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

उस्सग्गेण विहारो संथरमाणोण नवसु खेत्तेसु ।
तो सव्वुग्घादुवही न चि ं हे आण दग्ग ट्ठे ॥ २००९ ॥
तेषु एव उत्पादयेत् उपधि नव सु क्षेत्रेषु अष्टौ ऋतुबद्धाः वर्षाकालश्चेत्यर्थः ।

दुलभंमि वत्थपाए ऊणहिएसु वि नवसु गच्छेज्जा ।
एमेव विहारो वि हु खेत्ताणऽसई मुणेयव्वो ॥ २०११ ॥
एगत्थ उ गामाइसु जहियं संथरंति तहि अच्छे ।
सव्वेसिं तहिं उग्गहो साहारण होइ जह नगरे ॥ २४५७ ॥
जइ पुण वहिया हाणी तहिं वड्ढि गुणाण तत्थ अच्छंति ।
के पुण गुणाइ भणिया भण्णइ नाणाइया हुंति ॥ २४७३ ॥
कालाईए दोसा दुव्वक्खओ होइ अच्छमाणाणं ।
तम्हा उ न चिट्ठेज्जा अइरित्तं दुविहकालम्मि ॥ २४७४ ॥
मा होज्ज चरणभेओ पुण्णाइयंमि संवसंताणं ।
अइचिरसंवासेणं सिणेहमाईहि दोसेहिं ॥ २४७९ ॥

इति कालातिक्रमवसनविचारः ॥

अइहिमदेसे य तहा कारणियगयाण सिसिरकालम्मि ।
परिभुंजंताण य को विवाद चरणे अणुवघाओ ॥ २४९९ ॥

इति प्रावरणविचारः ॥

संभुजणा विरुद्धा उवग्गहं कुणइ नाणचरणाणं ।
संभुंजणा असुद्धा चरित्तभेयं वियाणाहि ॥ २५०६ ॥

इति संभोगविचारः ॥

अहलंदियाण गच्छे अप्पडिबद्धाण जह जिणाणं तु ।
नवरं कालविसेसो उउवासे पणग चउमासो ॥ २५५८ ॥

चूर्णिस्तु-नवरि काले छब्भागे गामो कीरइ । एगेगे भागे पंच दिवसं भिक्खं हिंडंति तत्थेव वसंति । वासासु एगत्थ चाउम्मासो इत्यर्थः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

गच्छे पडिबद्धाणं अहलंदीणं तु अह पुण विसेसो ।
उग्गहो जो तेसि तू सो आयरियाण आभवइ ॥ २५५९ ॥
एगवसहीए पणगं छव्वीहीओ व गाम कुव्वंति ।
दिवसे दिवसे अण्णं अडंति वीहीय नियमेणं ॥ २५६० ॥
परिहारविसुद्धीणं जहेव जिणकप्पियाण नवरं तु ।
आयंबिलं तु भत्तं गेण्हंती वासकप्पं च ॥ २५६१ ॥

चूर्णिर्यथा–परिहारियाण वि जहा जिणाणं नवरं आयंबिलेण मासो सो सव्वो वि होइ ति ।

जिणकप्पि-अहालंदी-परिहारविसुद्धियाण जिणकप्पो ।
थेराणं अज्जाण य बोधव्वो थेरकप्पो उ ॥ २५६४ ॥

इति अहालंदगादिविचार: ॥

इति पञ्चकल्पविचारा: समाप्ता : ॥

दशाश्रुतस्कन्धविचारा यथा—

अत्थेण वा विचित्तं सुयं, अहवा ससमयपरसमयेहि उस्सग्गाववाएहि वा, उक्तं च — 'चित्रं बह्वर्थयुक्तम्' इति स्तुतियुगलसूचा चतुर्थ-दशायाम् ।

'पक्खियपोसहिएसु' इति । चूर्णिर्यथा–पक्खियं पक्खियमेव, पक्खिए पोसहो पक्खियपोसहो चाउद्दसिअट्ठमीसु य । इति पाक्षिकविचारः पञ्चमदशायाम् । उद्दिट्ठा–अमावासा पञ्चमदशायाम् ।

तत्थ णं जे से पावाए मज्झिमाए हत्थिपालस्स रज्जुयसभाए अपच्छिमं अंतरावासं वासावासं उवागए, तस्स णं अंतरावासस्स जे से वासाणं चउत्थे मासे सत्तमे पक्खे कत्तियबहुले, तस्स णं कत्तियबहुलस्स पण्णरसी पक्खेणं जा सा चरिमा रयणी, तं रयणिं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

च णं समणे भयवं महावीरे कालगए वीइक्कंते समुज्जाए छिण्ण-जाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुए' इत्यादि। तथा, जं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सव्वदुक्खपहीणे सा णं रयणी बहूहिं देवेहिं देवीहि य ओवयमाणेहि य उप्पयमाणेहि य उज्जोविया आवि होत्था। तथा जं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे कालगए तं रयणिं जेट्ठस्स अंतेवासिस्स गोयमस्स इंदभूइस्स अणगारस्स अंतेवासिस्स नायए पेज्जबंधणे वोच्छिण्णे अणंते अणुत्तरे जाव समुप्पण्णे। जं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे कालगए तं रयणिं नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारस गणरायाणो अमावासाए पाराभोए पोसहोपवासं पट्ठविंसु। गए से भावुज्जोए दव्वुज्जोयं करिस्सामो। जं रयणिं च णं समणे भयवं महावीरे कालगए तं रयणिं च णं खुद्दाए भासरासी नाम महग्गहे दोवाससहस्सठिई भगवओ जम्मनक्खत्तं संकंते। जप्पभिइं च णं से खुद्दाए भासरासी महग्गहे दोवाससहस्सठिई समणस्स भगवओ महावीरस्स जम्मनक्खत्तं संकंते तप्पभिइं च णं समणाणं निग्गंथाणं निग्गंथीण य उइए पूयासक्कारे नो पवत्तइ। जया णं से खुद्दाए भासरासी महग्गहे दोवाससहस्सठिई भगवओ जम्मनक्खत्ताओ वीइक्कंते भविस्सइ तया णं समणाणं निग्गंथाणं उइए पूयासक्कारे पवत्तिस्सइ। जं रयणिं च णं समणे भयवं महावीरे कालगए जाव तं रयणिं कुंथू अणुद्धरी नामं समुप्पन्ना जा ठिया अचलमाणा छउमत्थाणं निग्गंथाण वा निग्गंथीण नो चक्खुफासं हव्वमागच्छइ। जा अठिया चलमाणा छउमत्थाणं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चक्खुफासं हव्वमागच्छइ, जं पासित्ता बहूहिं निग्गंथेहि य निग्गंथीहि य भत्ताइं पच्चक्खायाइं, किमाहु भंते! अज्जप्पभिइं दुराराहए सामण्णे भविस्सइ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

चूर्णौ तु-तम्मि नायए पेज्जबंधणं नेहो तं वोच्छिण्णं । गोयमो भगवया पट्ठविओ अमुगग्गामे अमुगं बोहेहि । तहिं गओ वियालो य जाओ तत्थेव वुच्छो नवरि पेच्छइ रत्तिं देवसंनिवायं उवउत्तो नाथं जहा भयवं कालगओ । ताहे चिंतेइ-अहो ! भयवं निप्पिवासो कहं वा वीयरागाण नेहो भवइ नेहरागेण य जीवा संसारं अडंति । एत्थंतरे नाणं उप्पन्नं । बारस वासाणि केवली विहरइ जहेव भयवं । नवरं अइसयरहिओ धम्मकहणा परिवारो य तहेव पच्छा अज्जसुहम्मस्स निसिरइ गणं दीहाउ त्ति काउं, पच्छा अज्जसुहम्मस्स केवलनाणं समुप्पन्नं । सो वि अट्ठवासे विहरित्ता केवलिपरियाएण अज्जजंबुनामस्स गणं दाउं सिद्धिं गओ इति ।

वीरस्स एक्कारस गणहरा नव गणा, दोण्हं दोण्हं पच्छिमाण एक्को गणो, जीवंते चेव भट्टारए नव गणहरेहिं अज्जसुहम्मस्स गणो निक्खित्तो दीहाउगोत्ति नाउं ।

इमीसे ओसप्पिणीए दूसमसुसमाए समाए बहुवीइक्कंताए तिहिं वासेहिं अद्धनवमेहि य मासेहिं सेसेहिं पावाए मज्झिमाए हत्थिपालरण्णो रज्जुगसभाए एगे अबीए छट्ठेण भत्तेण अपाणएणं साइणा नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं पच्चूसकालसमयंसि संपलियंकनिसण्णे पणपण्णं अज्झयणाइं कल्लाणफलविवागाइं पणपण्णं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं छत्तीसं च अपुट्ठवागरणाइं वागरित्ता पहाणं नाम अज्झयणं विभावेमाणे विभावेमाणे कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे इति ।

अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं विसाहनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं एगं देवदूसमादाय तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए पासेणं अरहा इति 'सोपधित्वं जिनानाम्' ।

सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ २ छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं चित्ताहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं एगं देवदूसं गहाय एगेणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पुरिससहस्सेणं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए अरहा णं अरिट्ठनेमी इति 'सोपधित्वं जिनानाम्'।

तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवओ महावीरस्स एक्कारस वि गणहरा रायगिहे नगरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं कालगया। जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति सव्वे वि णं एत्ता अज्जसुहम्मस्स आवच्चेज्जा अवसेसा गणहरा निरवच्चा परिनिव्वुया। समणे भयवं महावीरे कासवगोत्तेणं भगवओ महावीरस्स कासवगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जसुहम्मे अग्गिवेसायणे गोत्तेणं। थेरस्स अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी थेरे अज्जजंबुनामे कासवगोत्तेणं। अज्जजंबुनामस्स कासवगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जपभवे कच्चायणगोत्ते णं। थेरस्स णं अज्जपभवस्स अंतेवासी थेरे अज्जसेज्जंभवे मणगपिया वच्छसगोत्तेणं। थेरस्स णं अज्जसेज्जंभवस्स अंतेवासी थेरे अज्जजसभद्दे तुंगियायणगोत्तेणं। थेरस्स णं अज्जजसभद्दस्स अंतेवासी दुवे थेरे अज्जभद्दबाहू पाईणसगोत्ते थेरे अज्जसंभूयविजए माढरसगोत्तेणं। थेरस्स णं अज्जसंभूयविजयस्स अंतेवासी थेरे अज्जथूलभद्दे गोयमगोत्ते णं। थेरस्स णं अज्जथूलभद्दस्स दुवे थेरे, थेरे अज्जमहागिरी एलावच्चसगोत्ते णं अज्जसुहत्थी वासिट्ठसगोत्ते णं इत्यावली।

भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था। से केणट्ठे णं भंते! एवं वुच्चइ० जेट्ठे इंदभूई गोयमगोत्ते णं पंच समणसयाइं वाएइ, मज्झिमे अग्गिभूई गोयमगोत्ते णं पंच समणसयाइं वाएइ। थेरे वाउभूई कणिट्ठे पंच समणसयाइं वाएइ, त्रयोऽपि सोदराः इत्यर्थशेषः। थेरे अज्जवियत्ते भारद्दाए गोत्ते णं पंच समणसयाइं वाएइ। थेरे अज्जसुहम्मे अग्गिवेसायणे गोत्ते णं पंच समणसयाइं वाएइ, थेरे मंडियपुत्ते वासिट्ठे गोत्ते णं अद्धुट्ठाइं समणसयाइं वाएइ। थेरे मोरियपुत्ते कासवे गोत्ते णं अद्धुट्ठाइं समणसयाइं वाएइ। थेरे अकंपिए गोयमे गोत्तेणं थेरे अयलभाया हारियणे गोत्ते णं एए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

दोण्णिवि थेरा तिन्नि तिन्नि समणसयाइं वायंति, थेरे अज्जमेइज्जे- थेरे अज्जपभासे एए दुण्णि वि थेरा कोडिन्नागोत्तेणं तिन्नि २ समणसयाइं वायंति । से एएणट्ठेणं एवं वुच्चइ समणस्स भगवओ महावीरस्स नवगणा एक्कारस गणहरा होत्था इति गणविचारः ।

थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा सुट्ठियसुप्पडिबुद्धा कोडियकाकंदगा वग्घावच्चसगोत्ता । थेराणं सुट्ठिय- सुप्पडिबुद्धाणं कोडियकाकंदगाणं वग्घावच्चसगोत्ताणं अंतेवासी थेरे अज्जइंदद्दिन्ने कोसिय गोत्तेणं । थेरस्स णं अज्जइंददिन्नस्स कोसियस- गोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जदिन्ने गोयमगोत्तेणं । थेरस्स णं अज्ज- दिन्नस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जसीहगिरी । अज्जसीहगिरिस्स अंतेवासी थेरे अज्जवइरे, अज्जवइरस्स अंतेवासी चत्तारि थेरा-थेरे अज्जनाइले, थेरे अज्जपोमिले, थेरे अज्जजयंते, थेरे अज्जतावसे । थेराओ णं अज्जनाइलाओ नाइलसाहा निग्गया । थेराओ णं अज्जपोमिलाओ पोमिलसाहा निग्गया । थेराओ णं अज्जजयंताओ जयंतीसाहा निग्गया । थेराओ णं अज्जतावासाओ तावसीसाहा निग्गया ।

इति शाखास्वरूपम् ।

भूमीए अणंतरे संथारए कए अवेहासे पिवीलिगाइसत्तवहो दीहजाईओ वा डंसेज्ज तम्हा उच्चो कायव्वो । वर्षासु संस्तारक इति शेषः ।

जो परं पज्जोसवणाओ अहिगरणं वयइ सो अकप्पो अमेरा निज्जूहियव्वो गणाओ तंबोलपत्रनायवत् ।

नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा गोलोममेत्ता वि केसा तं रयणिं उवाइणावेत्तए । अष्टमदशायामेते ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

दशायां तु-तएणं सेणिए राजा जाव सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ पायपीढाओ पच्चोरुहइ २ जाव करयलसिरसावत्तं दसणहमत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-नमोत्थु णं अरहंताणं जाव सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आइगरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स ।

तए णं सा चेल्लणादेवी जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ समणं भगवं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ । सेणियरायं पुरओ कट्टु ठिया चेव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ।

॥ इति दशाश्रुतस्कन्ध विचाराः समर्थिताः ॥

स्नातो लिप्तश्च गन्धी धृतसदशयुगो विद्यया क्लृप्तरक्षो
मुद्रावान् दिक्पतिभ्यः प्रचुरतरबलि संयतः सम्प्रदाय ।
नन्द्यावर्त्तस्य पूजां तदनु वितनुते देवताकङ्कणार्चा
पञ्चाङ्गो मन्त्रपाठो मलयजतिलकः पुष्पमालाधिरोपः ॥ १ ॥
सप्तधान्यकरत्नाम्बु पञ्चधात्वंऽगघर्षणम् ।
मृत्कषायाम्बुमाङ्गल्यमूलीवाष्णकमज्जनम् ॥ २ ॥
प्रतिष्ठादेवताह्वानं स्नानं जातिफलादिभिः ।
स्नानं सर्वौषधि स्नानी वासचन्दनकुङ्कुमैः ॥ ३ ॥
कर्पूरस्नानमुद्रासुरभिकरयुगालेप्यगोत्रानुलेपः
पुष्पारोपः सपुष्पः प्रतिसरकरणं वासनिक्षेपणं च ।
वेदीन्यासोऽथ कृत्यः सदशयुगधृतासर्पिरापूर्णदीपाः
देयाः सार्द्रा यवारास्तदनु बलिसरावाणि पूर्णा बलिश्च ॥ ४ ॥
देयो दिग्देवताभ्यो बलिरुदकयुतो भूतसार्थे सधूपः
वस्त्रच्छादस्तदन्तेऽञ्जलिभिरथ तथा सप्तशस्याभिषेकः ।
पुष्पारोपो विधेयस्तदनु पुनरिहारत्रिकं वन्दनं स्या-
च्चैत्यानां चाधिवास्य प्रतिकृतिविषयः स्यात्तथोत्सर्गमार्गः ॥ ५ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

श्रुतदेव्यादि देवीनां कायोत्सर्गान् विधाय च ।
ततः पातालमित्यादि पठन् पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥ ६ ॥
अथ अधिवासना-विधिः ।
कृत्वा शान्तिबलिं प्रणम्य च जिनान् धूपं क्षिपेदादरा-
दांसादस्तदनन्तरं चलजिने दर्भाद्यधः स्थापयेत् ।
अन्यस्यास्तु कुलालचक्रमृदा युक्तं च रत्नासनं
स्थाप्यं मन्त्रयुतं स्थिरीकृतिकृते मन्त्रं न्यसेदादरात् ॥ ७ ॥
सौवीरमधुसर्पिर्भी रूप्यकच्चोलकस्थितैः ।
नेत्रोन्मीलनं कुर्यात् सूरिः स्वर्णशलाकया ॥ ८ ॥
घृतपूरितकच्चोलकदधिभाण्डादर्शदर्शनं चैव ।
सौभाग्यमन्त्रपवनं मुद्रासौभाग्यपदपूर्वा ॥ ९ ॥
कर्पूरचन्दनसमालभनं प्रतिष्ठा
मन्त्राभिमन्त्रितमथापि च पुष्परोपः ।
वासान् क्षिपेत् तदनु धूपविधिं विदध्यान्
मन्त्रं न्यसेत् पुनरियं खलु चक्रमुद्रा ॥ १० ॥
धूपोद्ग्राहणबहुबलिचन्दनतिलका भवन्ति कर्त्तव्याः ।
दध्यक्षतावमिणने कार्यं चतुरादिभिः स्त्रीभिः ॥ ११ ॥
कर्त्तव्यो लवणावतारणविधिः पश्चात्तथाऽऽरत्रिकं
भूतेभ्यः प्रचुरो बलिः पुनरधो रत्नासनस्थापनम् ।
अस्मिंश्चोपविशन्तु तीर्थपतयो जातप्रतिष्ठां पठन्
पुष्पाणामिह चाञ्जलिं प्रतिक्षिपेदेवं पठंश्चादरात् ॥ १२ ॥
इदं पुष्पं गृह्णन्तु जिना इदं पुष्पं गृह्णन्तु जिना इति ।
श्रुतदेव्यादिदेवीनां कायोत्सर्गान् कुर्यात् ।
जह सिद्धाणं पइट्ठा तिलोयचूडामणिम्मि सिद्धिपए ।
आचंदसूरियं तह होउ इमा सुपइट्ठ त्ति ॥

॥ अयं प्रतिष्ठाविधिः समर्थितः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

'जे छेए सागारियं न सेवइ, कट्टु एवमवि आणओ विइया मंदस्स बालया' इति । वृत्तिस्तु-रहसि मैथुनं कृत्वा पुनर्गुर्वादिना पृष्टः सन्नपलपति, तस्य चैवमकार्यमपलपतोऽविज्ञापयतो वा द्वितीया मन्दस्य-अबुद्धिमतः एकमकार्यासेवनमियं बालता-अज्ञता, द्वितीया तदपह्नवनं मृषावादः । आचारपञ्चमाध्ययनप्रथमोद्देशके ।

जाणिय तं टणपण हुइ विसुत्तरुसउ मैथुनि पावइया मूलु । आवापरायइ आरवणजा तह उववासु । परदारि अवधूतियह जाता एकवार दस उववासा । कुलवहु परदारियह सउ उववासु । जाणिउ लोकि विसुत्तरुसउ । प्रधानकुलपुत्रीराजपुत्रीमहत्तमपुत्रीसार्थवाहश्रेष्ठिपुत्री लोकि अजाणियउं असिउ सउ उववासह । लोकि टणपण उहूयउ मूलु । परिग्गहि नवहि ठाहेहि जाणंतउ अतिक्रमु करइ नवहि ठापहि उव० १० । सव्वो विभंजइ उव० १२० । रात्रिभोजन असणखाइम जाणतउ निक्कारणि करइ परिभोगु उव० ३ पावईया मुक्कसंनिहि छट्टु । आर्द्रसंनिधि कांठउ दोरउ मुहतीत्रेपणइ पात्राबंधि पात्रइ खरडियइ वासियइ उव० १ । सोलहि पोरिसिहि उववासु । अट्ठहि पुरिमड्ढेहि उव० १ । इति प्रायश्चित्तं ।

(सम्प्रदायलिखितमिदम्)

पञ्चवस्तुकस्य यथा —

चिइवंदण १ रयहरणं २ अट्टा ३ सामाइयस्स उस्सग्गो ४ ।
सामाइयतियकड्ढण ५ पयाहिणं चेव तिक्खुत्तो ॥ १२५ ॥

मुहपोत्तिय १ रयहरणं २ दोण्णि निसेज्जाउ ४ चोलपट्टो य ५ ।
संथारुत्तरपट्टो ७ तिण्णि य कप्पा मुणेयव्वा १० ॥

केई भणंति एक्कारसमो दंडओ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

अप्पडिलेहिय दोसा आणाई अविहिणा वि ते चेव ।
तम्हा उ सिक्खियव्वा पडिलेहा सेवियव्वा य ॥ २६२ ॥

'द्रव्यपरिच्छेदपूर्वक' मिति द्रव्यं-वासाः । मा हासिष्ट 'ओहाक् त्यागे' मा योगे सिचि अद्यतन्यां प्रयोगः । 'गलप्रव्रजिताऽविधिपरिपाल-नादिना' इति । मिष्टान्नादिना गलप्रव्रजितस्य अविधिपालनादिना । निर्यूहकः-गवाक्षः 'पहवंते' प्रभवति विद्यमाने । 'तानऽन्विषतो' तानऽन्तान् । किकिसिघाणं-जीवविशेषः । 'अम्हं पुण नत्थि' एतन्मतमिति शेषः । भाणकोणाः-पात्रबन्धकोणाः । 'ताहे उवओगं वच्चइ पंचहि' इति । पञ्चभिः-पूर्वोक्तैः स्थानैः । 'मुहणंतएणं अंतो तिण्णि वारे पमज्जइ' त्ति । मुहतणंपणं-केसरियाए । तिण्णि वारे-त्रिगुणान् । धारणं पात्रस्येति आत्मप्रत्यासन्नीकरणं । 'रयत्ताणं च विंटणयं संवलित्ता धारिज्जइ' आत्मसमीपे ध्रियते । 'न निक्खिप्पइ' त्ति न निक्खिप्प दूरे व्यवस्थाप्यते । ऋतुबद्धे काले । 'वर्षासु पुनः अबन्धन उपधेः स्थापना च पात्रस्य' दूरे विराधनादि तत्र प्राप्नोति निक्षिप्तेन दूरे व्यवस्थापितेन । बाहिरकप्पं-कम्बलम् ।

'जस्स य जोगो' त्ति जई न भणंति न कप्पई तओ अण्णं ।
जोग्गं पि वत्थमाई उवग्गहकरं पि गच्छंमि ॥ २९५ ॥

कालोचितानुकूलानपायित्वात् यस्य च योग इति । यस्य च वस्त्रादेर्योगः- प्रवचनोक्तेन विधिना सम्बन्धः-प्राप्तलक्षणः ।

हिंडंति तओ पच्छा अमुच्छिया एसणाए उवउत्ता ।
दव्वादभिग्गहजुया मोक्खट्ठा सव्वभावेणं ॥ २९७ ॥

'आवश्यिक्या यस्य च योग' इति भणित्वा ततो निर्गच्छन्ति । वसतिप्रवेशे ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पायपमज्जण १ निसीहिय २ अंजलि ३ दंडुवहिमोक्खण ४ विहिणा ।
सोहिं च करिंति तओ उवउत्ता जायसंवेगा ॥ ३११ ॥

एवं च पडुप्पण्णे पविसओ य तिण्णि उ निसीहिया हुंति ।
अग्गद्दारे मज्झे पवेसणे पायऽसागरिए ॥ ३१२ ॥

पलुगो-उंबर । तोडाओ-ठाणाओ । यतेरेकस्मिन् पात्रे भक्तं द्वितीये पात्रे जलं ग्राह्यं, तृतीये तु मात्रके संसक्तभक्तादिशुद्धिः । ओलंबयं-मात्रकं । ओगाहणयं-पात्रं । प्रतिसेवना-लघवः प्रथमं आलोच्यन्ते, ततो गुरव इति लक्षणा । पुनरकरणरूपा विकटना तु आलोचना । कायिकादीर्यापथिका-योगोत्सर्गादिका । अकारकदोषः अपरिणतिदोषः अप्रावृतोपघात इति पश्चाद् भागः अप्रावृतो यत इति पृष्ठावलोकनं कार्यम् ।

'चउरंगुलमप्पत्तं जाणुं हेट्ठाऽछिन्नोवरिं नाभिं ।
उभओ कोप्परधरियं करेज्ज पट्टं व पडलं वा' ॥ ३१८ ॥

भिक्षाकायोत्सर्गे नमस्कारः । 'जइ मे अणुग्गहं कुज्जे' त्यादि गाथा वा ।

'इच्छेज्ज न इच्छेज्ज व तह वि य पयओ निमंतए साहू ।
परिणामविसुद्धीए निज्जरा होअगहिए वि' ॥ ३४६ ॥

लाटपञ्जिका-वचनमात्रम् ।

धम्मं कहण्ण कुज्जं संजमगाहं च नियमओ सव्वे ।
पइहमेत्तं वऽण्णं सिद्धं जं जंमि तित्थंमि ॥ ३५२ ॥

भावाऽऽसण्णा-असहत्वं । 'ओगाहित्ता पाणयं गिण्हइ' त्ति । मात्रकम् अवगृह्य । महति वैक्रिये इन्द्रिये-लिङ्गलक्षणे । तत्रान्यत्र वा पुञ्छेत्-अधः स्थानिका निर्लेपनं कुर्यात् । मत्तगं विसोहावणनिमित्तं लूहेवं इति शेषः । तृतीयपौरूष्यां 'घ्राणाञ्चासि' नासिकायां स्युरित्यर्थः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

कालो गोयरचरिया थंडिल्ला वत्थपत्तपडिलेहा ।

संभरऊ सो साहू जस्स व जं किंचि णुवउत्तं ॥ ५४४ ॥

यत् किञ्चिदनुपयुक्तं तत् स्मरन्तु इत्यर्थः । विगिंचणया-पारिट्ठावणिया । उपस्थापना गाथा यथा-

अहिगय णाउं सम्मं वामगपासंमि ठवय तिगेक्कं ।

पायाहिणं निवेयण गुरुगुणादिसि दुविह तिविहा वा ॥ ६६७ ॥

अभिगतं ज्ञात्वा शिष्यं कायोत्सर्गं कुर्वन्ति गुरवः वामपार्श्वे शिष्यं स्थापयित्वा त्रीन् वारान् एकैकं पठन्ति, पुनः प्रादक्षिण्यं नमस्कारपाठेन, निवेदनं-युष्माभिरपि महाव्रतान्यारोपितानि इत्यादिलक्षणं, गुरुगुणैः वर्द्धस्वेति सूरिवचः, दिक् द्विधा त्रिधा वा । अन्यकरणापपत्तेः-पार्श्वस्थानिमित्तकरणोपपत्तेः ॥

'सारणमाइविउत्तं गच्छं पि हु गुणगणेण परिहीणं ।

परिचत्तनाइवग्गो चएज्ज तं सुत्तविहिणा उ' ॥ ७०० ॥

स्पर्शेनानुपघातात्-वस्त्रस्पर्शेन लिङ्गविकारलक्षणस्य उपघातस्याभावात् । 'वेंटवेधादिना वातिके च उच्छूने' इति क्वापि देशे विण्टकेन विध्यते लिङ्गं । मातृग्रामः-स्त्रीजनः । 'सदाऽप्रयोगे सुखशीलतया, असम्यग् योगश्चायोगतोऽपि अपरः-पापीयानि' ति असम्यगनुयोगोऽननुयोगादपि पापीयानित्यर्थः । आवश्यकादिसूत्रस्य यावत् सूत्रकृतं द्वितीयमङ्गं तावदि' ति सूत्रकृतं यावत् सामान्योऽपि पाठ्यते इत्यर्थः । नालबद्धवल्लिः-स्वजनवर्गः । निरुद्धस्य-निरोधस्य तपोविशेषस्य । प्रज्ञापकऋणमावर्यारिति व्याख्या तृव्याख्येययोः लक्षणमित्यर्थं । कायोत्सर्गं कुर्वन्त्यनुयोगप्रारम्भार्थं तत् समाप्तौ च सर्वेऽपि पुनरपि गुरुमेव वन्दन्ते, अन्ये पुनः प्राहुः ज्येष्ठार्योऽपि वन्दनीयः यः चिन्तनां कारयतीति शेषः ।

बिम्बप्रतिष्ठा स्वरूपं यथा—

निप्फण्णस्स य सम्मं तस्स पइट्ठावणे विही एसो ।

सट्ठाणे सुहजोगे अहिवासणमुच्चयपूयाए ॥ ११३२ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

चिइवंदण थुइथुइढी उस्सग्गो साहु सासणसुराए ।
थयसरणपूयकाले ठवणा मंगलपुव्वा उ ॥ ११३३ ॥ (भव्य इत्यर्थः)

विविहनिवेयणमारत्तिगाइ धूवथयवंदणं विहिणा ।
जइ सत्ति गीयवाइय नच्चणदाणाइयं चेव ॥ ११४२ ॥ (नैवेद्यमित्यर्थः)

'विशेषपूजाया दिगादिगताया' इति । एकाचार्यस्य धर्मप्रतिबोधकादेः या पूजा सा दिगादिगता ।

जइणो वि हु दव्वत्थयभेओ अणुमोयणेण अत्थित्ति ।
एयं च इत्थ नेयं इय सिद्धं तंतजुत्तीए ॥ १२१० ॥

ओसरणे बलिमाई न चेह जं भयवयावि पडिसिद्धं ।
ता एस अणुण्णाओ उचियाणं गम्मई तेण ॥ १२१३ ॥

उचितानां गम्यते तेन द्रव्यस्तवः । अनेन बलिरुक्तः । अग्राहारः द्विजग्रामः ।

'धण्णा निवेसिज्जइ धण्णा गच्छंति पारमेयस्स ।
गंतुं इमस्स पारं पारं दुक्खाण वच्चंति' ॥ १३४८ ॥

इयरे वाऽऽणा उ च्चिय गुरुमाइ निमित्तओ पइदिणं पि ।
दोसं अपेच्छमाणा अडंति मज्झत्थभावेणं ॥ १४७६ ॥

। प्रतिदिनमिति दोषः ॥

सुयवज्झायरणरया पमाणयंता तहाविहं लोयं ।
भुवणगुरुणो वरागाऽपमाणयं नावगच्छंति ॥ १७०८ ॥

॥ इति पञ्चवस्तुकस्य गाथाः पर्यायाश्च समाप्ताः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पत्तो य लहुयबंधू रहनेमी नाम नेमिनाहस्स। अरिट्ठनेमि-चरिते।
तम्हा सिद्ध यं न कारवेज्जा अणुवरणमिलकाउं (?)। निशीथचूर्णौ।

वंदेण हंति निभी जुव मरू थेर इत्थिजोवणं।
न य ठंति नाडप जे अह ठंति न पेहगाई (?)॥

प्रेक्षणकदर्शनविचारः।

'संवच्छरं वावि परं पमाणं' इत्यादिगाथाव्याख्या यथा— संवत्सरं वाऽवि। अत्र संवत्सरशब्देन वर्षासु चातुर्मासिको ज्येष्ठावग्रह उच्यते। तमप्यपिशब्दात् मासमपि परं प्रमाणं वर्षाऋतुबद्धयोः उत्कृष्टमेकत्र निवासकालमानमेतत्। द्वितीयं च वर्षं चशब्दस्य व्यवहित उपन्यासः। द्वितीयं वर्षं वर्षासु चशब्दान्मासं च ऋतुबद्धे न तत्र क्षेत्रे वसेत्। यत्रैको वर्षाकालो मासकल्पश्च कृतः। अपि तु संगदोषात् द्वितीयं तृतीयं च परिहृत्य वर्षादिकालं ततस्तत्र वसेदित्यर्थः। दशवैकालिकम्।

तत्थ णं तुंगियाए नगरीए बहवे समणोवासया ण अड्ढा दित्ता जाव अपरिभूया अहिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा जाव बहूहि सीलवयगुणविरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं चउद्दसट्ठ-मुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा समणे निग्गंथे फासुयएसणिज्जे णं जाव पडिलाभेमाणा विहरंति। तए णं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जाव पंचसयपरिवारसहिया तुंगियाए नयरीए पुप्फवइए चेइए जाव समोसढा। तए णं ते समणोवासया जाव ण्हाया जाव सुद्धपावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवराइं परिहिया जाव साओ साओ गिहाओ निग्गच्छंति निग्गच्छित्ता एगओ मिलाइंति मिलाइत्ता पायविहारचारेणं निग्गच्छंति जाव थेरा भगवंतो पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति, तं जहा— सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं अविउसरणयाए, एगसाडीएणं उत्तरा-संगकरणेणं, चक्खुफासे अंजलिपग्गहेणं, मणसो एगत्तीभावकरणेणं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति करित्ता वंदंति नमंसंति जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति। भगवइए भणियं। एवं उववाइए रायप-सेणए नायधम्मकहाए एवमाइ बहुएहिं गंथेहिं भणियं।

दारवइए नयरीए कण्हे वासुदेवे जाव भगवं अरिट्ठनेमी पुच्छिओ अट्ठारसमणसाहस्सीओ कयरेण वंदणेणं वंदामि। दुवालसावत्तेणं वंदाहि। आवस्सगचुण्णीए भणियं। सेयवीए नयरीए पएसीराया केसि कुमारसमणं पंचविहेणं अभिगमेणं वंदइ खामेइ। एवमाइ अण्णे बहवे समणोवासया पंचविहेणं अभिगमेणं वंदंति नमंसंति।

जे भिक्खू सगणेच्चियाए वा परगणेच्चियाए वा निग्गंथीए सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जइ आवज्जइ चउमासियं परिहारट्ठाणं।

सयमेव आभरणालंकारं ओमुयइ ओमुयत्ता सयमेव चउहिं अट्ठाहिं लोयं करित्ता छट्ठेणं भत्तेणं उसभेणं अरहा संवच्छरं साहियं चीवरधारी होत्था। तेण परं अचेलए। जंबूद्दीवपण्णत्ती।

पच्छिमे तिभाए पण्णरस कुलगरा— संमुई, पडिसुई, सीमंकरे सीमंधरे, खेमंकरे, खेमंधरे, विमलवाहण, जसमं,ऽभिचंदे, चंदाभे, पसेणइ, मरुदेवा, नाभी, उसभे। इतीई मा ठि जंबूद्दीवपण्णत्तीए।

रुप्पं टंकं विसमाहयक्खरं नवि य रूवओ छेओ।
दोण्हंपि समाओगे रूवो छेयत्तणमुवेइ ॥

उस्सग्गेण जहिं दव्वलिंगं भावलिंगं च अत्थि सो वंदणिज्जो। जहा-रूवगं, जत्थ सुद्धं टंकं समक्खरं सो छेको भवति। रुप्पं जत्थ सुद्धं टंकं विसमाहयक्खरं सो वि रूवगो छेओ न भवइ, रुप्पं जत्थ असुद्धं टंकंपि असुद्धं सोपि सुतरां छेओ न भवइ किंतु जत्थ दुण्णि वि सुद्धाणि सो छेओ। एवं सो संव्यवहार्य इत्यर्थः। जत्थ उभयमवि अत्थि। एत्थ य—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

रूप्प' पत्तेयवुहा टंकं जे लिंगधारिणो समणा ।
दव्वस्स य भावस्स य छेओ समणो समाओगे ॥११३९॥

पत्थ य रूप्पगत्थाणीया पत्तेयवुहा जया वा दव्वलिंग नत्थि त्ति न कोइ ते पणमेइ । भणियं च—

किह लिंगमप्पमाणं ? उप्पण्णे केवले वि जं नाणे ।
न नमंति जिणं देवा सुविहियनेवत्थपरिहीणं ॥

'किह लिंगमप्पमाणं ?' गाहा— जया वा दव्वलिंगं गहियं तया नमिज्जंति । टंकत्थाणीया निण्हगा । सव्वगं तेवि रयहरणगोच्छपडिग्गहधारी तहवि मिच्छदिट्ठी जे पासत्थाइ तेहिं भगवओ लिंगं गहियं न पुण सव्वं अणुपालिंति त्ति । विसमाहयक्खरा अहवा संविग्गा वि जया निक्कारणे पाउयाहिं हिंडंति । एवमाइ तो विसमाहयक्खरा एवमाइ विभासा । आवस्सगचुण्णि ।

दिवसउ पाउओ हिंडइ । पंचकल्पचूर्णि: ।
गिहत्थवेसे मूलं एक्काए वा राए गिहत्थलिंगे । कल्पे ।

अद्धंसका एक्कं संज्झइपाउएक्कं सीसदुवारियाए.......मासो भण्णइ एगं अहोरत्तं बुद्धीए बावट्ठिभागे छेत्ता तस्स एगसट्ठिभागा चंदगइए तिहीसमत्तीए ? भवइ । कहं पुण एयं उच्यते जइ अट्ठारसहिं अहोरत्त सएहिं सएहिं ।

.......या तीसुत्तरा लब्भंति तो एकेन अहोरत्तेण किं लभामो ? । एवं समीयकम्मए कए आगयं । एगसट्ठि बावट्ठिभागा अहोरत्तस्स य । सा एगसट्ठी तीसाए तिहीहिं मासो भवइत्ति तीसाए गुणेयव्वा ताहे इमो रासी जाओ । १८३० । एयस्स एगसट्ठीए भागो हायव्वो लद्धा तीसं तिही । एवं एसो उउमासो निप्फन्नो । एस चेव कम्ममासो सावनमासो य लब्भइ ।

एस चेव रासी बावट्ठीहिए चंदमासो वि लब्भइ । निशीथग्रंथे ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निरयावलीश्रुतस्कन्धपर्याया यथा— विहरइ–आस्ते । अदूरसामंते-न च दूरे न च समीपे । उड्ढं जाणु–उत्कुटुकासन: । 'वंदइ नमंसइ'-त्ति । वन्दते स्तुत्या, नमस्यति प्रणामत: ।

'चंदगस्स रण्णो सपक्ख'' इति । समानपक्षं समानपार्श्वं समवामेतरपार्श्वतया । सपडिदिसिं–सप्रतिदिक् । अभिमुखागमेन हि परस्परस्य समावेव दक्षिणवामपार्श्वौ भवत: ।

'एगाहच्चं कूडाहच्चं'' इति । अकैव आहत्या हननं–प्रहारो यत्र तत् अेकाहत्यं कूटस्येव–पाषाणमयमहामारणयन्त्रस्येव आहत्या हननं यत्र । सोल्लिएहि य पक्वैः । तलिअेहि य–स्नेहेन पक्वै: । भज्जिअेहि य-भृष्टै: । पसन्नं–द्राक्षादिजन्यासव–प्रसत्तिहेतु: । ओलग्गाअवरुग्णा-भग्नमनोवृत्ति: उलग्गसरीरा–भग्नदेहा, नित्तेया–गतकान्तिः । दीण-विमणवयणादीना विमनोवदना । पंडुल्लुयमुही-पांडुलितमुखी । ओमंथिय-अधोमुखीकृतं, रुहिरं अप्पकप्पियंति–आत्मसमीपस्थं । दारगस्स अणुपुव्वि णं ठिइपडियं चेति । स्थितिपतितं-कुलक्रमागतं पुत्रजन्मानुष्ठानं।

घातेउकामेण अस्मो इति । हंतुकामः । पीइं अलोवेमाणा अलोपयन्त: । खंडयाविहूणो–छात्ररहित: । मित्तनाइनियगादओ विउलेणं ति । मित्राणि-सुहृदः, ज्ञातय:–समानजातय, निजका:–पितृव्यादय: सम्बन्धिन:-श्वसुरपाक्षिका: । भोगभोगाइं भुंजमाणीत्ति । अतिशयवन्त: शब्दादीन् । अजाहि अणाहद्दिया इति । यो बलात् हस्तादौ गृहीत्वा प्रवर्त्तमानं निवारयति सोऽपघट्टकः तदभावात् अनपघट्टकः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

द्वितीयः खण्डः ।

पर्याया लिख्यन्ते यथा-आचारे शस्त्रपरिज्ञायाः उद्दे० ४-मुक्कलं-मुत्कलम् । उद्दे० ५-ज्योतिष्मती-कांगुणी । 'मरणदुक्खमाभा' इति अभयमित्यर्थः उद्दे० ६-'संवर्त्तितलोकप्रतरासङ्ख्येयभागवर्ति प्रदेशराशिपरिमाणाः त्रसपर्याप्ताः'। एतच्च मानं स्वावगाहनया द्रष्टव्यम् अन्यथा विरोधप्रसङ्गात् । गुदकीलिका-हरिस । शीतिका-ऊटिका । सामिदग्धनगरम्-अर्द्धदग्धम् । केसराणि-कुङ्कुमकेसरव्यतिरिक्तं हट्टद्रव्यं समाप्तं प्रथमाध्ययनम् ।

द्वितीयेऽध्ययने प्र० उद्दे०-स्वात्मरूपं यत्स्वयं (यदव्ययं) तेन लाञ्छिताः । जातिरसः-सहजरसः । हृषीकानि-इन्द्रियाणि । कलम्बुकापुष्पं-काहलिका । न ताव रिक्को-न निराकुलः । उद्दे० २-मुक्तोली-मोट्टा । उ० ५-सिता-शर्करा । अवस्कन्दादिना-धाटीप्रभृतिना । तृतीयाध्ययने उद्दे० २-कालप्रष्ठादयः-म्लेच्छादयः । त्रपुषीफलनिबन्धनं-कटुककर्कटीविण्टम् । अध्ययने ५० उ० १-'देशे आम्रवृक्षः वेणुर्वा' त्वक् सारत्वादनयोः । कुरुकुचादिभिः-गण्डूषैः । कल्कतपसा-शठतपसा । उ० २-पस्य वत्वं-पकारस्य वत्वम् । चकति-बिभेति । स्तेनकुलिङ्गा-दीनां-चौरकुलिङ्गादीनां । उ० ४-जाम्बालः-मूत्रपुरीषोद्भवं कर्दमम् । गद्गदकल्पस्य-मान्द्योषधीकल्पस्य । 'जहा दियापोयमपक्खजायं' इत्यादि-गाथार्थो यथा-दियापोयं-द्विजपोतम्, अजातपक्षं स्वाश्रयात् उत्पतितुकामं तं पक्षिणं, अचाइया-अशक्नुवन्तं, तरुणं-बालम् । अ वील:-तम्बोलः । अनपाचीनमार्गः-उत्तममार्गः । अधीतान्वीक्षिकीकस्य अधीततर्कादिविद्याश्रयस्य । षष्ठाध्ययने उद्दे० १-एकान्तरिते-एकेन 'उयरिं चे' त्यनेन पदेनान्तरिते मूई (यं) चेत्यस्मिन् पदे मूक इति ज्ञेयम् । विच्युशब्देन कृकलासाकृतयः जीवा उच्यन्ते । अम्बरीषो-भाण्डः । उ० २-'अपरिमाणाये' त्यव्ययं दीर्घकालार्थे यथा चिरायेति । दीप्तजिह्वादयः-शृगाल्यादयः । उ० ३-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

'निम्माणेइ परो च्चिय अप्पाणउ न वेयणं सरीराणं ।
अप्पाणुच्चिय हिययस्स न उण दुक्खं परो देइ' ॥ १ ॥

अस्या अर्थो यथा-निर्मापयति वेदनां परः सरीराणं-शरीरस्यैव आत्मनस्तु न वेदनां परः कर्तुं समर्थः । हृदयस्य तु 'अप्पाणुच्चिय' आत्मैव दुःखं ददाति न तु पर इति गाथार्थः । सपुट्ट-विषमोन्नतम् । 'आँ' इति एवंपर्यायः । अवरुग्णवाहनानां-भग्नवाहनानाम् । मीमांसा-अर्थविचारणा । उ०. ४-कृत्स्नं वाङ्मयमित' इति । इतो-मत्सकाशात् निर्गतमिति जल्पति । 'क्रीडनकमीश्वराणां' गर्वाध्मातजल्पकः क्रीडनकं जायते । 'गन्तुं तत्थऽचयंतो' अशक्नुवन् । उ०. ५-क्षीबा इव-मत्ता इव । अष्टमाध्ययने उ० १ ऐतिह्यम्-अनादिवार्त्ता । 'अथवा अलोकोऽस्ति न च लोको भवति, लोकोऽपि नामास्ति, न च लोको लोकाभाव इत्येवं स्यादनिष्टं चैतद्'त्यत्रार्थो यथा-अथवेति पूर्वोक्ताद्विपर्ययेणायोज्यते-पूर्वं हि 'लोकोऽस्ती' त्युक्तं अत्र 'त्वलोकोऽस्ती' त्युच्यते । ततश्चात्रापि अस्तिना सह सामानाधिकरण्यात् यदस्ति तत्सर्वमलोकः स्यात् 'न च लोको भवती'ति कश्चनापि न प्राप्नोतीत्यर्थः । अथवा अलोकप्रतिपक्षभूतो 'लोकोऽपि नामास्ति' परं न स लोकः प्राप्नोति किं तर्हि लोकाभाव अलोक एव स्यादित्यर्थः । अथवा 'न चे'ति पाश्चात्येन पदेन सह सम्बध्यते, तद्यथा-लोकोऽपि नामास्ति परं न भवतीति तर्हि किं स्यादित्याह-'लोको लोकाभाव' इति । लोकः सन्नलोक एव स्यादित्यर्थः तस्याप्यस्तित्वेन व्याप्तत्वादित्यर्थः । किञ्चास्य व्याप्यस्य व्यापकत्वे सति लोकस्येत्यर्थः । द्विवचनबहुवचने अप्यायोज्ये वक्ष्यमाणसूत्रजाते इति शेषः । अध्ययने ९- किमिय.- कस्यायं किमियः । उपपतिः-पारदारिक : ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

द्वितीयः खण्डः

गर्द्‌भदृष्टान्तोऽपि यथा–

सुश्रान्तोऽपि वहेद् भारं शीतोष्णं च न विन्दति ।
सन्तुष्टश्च भवेन्नित्य – माचरेत्त्रीणि गर्दभात् ॥ १ ॥

पटवासा-देवगन्धविशेषाः । निःश्रोत्रम्-औषधविशेषः । मंथुः-बदरचूर्णादिकम् । द्वितीयश्रुतस्कन्धकदशमोद्देशके–' तं नो वि (हि) त्ति वएज्जा नो हं दह (अणिहि) त्ति वएज्जा ' इत्येतौ शब्दौ परुषार्थौ ' अन्नं वा फरुसं न वइज्ज ' त्ति चूर्णिवचनात् । उपचरः–चौरसमीपस्थः । संस्तारकमपवर्त्तकम् उटकं इत्येकार्थाः । दूमियवसही–धवलिता । अंतेण वा–अन्ते इत्यर्थः । मज्झेण वा–मध्ये । तृतीये सप्तैकके–सेचनपथो निक्का कुल्ही इत्येकार्थाः । प्रलेह्या गवादनी खाणस्थान–मित्येकार्थाः । पात्रं समाधिस्थानं विष्ठामूत्रभाजनमित्येकार्थाः । ' चरियाणि ' – गृहप्राकारान्तराणि ' डिंबाणि ' – डमरविशेषाः । ' संतसावएज्जं '–सत् स्वापतेयं संवलकमित्यर्थः ।

॥ इत्याचाराङ्गस्य पर्यायाः समाप्ताः ॥

सूत्रकृताङ्गपर्याया यथा–सव्वामगंधं – आधाकर्मिकम् । पुद्गलाः संस्काराः क्षेत्रज्ञा आत्मान इत्येकार्थाः । जहब्भपडलस्स–अब्भोडिङ्गकस्येत्यर्थः ।

' सत्तऽद्धतरू विसमे न मेहया ताण छट्ठ नहजलया ।
गाहाए पच्छद्धे भेओ छट्ठोत्ति पक्ककलो ' ॥

एतद् गाथालक्षणम् अंशन्यसनेन ज्ञेयम्, अर्थस्तु यथा–सप्त मात्रा गणा ज्ञेयाः, अर्द्धतरुर्गुरुच्यते, स च भवति, विषमे न मेघका–गुरवः षष्ठे स्थाने किन्तु नभोजलदाः लघुगुरवः इत्यर्थः । वाममार्गो–दर्शनविशेषः । सूर्यसम्भेदिनोऽन्ये–सूर्यादुपरि स्वर्गं यान्तीत्यर्थः । त्रैराशिका–गोशालकमतानुसारिण एवोच्यन्ते । अध्ययने द्वितीये वैतालीयम्–

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

वैतालीयं ल्गनैधनाः षडयुकूपादेष्टौ समे चलः ।
न समोऽत्र परेण युज्यते नेतः षट् च निरन्तरा युजाः ॥

अंशकान् न्यस्य ततो मात्राभिर्वैतालीयलक्षणं ज्ञेयम् । अर्थस्तु-लगरगणा-लघुगुरवः सर्वत्र निधने कार्याः षट् च कलाः अयुक्पादे-विषमपादे, अष्टौ तु मात्राः समे पादे कार्याः । तथा ल-लघुः समः-समपादोद्भवो न परेण युज्यते लघुना सह, न इतो हेतोः षट् निरन्तरा लघवः कार्या युजो.-समपादयोरिति वैतालीयलक्षणार्थः । समीतरुपत्रैः-समीतरुपत्रवत् स्तोकमुपार्ज्यते पुण्यं शाकतरुपत्रवच्च बहुतरं पातं गच्छति । उत्कोत्क(क्ष)णः-आभाषकः । कुक्कटसाध्यः-मायासाध्यः 'दंडकलियं करिता' इत्यादिगाथार्थो यथा-दंडकलियं-दण्डरीतिं कुर्वाणाः । यथा कालिकदण्डे सूत्रं उद्वेष्ट्यते निखिलमपि तथा आयुरुद्वेष्टयन्तः वासरा प्रयान्तीत्यर्थः । कण्हस्स पिउच्छा-पितृष्वसा । पियपुत्तभायकिडगा-कृतभ्रात्रादिव्यपदेशात: पते प्रच्छन्नपतय इत्यर्थः । 'न य तुप्पिज्जइ घयं व तेल्लं वा' न तुप्पिज्जइ-न चोपडिज्जइ । टकवस्तुल इति नाम । 'लोहिकुंथुरूवाई' ति । लोहिकुन्थवो-जन्तुविशेषाः । समवयरमाणा-आश्लिष्यमाणाः । क्षौद्रेण-चूर्णविशेषेण । सौंडीर्यम्-आपद्यविषण्णता । द्वितीयश्रुतस्कन्धे-डिंबः- परचक्रशृगालिका भयमित्येकार्थाः । डमरं-स्वराष्ट्रक्षोभः । पुष्करिणी-तडागरूपा । धर्म्मलाभादिकं द्रम्मादिकम् । थूल्याटकाः खुलुका इति जङ्घाद्यवयवविशेषाः । दशार्द्धं गुञ्जा माषः । (खङ्ग) खेटकौ-असिफरकौ । खरविशदमभ्यवहार्थ-सुकुमारिका मोदकादि । अर्भकः-बालः । कुहणककन्दुकादयः-प्रत्येकवनस्पतिविशेषाः वर्षा-छत्रादयः । गंडी-अहिरणि काष्ठम् । अब्भवालुय-अभ्रकमिश्रवालुका । अध्ययने ४-अपूर्वाया अभावात्-अपूर्वजीवोत्पत्तेरभावात् । अध्ययने ६-अत्यङ्गानि-प्रधानानि । 'संसारमोचकादीनामपि' इति । ये

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

द्वितीय: खण्ड:

मारितोऽयं वृद्धादि: सुखी भविष्यतीति बुद्ध्या व्यापादयन्ति तेषां म्लेच्छादीनाम् । आततायिनशब्देन गोघातकादय: षट् उच्यन्ते । 'अकल्ककुहकाजीवनं' कल्क:-पापं कुहक:-मायागोलकादिक: ताभ्याम् आजीवनं यत्र नास्तीत्यर्थ: । 'व्रतेश्वरयागविधानेने'ति । व्रतार्थम् ईश्वरस्य यागविधानं तेन । अध्ययने ७-'गतं न गम्यते तावदगतं नैव गम्यते' इत्यादिश्लोकार्थस्तु यथा-अतीतगमनक्रियं वस्तु न वर्त्तमानक्रियायुक्तं भवति, अगतम् अनागतक्रियं न वर्त्तमानक्रियं भवतीत्यर्थ: । इति सूत्राकृताङ्गपर्याया: ॥ स्थानपर्याया यथा-वैशद्यं-जाड्यम् । आश्रवणक्लेदने लालानिर्गमार्द्रताकृत् अम्ल इत्यर्थ: । रिषभसेन:-पौण्डरीक: । ठाणे २-खण्ड: सण्ड: कलहोडक: । उक्षा-सम्बन्धनम् । अत्थव्वावण्णे-अर्थव्यापनम् । 'गणहरथेराइकयं' इत्यादिगाथायां यथासङ्ख्यं, यथा गणधरकृतं ध्रुवं १ थेरकृतं चलं २, तथा आदेशात् कृतं ध्रुवं १ मुक्तव्याकरणकृतं चलमिति । तथा ध्रुवम्-अङ्गप्रविष्टं १ चलम्-अनङ्गप्रविष्टम् २ ।

'कर्म्मकर्तृप्रयोगोऽयं' कर्म्मवद्भावादित्यर्थ: । ततो 'भवति सम्पद्यते' इत्यर्थ: । 'असञ्ज्ञिनश्च नारकादिषु व्यन्तरावसानेषूत्पद्यन्ते, न ज्योतिष्कवैमानिकेष्विति तेषामसञ्ज्ञित्वाभावादिहाग्रहणं' इत्यस्य वाक्यस्य तात्पर्यार्थो यथा-असञ्ज्ञिन: ज्योतिष्कवैमानिकेषु नोत्पद्यन्ते इति तेषां ज्योतिष्कवैमानिकानाम् असञ्ज्ञित्वाभावाद्ग्रहणं । त्रिसोपान-प्रतिरूपका:-यत्र दिक्त्रये सोपानानि प्रतिद्वारं स्यु: । पूषा चेतीश्वरा भानां' भानामिति नक्षत्राणां । गेंदुक:-दण्डक: । 'दृष्टिगोचरातिसूक्ष्मद्रव्यासङ्ख्येयभागमात्रसूक्ष्मपनके' त्यादेरर्थो यथा-यत् दृष्टिगोचरम् अतिसूक्ष्मद्रव्यं तस्याऽसङ्ख्येयभागमात्रे पनकजीवो य: तच्छरीरासङ्ख्यातगुणखण्डीकृतवालाग्रभृत इत्यर्थ: । 'पत्तो अद्धाइ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

नियमेण ' मिति द्वादशवर्षसंलेखनाया अद्धादिनियमता विधेयमित्यर्थः । 'तत्र नारकाः कति कति-सङ्ख्याताः सङ्ख्याता एकैकसमये ये उत्पन्नाः सन्तः सञ्चिताः कत्युत्पत्तिसाधर्म्यात् बुद्ध्या राशीकृताः ते कति-सञ्चिता ' इत्यस्य तात्पर्य-यथा कति कति इत्यस्य पर्यायोऽयं सङ्ख्याताः सङ्ख्याता एकस्मिन् एकस्मिन् समये ये उत्पन्नाः ते भिन्नभिन्नस्थानोत्पन्ना अपि सङ्ख्यातोत्पत्तिसाधर्म्यात् कतिसञ्चिता उच्यन्ते-सङ्ख्यातसञ्चिता उच्यन्ते इत्यर्थः । मेहनं-पुरुषलिङ्गं । भत्तासहं-भक्ताषधं । ' गुत्तो समियत्तणंमि भइयव्वो ' यतः संवृतकायत्वेन गुप्तोऽपि मनसा दुष्टं चिन्तयन् न समितः । ' तवज्झणवावारपरो ' तपःसमुपार्जने व्यापृत इत्यर्थः । शुद्धचातुर्थिकादयः- चतुर्थभागग्रहीतारः कर्मकरादयः । नालिकबद्धकुसुमानि – वृन्तयुक्तानि । लेखाचार्याः – पाठयितारः । त्रिस्थानकद्वितीयोद्देशके तु ' पुव्वोवट्ठपुराणे ' पूर्व्वशिक्षितो यः पुराणः भ्रष्टः जात इत्यर्थः । ' संविग्गो उज्जुओ य तेयंसी ' त्ति । संविग्ग-आदेयवचनः । तेजस्वीत्यर्थः । ' बहुसो पयासो य ' दुराचारस्य बहुप्रकाशक इत्यर्थः । ' अणइसेसी से ' अनतिशायीत्यर्थः । ' आसयपोसयसेवी-मुखापानयोः सेवकः । ' वट्टइ नयावि ओवाए ' न चोपकारे वर्त्तते इत्यर्थः । हस्तिकल्पनं-हस्तिप्रगुणीकृतिः । चतुः-स्थानकेषु – ' अइसंधणपरस्स-वञ्चनापरस्य । ' सुहदुक्खबहुसईयं ' सुखदुःखबहुउत्पत्तिकम् । ' मोत्तूण सगमबाहं ' स्वकं-निजं । तम्हा स कालकालो ' स मरणकाल इत्यर्थः । ' ओयरियावाओ '-औद-रिकवादः । ' कलर्मा '-दाली । ' अस्थितान्नफलानि '-आश्रीतानीत्यर्थः ।

' षट्प्रज्ञकगाथादिरूप ' इति । षट्प्रज्ञको ग्रन्थविशेषः । अध्ययन० ५-

' देसविरइं पडुच्च दोण्हवि पडिसेहणं कुज्जे ' त्ति । देशविरतिं प्रतीत्य द्वयोः सर्वद्रव्यपर्याययोः प्रतिषेधनं कुर्यादित्यर्थः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

द्वितीयः खण्डः

'तद्दिगदासनिवृत्तीफलं' ति। अणुव्रतादिकदोषनिवृत्तिः फलं महाव्रतकथने फलमित्यर्थः। 'दोषान्नभुजि' ति। रात्रिपर्युषितभोजीत्यर्थः। 'ओमंथिय' त्ति। अधोमुखं। 'पास' त्ति पार्श्वेन। तृतीयं तूत्तानं। ओहारा-तन्तुकाः। 'एत्थ पसिद्धी' उत्तरं। ओघसणं (ओसगणं) बुड्डनं 'माणुस्से आभिओगे य' मानुषोपसर्गाः बलात् कर्म कार्यते इत्यादयः। कालांतरसवीला पडिसिद्धो विसइ-प्रविशति। 'भाजनं संमार्ष्टि' भव्यरीत्या करोति। 'अज्जाघरे'-चामुण्डागृहे। प्रत्यङ्गिरां स्खलितादिरूपाम्। वग्गाडिय-मुहमक्कडिया। पडिसिद्धेसु य दोसे-द्वेषे। 'दहनाद्यं ऋक्षसप्तक' मिति। कृत्तिकाद्यमित्यर्थः। 'मैत्र्यादिकम्'-अश्विन्यादिकम्। 'यातुधाशायां' गच्छतो दिशीत्यर्थः। 'परिघाख्यामनिलदहनदिग् रेखां' इत्यस्यार्थो यथा-इयं पूर्वोक्ता नक्षत्रपद्धतिः परिघाख्या भण्यते, तत इमां परिघाख्यां नक्षत्रपद्धतिमतीत्य-उल्लङ्घ्य किंविशिष्टाम्? अनिलेन-वातेन प्रज्वालितदहना दिग् रेखेव तां। अध्य० ८-'पउमुत्तरो ऽथ पढमो पुव्विमसीउत्तरे कूले' इति। पूर्वदिग्वर्त्तिन्याः सीतायाः उत्तरं कूले इत्यर्थः। अध्य० ९-'साजीर्णं भुज्यते यत्तु, तदऽध्यसनमुच्यते' इति। सह अजीर्णेन भुज्यते यत् तत् साजीर्णम्-अजीर्ण मित्यर्थः, अध्यसनं चोच्यते। इडा दक्षिणा नाडी वामा तु नाडी पिङ्गला। वैद्यकण्टकः-वैद्यसेवकः। चिलातक्षेत्रे-म्लेच्छक्षेत्रे। चातुर्वर्ण्यं-ब्राह्मणादिकं। 'समुहाइ समुस्सिओ व जो नवओ' इति। स्वमुखानि-द्वादशाङ्गुलप्रमाणनिजमुखानि यस्य देहे नवगुणानि स्युः, अष्टोत्तरशताङ्गुलोच्छ्रयदेह इत्यर्थः। प्रातिवेशिकराजः-प्रत्यासन्नो राजा। 'ओमव्वयभिक्खवियरणं' ति। दुःकालात्यये। पुनर्नवा-साटडी। आग्नेयं-कृत्तिका, आदित्यं नक्षत्रं-पुनर्वसुरुच्यते। ब्राह्म्यं-अभिजित् भृगुः-शुक्रः 'भरणी स्वात्याग्नेयं' इत्यादिश्लोकेषु त्रीणि त्रीणि नक्षत्राणि प्रायः एकैकस्यां वीथ्यां योजनीयानि, यतः क्वापि चत्वारि नक्षत्राणि एकवीथ्यां सन्ति।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

अध्य० १० – 'सतन्त्रीककरटिका' इति । करटिकायां हि तन्त्र्यो भवन्ति। 'परिणामो ह्यर्थान्तरगमन' मित्यादिश्लोकः द्रव्यार्थनयस्य मतेन। सत्पर्ययेण नाशः इत्यादिश्लोकस्तु पर्यायनयमतेन। 'वेमाय' विमात्रया । 'जहण्णवज्जो विसमो समो व' त्ति। जघन्यगुणवर्जः जघन्यस्निग्धवर्जः विषमः समो वा बन्धो भवत्येवेत्यर्थः। अभ्रपटल-स्येव' अभ्भोडिंगस्येवेत्यर्थः। 'सइकरणं'ति स्मृतिकरणं। 'जम्मण-विणीय उज्झा' इत्यादि-गाथार्थः यथासङ्ख्येन ज्ञेयो वृत्तिं परिभाव्य अग्रतः पश्चाच्च द्वादशचक्रिणां वृत्तानुक्तत्वात्। 'सिलनिचओ रायहाणि' त्ति सिलनिचयः पर्वतः। 'पढमबीयदुओ' इति। प्रथमद्रुतः क्षुधाद्रुतः, द्वितीयद्रुतः पिपासाद्रुतः। अनामिका-बृहदङ्गुलिकाया लघुतरा। मधुमुखाः-भट्टाः। 'मावल्लाः'-प्रकृतिविशेषाः। 'एगे भवं दुवे भवं' भवानित्यर्थः। स्थानाङ्गपर्यायाः समाप्ताः।

समवायपर्याया यथा-'वाणमंतराणं सोहम्माओ सभाओ' तेषामपि सभानामेतन्नाम। 'शरीरावयवप्रमाणस्पन्दितादि-विकार-फलोद्भावकमि'ति – शरीरावयवप्रमाणस्य स्पन्दितादिविकारस्य च स्पन्दितं-चलनं। छदैः-पत्रैः। 'संतो हाइ अलोगो' इति-सान्तोऽलोकः प्राप्नोति। 'विमाणावाससयसहस्सा' इति-विमानावासशतसहस्राणी-त्यर्थः। प्रकीर्णकः-चामरः। 'जोयणसहस्स पढमं बाहल्लेणं च' इति-बाहल्यम् उच्चत्वमत्र ज्ञेयम्। 'पुढवीवलवइरसक्करा पढमं'ति-पृथ्वीउपलवज्रशर्करामयः प्रथम इत्यर्थः। विभाजितं-विभागैः व्यवस्थितं समांशं-समविभागं योजनस्यैकषष्टिभागानां मध्यात् षट्पञ्चाशत् भागप्रमाणं चन्द्रमण्डलमित्यर्थः। 'पण्णरसभागेण य' चन्द्रं कृत्वा राहुः पनरसमेव पञ्चदशभिर्भागैः तं चन्द्रं चरति। 'कालो वा जोण्हा वा' इति-कृष्णो वर्णः ज्योत्स्ना वा। 'सर्वेषां नक्षत्राणां सीमाविष्कम्भः सप्तषष्ट्या भागैः भाजितः समांशः-

For Private And Personal Use Only

द्वितीयः खण्डः

समच्छेदः प्रज्ञप्त' इति-समांशता तु उक्तव्यतिरिक्तभागाभावात् समांशता न तु भागसमतयैव । 'सत्तट्ठि खंडिए अहोरत्ते भागाओ एक्कवीसं'ति - सप्तषष्ट्या खण्डितेऽहोरात्रे एकविंशतिर्भागा भवन्तीत्यर्थः । 'एतदेव द्विगुणं षट्पञ्चाशतो नक्षत्राणा' मिति-द्विगुणत्वं च नक्षत्रयोर्द्वयत्वात् । 'न बाधते' इति-अबाधा-कर्मणोऽनुदय इत्यर्थः । तदेव चतुरशीत्या लक्षैर्गुणितं पूर्वमुच्यते' इति-पूर्वमिति सङ्ख्याविशेषः । 'तच्च स्थानम्' इत्यत्र पदच्छेदः कार्यः । 'स्थानान्तरमित्येवम्' इति स्वस्थान-स्थानं इति प्राग् व्याख्यातं, स्थानान्तरं तु एवं वक्ष्यमाणन्यायेन, तथाहि-पूर्वं स्वस्थानं तदेव चतुरशीत्या लक्षैगुणितम् अनन्तरस्थानं त्रुटिताङ्गं भवतीति। 'चउद्स नामाओ अंगसंजुता' इति 'पुव्वतुडियाऽडड' इत्यादीनि चतुर्दश नामानि अङ्गसंयुक्तानि कार्याणि । ततोऽष्टाविंशतिः सङ्ख्याविशेषाः स्थानलक्षणा लभ्यन्ते । शीर्षप्रहेलिकायां चतुर्नवत्यधिकं स्थानशतम् अङ्कस्थानशतं स्यादित्यर्थः । 'छेदेन अष्टादशलक्षणेन' इति । छेदेन-अंशेन । 'एगूणपन्नासइमे मंडलगए अट्ठाणउइ एगसट्ठिभाए मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता' इति। एकोनपञ्चाशत्तमे मण्डले तिष्ठन् रविः यैरेकषष्टिभागैः मुहूर्तो भवति तेषां भागानां अष्टानवतिं भागान् दिनक्षेत्रस्य हानिं नयतीत्यर्थः । धणूवि अंगुलानि ९६ । नालिया-दण्डापकरणविशेषः जुगं-यूपं अक्षः-शकटसम्बन्धी, मुशलम् एतानि सर्वाणि हस्तचतुष्टयम् इति तात्पर्यम् । 'द्रव्यादिभेदात् वा विंशतिर्वा' इति-द्रव्यक्षेत्रकालभावाः पञ्चसु इन्द्रियेषु चत्वारः प्रत्येकं योज्यन्ते, ततो विंशतिरिन्द्रियाणीत्यर्थः । 'एत्थ य समलक्खणाइया जम्हा । नवनायसंबद्धा अक्खाइयमाइया तेणं ॥ तो सोहिज्जंति फुडं' इत्यस्य गाथाशकलस्य व्याख्या यथा-समलक्षणाः-समस्वरूपाः नवज्ञातसम्बद्धा आख्यायिकाद्याः तेन कारणेन शोध्यन्ते ततो 'वेगलानां' उद्धरितानां 'पुनरुक्तवर्जितानां' अर्द्धचतुर्था एव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

कथानककोट्यो भवन्तीति तात्पर्यार्थः । 'अनशनिनां भक्तद्वयच्छेदो भवती' ति द्व्यासनकापेक्षया । 'तृतीयकप्रणायकभेद' इति । तृतीय-प्रतिपादकभेदस्य सूत्रनार्थ इत्यर्थः । बोधनं-प्रज्वालनं । 'शेषमूलगुणाः' प्राणातिपातादिपूर्वोक्तमूलगुणापेक्षया शेषाः मूलगुणाः । 'एको य होइ सव्वट्ठे' लक्ष इति शेषः । 'दर्दरेण चपेटाभिघातेन' इति । चपेटाभिः भित्तिषु दत्तपञ्चाङ्गुल्यः । 'ओगाहित्ता' अवगाह्य-ऽधो गत्वेत्यर्थः । मनुष्याणां आवासाः शरीरलक्षणा एव । 'ऊर्ध्वम् अच्युतं यावत्' इत्यादिवाक्येऽर्थो यथा-इह मनुजलोके उत्पद्यमानस्य अच्युतादिति तात्पर्यार्थं । ततः अच्युतमनुष्यलोकयोः अन्तरम् ऊर्ध्वलोक इहोक्तः । नरके सामान्यापेक्षया द्वादश मुहूर्त्ताः सर्वन-रकापेक्षया, यतः द्वादशमुहूर्त्तानन्तरं सप्तानामेकत्रावश्यं नारकोत्पत्तिः ।

॥ समवायपर्यायाः समाप्ताः ॥

भगवतीपर्याया यथा-शते ७ उ० २-' तिरियाणं चारित्तं' इत्यादिगाथार्थो यथा-तिरश्चां पञ्चमहाव्रतारोपणं स्यात् अष्टादशपापस्थानोच्चारणे सति इत्यर्थः । उ० ९-तृणशूकं-तृणसिलः । समुत्पन्ने प्रयोजने ये गणं कुर्वन्ति ते गणप्रधाना राजानो गणराजाः-सामन्ताः । शते २५. उ० ३. स्थापना-

सङ्ख्यात- प्रदेशाः	ब्रह्मलोकतिर्यग्-मध्यप्रान्तश्रेणयः ।
अलोक-श्रेणयः	अधोलोकको-णश्रेणयः ।

'तिण्हं सहस्सपुहत्तं' इति । त्रयाणां सम्यक्त्व-श्रुतदेशविरतिसामायिकानां । 'तद्द्वयस्य भावात्' साधुसाध्वीद्वयस्य भावात् 'विंशतिरेव तेषां' साधुसाध्वीनां श्रूयते ।

॥ इति भगवतीपर्यायाः समाप्ताः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

द्वितीयः खण्डः

प्रश्नव्याकरणपर्याया यथा – 'सूत्रं व्यवस्थाप्यमतो विमृश्य व्याख्यानकल्पादित एव नैव' इति व्याख्यानकल्पात्-प्रज्ञाशास्त्र-पुस्तकादिलक्षणात् इतः-पूर्वोक्तात् नैव सूत्रं व्यवस्थाप्यमित्यर्थः । 'संसारमोचकाः' इति । वृद्धोऽयं अन्धोऽयं इति भणित्वा ये मारयन्ति ते संसारमोचकाः । 'व्रणे श्वयथुरायासात्' श्वयथुः-शोफः । इति प्रश्नव्याकरणपर्यायाः ॥ जीवाभिगमस्य यथा-'सतः सम्भूतभावस्य चारु रूपं फलं च यद्' इति, सतः-आप्तात् सम्भूत-भावस्य-शास्त्रस्येत्यर्थः, चारु रूपं फलम्-अभिधेयमित्यर्थः । 'वचनाज्जिनसंसिद्धेः तन्नैरर्थक्यमन्यथा' । तन्नैरर्थक्यं-वचननैरर्थक्यम् । 'सर्वज्ञादपि हि श्रोतुः तदन्यस्यार्थदेशने' इति । श्रोतुः, किंविशिष्टस्य ? तदन्यस्याऽसर्वज्ञस्येत्यर्थः । 'तदाधिपत्यादाभासः सत्त्वार्थेषूपजायते' इति, सत्त्वार्थेषु-पुरुषार्थेषु इत्यर्थः । जीवाभिगमपर्यायाः समाप्ताः ॥

प्रज्ञापनाऽष्टादशपदे-'देशतोऽपि स्वावगाहनाततप्रदेशोऽयमना-हारकः' अयं केवली स्वावगाहनया कृत्वा विस्तृतप्रदेशोऽनाहारकः स्यादित्यर्थः । विंशतितमपदे-'मुहतूए चेव'त्ति । मुखवाद्यानि डिम्भानामिव । गोविसो-गोवृषः । 'घयणुव्व छले' इति । घयणो-भाण्ड उच्यते । धाटि-भैक्ष्योपजीवि (नः) त्रिदण्डिनः धाडीवाहा भण्यन्ते । त्रयोविंशतितमपदे-'स सर्वज्ञत्वाच्च भवति' इति । स व्याबा-धाभावः । व्याबाधाभावो नुः स्वस्थस्य ज्ञस्य ननु स सुखं' इति । व्याख्या यथा-सुखं किं भण्यते? स व्याबाधाऽभावः, कस्य? नुः-पुरुषस्य, किंविशिष्टस्य? स्वस्थस्य पुनः ज्ञस्य अहो? । शरीरसम्बन्धात् 'अगुरुलघु आत्मानं नमयति शरीरं न गुरु नापि लघ्विति' शरीरं कर्तृ आत्मानं कर्मतापन्नं नमयतीति तात्पर्यम् । 'खद्योतबुध्नादिषु' इति । बुध्नं-गुदप्रदेशादि । 'बेइंदियजाइनामेणं पुच्छा । गो० ?

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

नि:शेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

जहण्णेणं सागरोवमस्स नव पणतीसतिभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा'। अर्थस्तु-यैः पञ्चत्रिंशद्भिर्भागैः सागरोपमं स्यात् तेषां भागानां मध्यात् नव भागा इत्यर्थः। 'वग्गुक्कोसठिईणं मिच्छत्तुक्कोसएण जं लद्धं' इत्यादिगाथा व्याख्या-वर्गोत्कृष्टस्थितिनां त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोटिप्रमुखानां मिथ्यात्वोत्कृष्टस्थितिना सप्तति-सागरोपमकोडाकोडिलक्षणया गुणने यत् लब्धं शेषाणाम् अयं जघन्यः स्थितिकालः पल्योपमासङ्ख्येयभागान इतिगाथार्थः। 'जहण्णेणं सागरोवम पणवीसाए तिन्नि सत्त भागा' इति। अस्य वृत्तिः-एए चेव सत्त भागा बेइंदियठिइबंधे पणवीसाए गुणिज्जन्ति द्वयोरपि भावार्थो यथा-सागरोपमसप्तभागाः पञ्चविंशत्या गुण्यन्ते, ततः सप्तभागानां पञ्चविंशत्या गुणितानां ये त्रयो भागाः ते गृह्यन्ते, पल्योपमासङ्ख्येयभागानाः प्राक्तनसप्तभागेभ्यः एते स्थूलतरा इत्यर्थः। 'दरिसणावरणिज्जाई' दर्शनावरणीयादि इत्यर्थः। 'असंखेप्पऽद्धपविट्ठे' असङ्क्षेप्यकालप्रविष्ट इत्यर्थः। 'गो० ? जेणं जीवे असंखेऽद्धपविट्ठे सव्वनिरुद्धे सेसे आउए सेसे' इति सूत्रानन्तरं पदच्छेदो ज्ञेयः तदनन्तरं सव्वमहंतीए आउयबंधऽद्धाए इत्यादि सूत्रं ज्ञेयम्। 'कम्मभूमग-पलिभागी-गब्भिणियाऽवहियकम्मभूमित्थिजाओ जाइस्सरणाइणा भावलिंगं पडिवज्जइ'त्ति। अर्थो यथा-कर्मभूमिजायाः अपहृतायाः स्त्रियो जातः पुरुषः भावलिङ्गं प्रतिपद्यते यः स कम्मभूमग-पलिभागी पुरुष उच्यते। पदे २८-'चुक्कखलितन्यायाद्विरहितः यन्निरन्तर-मनाभोगाज्जायते आहारादि तत् चुक्कखलियं'ति भण्यते। पदे ३३-जवनालिया-कन्याचोलकः। 'नेरइयाणं भंते! ओहिस्स किं अंतो बाहिं' इति। किं अन्तः-अविच्छिन्नः सन्ततः, बाहिं ति विच्छिन्न इत्यर्थः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

द्वितीयः खण्डः

'कृत्वेत्थमेतां यदवाप्तमत्र, पुण्यं मया तेन भवन्तु भव्याः ।
प्रज्ञापनार्थविगमाप्त(प्त)शुद्ध-भावान्विताः सत्त्वहिताय नित्यम् ॥'

॥ इति प्रज्ञापनापर्यायाः समाप्ताः ॥

निशीथचूर्णिप्रभृतिपर्याया यथा – 'अत्थेण कारणं पप्प' अत्थेण-भाष्येन । कारत्ति रुचिः । 'लोमसियाणं'ति-चिभडी । आसन्नं-प्रायः । गोथुभो-वायसविशेषो मेषो वा । उग्घाडापोरसी-द्वितीयप्रहरः । 'कोकारसद्दभिहाणेण य'त्ति कोशब्देनेत्यर्थः । समावत्तीए-समीपे । आणखेऊण-विज्ञाय । वाहित्ता-आकार्य । 'तओ उट्ठिएण'त्ति-रोगादुत्थितेन । सइज्झियथेरी-प्रातिवेशिकस्थेरी । कुडिया-शरीरं । अंबग्गहणपरिच्छडो-आम्रगोच्छकादि । गोज्जो-नटः । पढिउमावाहेइ-विद्यां परावर्तयति । न वहइ-न भवति । 'गोयारिया' एतत्प्रत्यन्तेन । 'वंजणसंजोगा व्यक्त' इति । पञ्चमी ज्ञेया । 'दोसु माओ दुम'त्ति, दोसु पुढवीए आगासे च । 'कालिदावरणे भंगाण'त्ति । प्रथमद्वितीययोरित्यर्थः । 'घडस्स दंडादओ'त्ति । वैधर्म्यदृष्टान्तः । 'मासकणफोडिय'त्ति । वग्घारिया कण कुंडगा तिउंडेरा । मोयं-मूत्रं । सहोढः-सलोडः । वल्लिकरं-तुम्बं । समाहिसु-मत्तएसु । 'बुक्कन्नएहिं'ति घांटिकया । 'अणुक्करिसणवक्कं दट्ठव्वं'ति । अजघन्यमित्यर्थः, उत्कृष्टं पाराञ्चितं । 'चः अणुक्करिसणे'ति । अमूढदिट्ठीयत्ति यश्चकारः । 'पाहडिय (वाडहिय) संजइ'त्ति गर्भवती । निक्केइया-प्रसूता । अप्पाहेइ य-भणति च । कालियाए-रात्रौ । ईलएण-दात्रेण । 'मणोहिय अइसय अज्झयणा य'त्ति । मनःपर्यवज्ञानावधी । 'वाचाचावलफरुसपिसुणे'-त्यादि । वाचश्चापल्यादिषु प्रवर्त्तननिग्रहकरणं । मोणेण वासणंति ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

आसणमिति ज्ञेयम् । नसणं-न्यसनं । 'तणुगइकिरिय समिई' तनुगतिक्रिया ईर्यासमितिर्भवति । 'मायापवयण'त्ति । प्रवचनमातरः । वीरियं पि तदंतग्गयमेव' तपश्चरणान्तर्गतमेव । 'भट्ठ'त्ति-भङ्गं । 'वेयणोदीरणेवि अविचलत्तं' अविचलत्वं इत्यर्थः । अप्पज्जत्तगोत्ति । अप्पज्जत्तग' इति पाठे अपर्याप्ताङ्गोऽपरिपूर्णाङ्ग इत्यर्थः । 'सीअग्गि'त्ति । ईषद् विध्यातोऽग्निः कोऊ वा । कन्नसं-चेटांगुली । सत्तट्ठाणे-शत्रस्थाने । पिट्ठिमो-पश्चिमः । 'उवचारेणेव पंचमं अग्गं'ति भाष्ये । उपचारेण-पाठक्रमेणेत्यर्थः । प्रकर्षाद्वा कल्पनं-विरचनमित्यर्थः । 'सुयजियकरण'त्ति । कृताभ्यासाः । गंडी-काष्ठविशेषं । 'सीहकण्णपासाय'त्ति । प्रासादविशेषः । 'पट्ठकरणत्थं'ति । स्पष्टीकरणार्थं । उदकचलणी-गडुलकर्दमः । कम्मगंठी विरायइ-विद्राति । 'आयाराइ-निक्खेवदारगाहा गय'त्ति 'आयारे निक्खेवो' इत्यादिका । 'बीयगाहाए य आयारमाइयाइंति गयं' 'नवबंभचेर' इत्यादिगाथापेक्षया द्वितीयगाथयेत्यर्थः । 'स कत्ता तक्करणेहि पयत्तं कुव्वाणो तदत्थं कज्जमभिनिप्फाएइ'त्ति । स कर्ता कुम्भकारादिः, तक्करणेहि-मृद्दण्डचक्रादिभिः, तयत्थं-घटाद्यर्थी, कज्जं घटादिकं । पण्णवग आह-प्रज्ञापक आहेत्यर्थः । 'पडिसेवणं पडिसेवयती'ति प्रतिसेव्यं वस्तु इत्यर्थः । सेवत्थे-श्रयणीयार्थे । भयं-भज । 'अववायसहिए कप्पे ट्ठिय'त्ति । स्थविरकल्पे इत्यर्थः । 'अट्ठमो-संघयणभेओ' तत्त्वार्थसूत्रापेक्षया । 'अणेगवायामजोग्ग'ति । एकस्यैव व्यायामस्य योग्यां क्रियां । जं जत्थ खेत्ते अच्चियं-उत्कृष्टमित्यर्थः । 'कमोवण्णत्थाणं' क्रमोपन्यस्तानाम् । 'कहं? दर्पिकाया' इत्यादि । एतद्व्याख्यानायाह-'कहमि'त्यादि । 'पुव्वं जयणपडिसेवण' भणंति'त्ति । कल्पिकप्रतिसेवनं । 'जइणा असणाइकिरियपवत्तेणं'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

द्वितीय: खण्ड:

साधुना अशनाद्यर्थक्रियाप्रवृत्तेनेत्यर्थ: । तं च किं असंजमो' निर्वाह: । अग्गद्धस्स-प्रथमार्द्धस्य । सामते(सोमले)राणं-देशविशेषोद्भवानाम् । 'छेयमूलदुग' मितिभाष्ये, दुगं अनवस्थाप्यपाराञ्चितलक्षणं । 'गेहीओ साइज्जणा' अभिष्वङ्ग: । 'द्दरचोरा' घायगा इत्यर्थ: । 'चारिया-भण्डिया'हेरिका एकार्था: । 'विगिच्चमाणो' उत्कर्त्यमान: । 'संझोवासणं' प्रतिक्रमणं । 'वियडणं चरिमाए भायणाणि'त्ति । पादोनप्रहरप्रत्युपेक्षणायामित्यर्थ: । 'एगत्थपतिवायगोदाहरणाणं'ति । एकार्थस्य प्रतिवाचकोदाहरणानाम् । 'हत्थिणा पक्खित्तो' ग्रहीतुमारब्ध: । 'तहवि से लिंगं न दिज्जइ तस्स वा अन्नस्स वा' इति । तस्य गृहीतव्रतस्य, अन्यस्य-अगृहीतव्रतस्य । 'सण्हतंदुल'त्ति । श्लक्ष्णतंदुला: । 'एवचिरं थोविंधण'ति । इयन्मात्रम् ।

बोहिगा-मानुषापहारिण: चौरा: । 'छाणछिप्पोली वरिसोवट्टाविया' इति । छिप्पोली-छाणी, वरिसोवट्टाविया-वृष्टयवृष्ट-। खित्तादिनिमित्तं-ग्रथिलादिनिमित्तं । भूधरोव्वरो-भूमिगृहापवरक: । 'एस आदिसद्दो वक्खाओ'त्ति, 'दीहाइय' इत्यत्र 'कुडडमाई' इत्यत्र वा य: । 'उवहिनिप्फन्नं सठाणाओ'त्ति । लघुपणकादे: । 'उदसिभाविय-पोत्तया वा' इति, उदस्विता-तक्रेण भावितानि । वरणो-सेतुबन्ध: । संडेवगो-पाषाण: । आरपारमागमणं-अर्वाग् पारागमनम् । गवंगरसभायणनिक्केयणं-गोरसभाजनधावनम् । सलोयणो-शाल्योदन: । 'धम्मकरगाइ परिपूयं'ति । मुखनिविडबद्धगलनकेन अधश्छिद्रितघटेन यत् गलयते तस्य धम्मकरगपरिपूयमिति सञ्ज्ञा । 'पडिणीया-उट्टणं काउकामो करणं'ति, वाउलुगादि । विषोपयुक्तेतरभुक्ते-मोदकादौ भुक्ते । 'जोई-उदितं'ति । जाज्वल्यमानो वह्नि: । 'अगणीए छेयणगा निवडंति' वस्त्रपक्ष्मविशेषा: । 'असंपत्तो वा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

जाणुकोप्परेहिं'ति । वाशब्दात् प्राप्तजानुकूर्पराभ्यां जा भरए जाईत्ति भवति । 'सूलाइ तावेउ'ति । शूलादिकां व्याधिं तापयित्वा । विलेवी-जवागू: । 'तेण वा अप्पमाणे' अपूर्यमाणे इति भाव: । खद्धग्गिणा-प्रचुराग्निना । 'ते पुण लोए चुंपा(चोप्पा)लया भण्णंति' जालिकायुक्ता भित्ति: । तुंमु)रुली वंसुलीति प्रसिद्धा । 'सिय अभिप्पाओ' स्याद् इत्यर्थ: । सव्वरिवायस्स-रात्रिवातस्य । फिडिया-च्युता: । 'पयस्स चिरायणगाहापायस्स' चिरन्तन-गाथापादस्येत्यर्थ: । 'अगीएसु विकरणाणि काऊणं'ति । विकरणानि-छेदनानीत्यर्थ: । 'प्रयात: पंथे'त्ति । प्रयातुमारब्ध: । एलुगस्स-थलही । 'सिइ(मित्ति)फलगाण'त्ति । निश्रेणीफलकानाम् । 'अजयं परिहरंतो' भुञ्जान: । भत्तट्ठाइकरणनिमित्तं-भक्तार्थादिनिमित्तं । निवज्जंति-शेरते । भुइं ददंति भस्म इत्यर्थ: । 'भमकारि'त्ति । भ्रमरिका यासां गृहाणि भित्त्यादिषु दृश्यन्ते । 'न रयत्ताण विकप्पणाऽवस्थाप्ये'ति । न रजस्त्राणे निक्षिप्य निरीक्षणीया: । 'सहिणा सत्तुगा'श्लक्ष्णा: । ऊरणीया-ईलिका: । 'जइ उउवासासु संसत्तावि वसही पुव्वाभिहियपमाणेणेव असंसत्ता भवइ'त्ति । यदि ऋतुबद्धवर्षासु संसक्ता वसति: पूर्वाभिहितप्रमाणेनैव प्रमार्जिता सती असंसक्ता भवति तदा तावन्मात्रैव वसति: प्रमार्जनीया । 'अणंतरीयं पाउणिउं तहिं संकामेति'-अ(न्वं) तरवस्त्रं प्रावृत्य वाह्यसत्का: चटन्तीत्यर्थ: । 'पिउडं पुणं उज्झ' किञ्चिवं कचवरो गवादीना-मुदरोद्भव: । 'मज्झत्थपुरिसधन्नमवणं'मीयते धान्यमित्यर्थ: । सरिसवावणं-युगपद्वपनम् । 'परिपूय परिसोहिय' सर्वमलापनीता-नीत्यर्थ: । वालुगं-कोटीभिडकं । डोंवेहिं-मिंठिलेहि । गोद्दहा-नटा: । 'पयंगसेणा इव भूबिलाओ' यथा पतङ्गसेना भूबिलात् निर्गच्छति । तेणम्हि उच्छित्तो-तेनास्मि उत्त्रासित: । तिलचलणी-तिलपङ्क: ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

द्वितीयः खण्डः

मासपायवे-मासपादपे । धाराधरणट्ठयाए-गङ्गाधाराधरणार्थम् । सामिगिहं-स्कन्दकगृहम् । 'बालगंते कुंडियगीवाए'त्ति बालगं-पुच्छं तदन्ते । महसेणं-स्कन्दकं । 'ओलंबियं' सिव्विते हारितं 'जंबुएहि छाएहि' बुभुक्षितैः । महिसिछिप्पा पुंछं । 'उदग्गभोयणमं डलि'त्ति उदग्रा-संपूर्णा 'परिवेस परिचियं' राहुणा ग्रस्यमानं । 'सहो-ढपच्चुत्तप्पयाणं'ति, सलोद्रचोरस्येव उत्तरप्रदानं । आमंति इत्यादिकं । दिसावहारं वा-शिष्यापहारं । भूमियं-थवियं । कुडमुहो-कंठओ । 'न खेत्तिएसु' परक्षेत्रिकसाधुषु । 'सामछण कोभत्त'मिति भाष्यवचने सामच्छणं-पर्यालोचनं । सिद्धपुत्तो-मुक्तव्रतः । 'देवद्रोणीं जाय'त्ति यस्यां पार्श्वस्थादयः अर्हतामादानानि भुञ्जते सा देवद्रोणी । जोगच्छित्ति । गिहत्थेहि-अधिकारिगृहस्थैः । आसुकारिणः-विनाशकाः । 'नकुलघादि ओषधं' नकुला-औषधी महिष्यादीनां घातापहरणार्थं दीयते । 'तच्चणिगि रत्तपडी' परिव्राजिका । 'साएज्झिया समोसइया' प्रातिवेशिका इत्येकार्थाः । तइओ नपुंसगवेओ-स्त्रीपुरुषाभिलाषलक्षणः । अणुठोभगो-ओष्ठहीनः । 'पुव्वभणियं तु कारगगाहा' इति, उक्तगाथेयं ज्ञेया। कम्मिवि निओए-आवसथे । 'न सुट्टुप्पगासे' अल्पप्रकाशे इत्यर्थः । 'सगो ताओ परिचएवि करिज्जा' निःसारयतीत्यर्थः । 'नीए वासे सेवेज्ज' स्वजनानित्यर्थः । 'खड्डाकुमा(सा)रो' इति । जत्थ पोल्लारभूमीए पाओ खुप्पइ एस कुमारः । अकालघायगो गरः । 'झरणे तक्कित-परंपरओ'त्ति, बिन्दुपाते मक्षिका याति, तस्यां घिरोलिका, तस्यां तु माज्जारी इत्यादिका ज्ञेया । 'सज्जक्खयाओ' सद्यः क्षतानि । 'उक्कोडुयं सूलं' कादाचित्कं । 'अग्गिए वा वाहिमि'त्ति, भस्मकः 'उद्दद्दरे सुभिक्खे' धान्यसंभृत कुशूले सुभिक्षे आपिवनं । 'अईयत्तीएहिंवा'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

इति, वाहनतन्निकारका मूलसार्थवाहेन नियुक्ताः। पत्थेवेदं गाहापुव्वद्धं भावेयव्वं' इति, 'एस गमो वंजणमीसएण' इत्यादिकः। 'अज्झपूरयं गिण्हउ'त्ति, आत्मपूरकं। 'भत्तमीसोवक्खड'' कचरि-प्रभृति। 'निम्मीसोवक्खड'' केवलमन्नं। 'अद्धाणकप्पभोयण' रात्रिभोजनं। 'उद्दाइयाए' मारीए। 'जहा गंडं पिलागं वा' इत्यादिगाथाव्याख्या – पिलागं – फोडिया 'विण्णवणत्थीसु–विज्ञापनास्त्रीषु। 'हा दुट्ठु कयं कारगगाहा' उक्तगाथेत्यर्थः। 'मूलं भवती'ति चारित्रशुद्धमित्यर्थः। सुद्धा पडिसेवणा अजयणाए निप्फन्नं पच्छित्तं भवती'ति शुद्धः पाठः। 'चुडलियं व (चुडलि) वंदणागारेणे'ति, उत्सुकमिवेत्यर्थः। कयलगमादी-कदलीफलादीनीत्यर्थः। वाडेन–वेगेन। पक्वतंबूलं–शटिततांबूलः। पत्थ पव्वयओ अपव्वयंतेसु य इति पाठः। विद्धि लक्खणं–जानीहि। 'तंतुगार–लोहगाराइ' इति। तंतुगाराः–कुविन्दगाः। ओमज्जणाइसु–उंजणादिषु। बिंबयं–बीबकमिति रूढम्। 'निलेवगाइ कायं निव्वत्तेइ' इति। निल्लेवगा–छिंपगाइणो ते कायं–पुत्तलिकादिकं बिम्बेन निर्वर्त्तयन्तीत्यर्थः। 'लाउनालो' बोंडी तुंबकनालमित्येकार्थाः। 'संजई वा मा हत्थकम्मं'–विटस्य योनिप्रवेशरूपम् आवरिसंतो–छटकादिदानेन वर्षन्त इवेत्यर्थः। उड्डंचगो–वञ्चकः। कांदर्पं–हास्यादि। विहिनिग्गया–अरण्यनिर्गता। साहीणभत्तारा–स्वाधीनभर्तृका। माउलदुहिया आभव्वा–आभजइजा इत्यर्थः। अप्फुन्ना–व्याप्ता। 'ववहारो वि तेणंति। राजकुलादौ व्यवहारः कार्यः। 'वाइयजोएणं'ति। वाचं वक्तीत्यर्थः। 'अभिसेगायरिय'त्ति, अभिसेगो–उवज्झाओ। 'अंतए दोवि गुरुगा'तपःकालाभ्यां। दोद्धियनालियं–तुंबकबिंटं। वेअमाइसन्नागा-श्राकुप्रभृति। परिसाडनिमित्तं–पडणनिमित्तं। 'ओमुत्तितद्धयं वा' सप्पादिमूत्रेण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

खरण्टितं । 'खयं वा'-क्षतं वा' । गंधं-वासलक्षणं । 'असंनिहियऽपरिग्गहेसु'-अपरिग्रहेषु । 'अड्डोकंतीए' गृहीतमुक्तन्यायेन । 'पायावच्चपरिग्गहे' पदातिपरिग्रहे । 'घरणिपुत्तो'-कुम्भकारः उड्डो वा । 'भोयगुग्गुलियाणं' भोताः-भस्मिकाः । सेहासिहेति लोकरूढा । काएण-काउडीए । 'आइमा चउरो' दंडादयः । 'मच्छियडोलाइ'ति, डोलाः-तिड्डाः । उक (उज्झं) खणी-सजलवाउली । 'अंतोबहि कसिण इयरं वा' इति, कसिणं-प्रधानम् अन्तः, इतरम्-अप्रधानं बहिः । पासगं बिलं-नक्कयं । 'धुयावणं' दव्वावेइ' मोल्लं । 'परिघट्टणं निमोयणं' बहिर्गतान्तर्गतवक्रमलाद्यपसारणम् । 'एकैकवचनं निगमनवाक्यमाहु' रिति । द्वार्यादिकमेकैकं न तु जघन्यादि । सुत्तद्धंति । चतुः-सूत्रेभ्यः सूत्रद्वयं व्याख्यातमित्यर्थः । किन्तु अपज्जत्तियं-लघु । मुद्दियाबन्धस्थापना यथा XXXXXXXXXXXXX । नावाबन्धस्थापना-WV । कुयवा-वरकोउ जटिलकंबलः । 'ओज्झाइयया परिहरिया'-दुर्वर्णत्वं परिहृतं भवतीत्यर्थः । 'रक्खाइसु' रवः-कणिका तस्या अक्षः-चालनिका । 'पयालणी कसा' तस्याः सेवनी । निभंगः-पट्टिया उद्दणी । दुक्खीला-पाणहसेवणी । पगखीला-वहंतसेवणी । गोमुत्ता-कंथाइसु । झसकंडा-खजूरी । 'विसरिया सरडो भन्नइ' गूंण सीवणी भन्नइ । अतज्जाएणं गंथेज्जा-सीवयेत् । 'घरधूमे सुत्तनिबंधो तज्जाइयसूयणट्ठा कओ' इति सूत्रे गृहधूमग्रहणं तज्जाइयस्स-कुष्ठस्य सूचनार्थं कृतम् । 'पाणगपुरीसं'ति, सुरापायिविष्ठा । पडियाणिया-थीगलं । फुंडयं संठवेइ-चुल्येकादशः । 'एष एव गतार्थो रन्धनकल्पेषु' इति, एवं स्थितार्था पूतिर्ज्ञातव्या । काले वासति-वर्षति । 'वग्घारियवुट्ठिकायंमि' प्रचुरवृष्टिकाले । उत्तणेसु-उत् ऊर्ध्वं तृणेषु । ओसाए-अवश्यायेन, विसुयावेइ-उग्गवेइ । 'पुव्वे अवरंमि य'त्ति भाष्ये, उत्सर्गपदे अपवादपदे च ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

भाष्ये-सिन्हाए ऊसाए । भाष्ये-उंडाय पमज्जंतेत्ति, रजोहरणाग्रेषु मलग्रन्थयः । उग्गमियं-लब्धं । पयडिमयं-नालिकेरिछल्ली । ‘सयण-समोसिगाइ’ समोसिगा-प्रातिनिवेशिकाः । ‘वक्ष्यमाणषोडशभंगमध्यात् अमी अष्टौ घटमानाः शेषा अघटमानाः’ । ‘आइन्न लहुसपणं’ गाहा इत्यादिकः सर्वोऽपि ग्रन्थः, एतद् भङ्गाष्टकं षोडशभङ्गमध्यात् लिखित्वा ज्ञेयं, तथाहि – (आचीर्ण-लघुस-कारण-देशः प्रथमः)

‘तृतीय	आ०	ल०	का०	दे०	शुद्धः		
चतुर्थपञ्चम-	।	।	।	।	१		। ऽ । ऽ ७ । ०
षष्ठभङ्ग-	।	।	ऽ	।	३	०	ऽ ऽ ऽ । १५ । ०
विपर्यासः	ऽ	।	ऽ	।	११	०	ऽ ऽ ऽ ऽ १६ । ४
प्रदर्शितः’	ऽ	।	ऽ	ऽ	१२	४	शून्यादिप्रायः
इत्यस्यार्थो	।	ऽ	।	।	५	०	चित्तानि

यथा-अष्टानां घटमानानां भङ्गानां मध्ये तृतीयः एकादशाङ्कयुक्तः । चतुर्थः द्वादशाङ्कसंयुतः । पञ्चमः पञ्चकाङ्कसंयुतः । षष्ठः सप्तकाङ्कयुक्तः ज्ञेयः । एतद्ग्रहणेन च तृतीयादिभङ्गानां विपर्यासः सूचितः । यतः तृतीयाद्या भङ्गाः षोडशभङ्गानां मध्यात् व्यतिक्रमेणाऽत्र लिखिताः । लहुसनिःपन्नौ द्वौ एकादश-द्वादशौ लहुसनिःपन्नभङ्गकसमीपे द्रष्टव्यौ । पञ्चम-षष्ठभङ्गकौ बहुत्वनिःपन्नौ बहुत्वनिःपन्नघटमानपञ्चदशषोडशसमीपे द्रष्टव्यौ इति सर्वगर्भार्थः प्रतिपादितः । ‘अंते वा’ इति, रोगावसाने । ‘किढियादि सड्ढिया’ वृद्धा । ‘खपुसा पद्राणि चक्रपातिका च’ इति, खपुसाशब्देन पद्रानि भण्यन्ते, चक्रपातिका च’ उपानद्विशेष उच्यते । अन्ये तु सर्वेऽपि भेदाः, व्याख्या पुनरग्रे ज्ञेया । इयाणिं पायच्छित्तं भण्णइ । ‘सगलकसिणं गाह’त्ति, चूर्णिः भाष्येऽ–

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पीयमित्थं न दृश्यते, एतदर्थसंवादिनी तु 'लहुगो' इत्यादिगाथा दृश्यते इत्यर्थः । कमणी-उपानत् । पद्कर:-चर्मकारः । तेणेहि ओदुब्भति-उपद्रूयते । 'समं मसिणं कलं मोडियं वा' कलं मनोरममुच्यते, मोडियं-मोटितं, सर्वेऽपि अमी समशब्दपर्यायाः । भाष्ये-'भावओ वण्णमाउक्कं' वर्णमृदुत्वे इत्यर्थः । भाष्ये- 'अङ्गुलजं पुव्वं' इत्यादिका प्राक्तनगाथालिङ्गना ज्ञेया । 'जहन्ने य मुलकसिणे तिविहे मासलहु'त्ति, मूल्यकिअं किल त्रिधा तत्रापि जघन्यके मासलघु इत्यर्थः । 'सकलकसिणे पमाणाइरित्ते' इति । द्रव्यकिअं किल द्विधोक्तं प्राक् । 'उवादाणं भवइ'त्ति, आजीविकोपायः । भाष्ये-'घट्टयसंट्ठवियाणं पुव्विं जमियाण'त्ति । घट्टियं निम्मोयणसंट्ठवियाण मुहकरणं जमियाण समकरणं । भाष्ये-नियएण पायलेहणी । 'चीरायरियाए'-वस्त्रचर्यया । 'जा न नियत्तइ' यावद्वसतो नागम्यते तावद्दशा न छिद्यन्ते । 'ओमाइसु केवडियहेउ'' रूपकहेतोः । 'जो गिहत्थो पाय गवेसाविज्जइ' स निजत्वेनान्विष्यते साधोर्यस्य च तत् पात्रमस्ति गृहिण' इति, न केवलं साधोर्निजत्वेन अन्विष्यते यस्य तत् पात्रमस्ति गृहिणः तस्याऽपि निजत्वेन अन्विष्यते इत्यर्थः । भत्तट्ठो-परिपूर्णं भोजनम् । प्रथमपादोत्तरं 'दाहामित्ति य भणिए' ज्ञेयम् । 'द्वितीयपादोत्तरमाहे'ति. 'तं केवइयं च केवचिरं वा वित्तिलक्खणं । 'नेकंतिउत्ति काउं' निकाचितमिति कृत्वा । 'कालदुगे तीताणि' मासकल्पवर्षाकालरूपे । 'ने वट्टइ' नोऽस्माकम् । 'प्रथम वयसि निविट्ठो' परिणीतः । 'निव्विसमाणो वा' परिणयनयोग्यः । कुथुंभरी-वेसणं । संताणट्ठया वा-संत्राणाय । सण्णीण दंसणत्थं श्रावकदर्शनार्थं । 'स्वतन्त्र अविरुद्ध'' स्वसिद्धान्ताविरुद्धं । 'जोभं'-मांसादिरहितं 'खुलखेत्तं'-घृष्टक्षेत्रं । 'पुइयघराओ' प्रातिवेशिकगृहात् । 'समिइमे' मंडकान् । आजीवकाः-गोशालकशिष्याः । वृद्धश्रावकाः-तापसाः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

'दारमपत्यादिसमुदायो कुल' मिति, कुलशब्दस्य व्याख्यानमिदम् । भाई-भार्या । सत्तुय ओयणकओ क्रयः । 'अह संजओ वऽलद्धिओ' अलब्धिकः । 'अह भद्देवि एस कमो' अभद्रे इत्यर्थः । उड्डं-चकादयः-ऊघटाः । 'भारडुंदुओ' भराक्रान्तः । 'मायामंडली' मातृमंडली-भोजनमंडली । 'सरीरसंहियाए' शरीरसत्कारे । 'ओमच्छगपरिहाणीहिंडियाण' अष्टुमछट्टेत्यादि-क्रमेण हिंडियाण इत्यर्थः । ताहे 'सखेत्ते' क्रोशपञ्चकमध्यरूपे । 'अवोच्चत्थं' क्रमेण । 'मूलभेदो गणो' प्रथमाचार्यविश्लेषः । 'कल्लदिणे सुत्तपोरिसिं काउंत्ति प्रभातसमये । 'जे सुविउं गया' स्वपनाय गताः । 'लाडाचार्याभिप्रायात्' मथुराचार्याभिप्रायेण । 'परओ राईए चिंता' अस्माकं अचिन्तेत्यर्थः । 'एए सव्वे एवंवाई' राज्यचिन्तावादिनो द्रष्टव्याः । जे पुण पढमाइपहरविभागेण असेज्जायरमिच्छंति तेसिं सुत्तत्थमणविणिग्गयाण' इति, कहं असेज्जायरो भवतीति योगः रात्रावग्रहणादिति भावः । 'रयणीए चउरो जामंत्ति, सेज्जायरो ज्ञेयः । 'ओलजायको' श्येनः । 'निसज्जणसंघंसणभया' पुतसं-घर्षणभयात् । 'सइकालं देक्खंति' सकृत्कालं वीक्ष्यन्ते । 'भारियं कज्जं' गुरु इत्यर्थः । 'एगंमि वा अणेगहा ठिए'त्ति, गृहे पुत्रादयो विभक्ताः स्थिता इत्यर्थः । निगडागणि मायाऽग्नी भाष्ये । भाष्ये 'जेठाइ व जइ व' इति, यावन्तः । समागा-मिलिताः । 'पिय-पुत्तथेरए वा' सरछोडगाहा अनतिक्रमणीयवचनेष्वित्यर्थः । 'किं वोऽसुभेहिं'ति, अकारो ज्ञेयः । 'तो वि से सो वज्जो'त्त, तथापि से तस्स सोऽर्द्धो वर्जनीयः । 'घरं पडिणीयं'-गृहं प्रति नीतम् । पट्ठिआ-दत्तप्रयाणाः । 'कच्छपुडओ-जस्स कक्खापएसे पुडो स कच्छपुडो' । एगं कप्पागं ठविउ' नायकं स्वामिनम् । 'सद्दो निस्साए छुभेज्ज'त्ति, अणेसणीयं दद्यात् । उव्वाओ-परिश्रान्तः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

सन् । पच्चरेण-खीलियाए । 'सुत्ताइमगाहा गतार्था रवकेण दधिमंथनवदि'ति, मन्थानः चतुःकोणः, रवकश्चाष्टकोणः, यथा रवकेण दधि मथ्यते येन अनया व्युत्पत्त्या मन्थानको गतार्थं एवमेत्रापि गाथा गतार्था । 'अत्थेण निसिद्धं 'त्ति, निर्युक्त्येत्यर्थः । 'जस्स दालिओ न फिडिय'त्ति, राजयः । 'अओ वुच्चत्थं'- विपर्यस्तम् । 'उवाइणावेइ' स्वामिने न समर्पयति । उवरिसेज्ज- र्तिमिज्ज । भाष्ये-'धम्मकहा पणियलोभियं'ति, धर्मकथैव पणितं- पण्यं । भाष्ये-'सोउं हिंडणकहणं 'ति, विप्परिणामणं पि ज्ञेयम् । 'पज्जोसवणाकाले घेच्छामो' वर्षाकाले इत्यर्थः । अत्थो उ कारणे' इति भाष्ये इत्यर्थः। 'सत्तो य व सो विहु न तेन न निव्विसइ' इति भाष्ये, न निवारयति अपि तु प्रस्थापयतीत्यर्थः । 'सपरिक्खेवे ठियाणं' प्राकारादिवेष्ठिते स्थाने । 'उड्डाहविरुंभणे' हस्तादिकर्त्तने । 'यथा तत्र तेनाहड'त्ति-एवं इत्यर्थः । 'मीरा-मेराकडणं' कुज्जकरणं। 'सहीणे वा पडिचरिउं ' हरिउं । 'परिसीए कडाए' मर्यादया । 'संथारे घेप्पमाणे एगाणेगवयणे अट्ठविह भंगभयणा कायव्वा'

इत्यस्यार्थो-भङ्गरूपे तथाहि- 'सत्तमभंगे तइयभंगे वा' इति, बहुगृहस्थस्वाधीना यतः । 'आहारकं बीओ' बहुगृहेभ्यो मीलिताः। 'अणप्पिणणं संभवइ' बहुगृहसत्कत्वात् तासां विकरणं करिंति बंधादिछोटनं । तस्स निवेएइ स्वामिनः । 'अहो अकयन्नू' अकारो ज्ञेयः।

एकसा०	एकगृह	एकसंथार
।	।	।
।	।	ऽ
।	ऽ	।
।	ऽ	ऽ
ऽ	।	।
ऽ	।	ऽ
ऽ	ऽ	।
ऽ	ऽ	ऽ

इत्यष्टौ भंगा ज्ञेयाः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

'विहाइ निगयाण' अद्धाणे निग्गयाण। 'छेवइओ वा' इति, चौरः। 'नासाऽरिसाओ' हरिसो नासिकायां। 'निक्कयणं' पसवणं। 'दव्वओ वंजणजाओ' जातानि व्यञ्जनानि कूर्चादीनि यस्य। वट्टंमि ठविज्जए वट्टो' इति, गोलकस्योपरि कथं गोलकः स्थाप्यते?। भूणगस्स-पुत्तस्स। 'अहवा उउवं उगिण्हई'ति, आर्त्तवं। तच्च 'तनुपर्यन्ते' पर्यन्ते तनु-सूक्ष्मं कार्यं। 'मा उब्भूया जणहास'त्ति, वातेन उत्क्षिप्ता। 'खलुगो' संखोडओ। 'उभयवेयच्छिनिकाइयाए' इति, वैकक्षमुत्तरासङ्गः, उभयपार्श्वे उत्तरासङ्गनिबद्धया। 'सव्वो वेस उवही' वेष इति सम्भाव्यते। 'गणं पीठगं'ति, त्रेहवत्यां भूमौ वर्षाकाले वा ध्रियते संयतीभिश्चाभ्यागतसाधुनिमित्तं। 'निसेज्जा ओन्निया खोमिया य' निषीदनार्थं। 'दंडपमज्जणीय' दण्डकपुंछनाभिधाना। 'वाले'त्ति, वालः कम्बललक्षणः। 'सूई' तालपत्राणां पलाशपत्राणां छत्रं वंशमयं। 'कुडसीसगछत्तयं सिखिन्निखुंपकं'। 'संनाहणट्टो' दोरिया ज्ञेया। 'उड्डाहपच्छायणवारओ' जलवारकः। 'अहऽभत्तट्ठी' अकारो ज्ञेयः। 'वत्थं अंताओ'त्ति, वस्त्राञ्चलान्। 'तओ अंतो निसेज्जा' सूत्रमयी 'बाहिरनिसेज्जा' पादप्रोञ्छनरूपा। 'चरिमाए पडिग्गहं'ति, प्रथमपौरुष्याः चरमा इति सञ्ज्ञा। 'दात्रसंधी' कार्त्तिकमासः। 'दोसु वि मीसेसु परंपरे लहुगुरुं पणगं' इति। दोसु वि मीसेसु परंपरे लहु अणंतरेसु दोसु वि गुरुपणगं'। 'अट्ठसु जोयणेसु मूलं भिक्खुणो सपयं' मूललक्षणं सपदमित्यर्थः। 'उवज्झायस्स चउगुरुगाओ अट्ठसु अणवट्ठो' इति, उपाध्यायस्य चतुर्गुरुकादारभ्य अष्टमे स्थाने अणवट्ठो भवतीत्यर्थः। 'आयरियस्स छल्हुगाओ अट्ठसु चरिमं'ति, आचार्यस्य षड्लघुकादारभ्याष्टमे चरिमे इत्यर्थः। 'कावोडी संकाइ' एकार्थौ। 'अथंडिलाओ वा' अथंडिले इति ज्ञेयः। 'उव्वायस्स'-श्रान्तस्य। मयदंतिया मेती।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथचूर्णिपर्याया:

'अपत्तवओ' अशक्तस्य । 'तिक्खसंहिणधारं' ति, तीक्ष्णश्लक्ष्णधारं । 'चन्द्रार्द्धे' इति पादयोः । 'सुक तुंडे' इति हस्तयोः । पोमेगवां रोमे। 'पउमे' कुसुंभकिट्टिकायां । 'मंसूचिबुगे' श्मश्रूयुते ओष्ठे । 'उत्तरमाणो अच्छो रेणू वा' अकारो ज्ञेयः । 'संजया न तडफडेज्ज' इति नकारोऽयं । 'सीयाणं' श्मशानं । गिरिवडे छप्परे । 'मुत्तसक्कराए य' कक्कराभियुतं मूत्रं । 'महासड्डिया'–गर्द्दभी । 'विसुब्बावेइ वा इति–उव्ववेइ इति भणियं होइ । 'तत्थेव उत्तरं'ति, पीठोक्तसङ्कष्टे । खारतेल्लं–तिलतैलं । खाडाहडो–पिण्डिकारूप: । 'जंमि जोगे जंतणा' नियन्त्रणा । 'तक्काइ एगंगियं' आयंबिलं । 'पणिय विलेवी' जाउलिया । 'पच्चक्खाणे' ति, संवरणं । 'थूरलंभे' बहुलाभे । 'तस्य पूर्वं न भवतीत्यर्थ' इति प्रवेश इत्यध्याहारः । 'ण्हाणिया सोहगा' वेढा सोहगा' पट्टकरा–चर्मकराः । 'निल्लेवा'–रजकाः ।'अन्नत्थ अजुंगिया' अकारो ज्ञेयः । 'मोहत्तिया' यवधियककारिणः । 'सिम्भा' श्रान्ता । 'जावासिया' चारिवाहकाः । 'मोयगमाइयं' ति कदली । 'एवं आसोहपिच्छं' ति, हरितं । कडपूरेण उदरपूरेण। हिंगुदद्दरिय–हिंगुमिस्साई डरी । 'उल्लोएण' सामान्येन । 'अप्पायणट्ठा' स्फाईओप्यायी आप्यायनाय । 'नेक्कंतिओ' नित्यपिण्डः । 'सामिइमा' मण्डकाः । 'भत्तट्ठस्स अवड्ढं' भक्तार्द्धमित्यर्थः । एक्कं दिज्ज शोचेत । 'विवक्कराइदोसा' विपत्करा दोषाः । ससवत्तियं–ससऊकं इत्यर्थः । डिंडिमहेउ–गर्भहेतुः । 'पम्हुट्ठाइयाण भायणं' समर्पणं । अहिगरणं–भण्डी । 'संजमसारं ठवेउ' संथिलीकृत्य । 'वसहीए पुरोहडे' पच्छा । गणिणी–महत्तरा । अभोज्जा–अयोग्याः। 'पात्तीयंतेण पोत्ती'–चिलिमिलिसमीपेन । 'एवं सव्वेसु' पुत्तशब्दो योज्यः । इमं चिन्तन्ति संयत्यः । 'पन्नप्पइ'–नीरोगी करोति । किरियासज्झाए–क्रियासाध्यायाः । समोसियगो–प्रातिवेशिकः । 'गोवालकंचुको' गायत्री । जो ओतो–यत् ओजः–

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

सामर्थ्यं । 'सागारियासेवणा' लिङ्गासेवना । 'घाडिय' त्ति, मित्राणि । कणयं-नाराचं । 'अहं पि ते किं न भणिउ' काक्वा । 'विनाडिकाकारवत्' विकृतानाड्यो यत्र भवन्ति सा विनाडिका-अवगाथिका । निवेसणस्स-घरस्स । 'तेण गहियं' ति, तेन हेतुना सूत्रे गृहीतं पासवणग्रहणं । 'जहा उच्चारे' जहा उच्चारे आयमणं न तहा पासवणे । 'विट्ठलेहि' उच्छिट्टेहि । 'सव्वसाहुहि (सहु) समाणं' ति, सर्वसहस्य समानं यथोक्तं । 'स चेलओ' पृथक् कृतः । भाष्ये-'अलियाए सोहिकरणेण वा वि' त्ति अलिकान्यायेन पापं क्षीणमित्यर्थः । भाष्ये-दइवए-दैवः । भाष्ये 'तद्दिव-सितेविऽणट्ठा' अणट्ठा अकारो ज्ञेयः । पञ्चमोद्देशकस्य-यथा-पडच्छा-डगा-ग्रन्थभेदकाः । 'विलिएण देससव्वण्हाणं' ति खलिए जुगुप्सादिके । 'परियासिउं-वासयित्वा । सिहे-सिभे । 'पवहणं' वाचरणं । 'उड्ढोरगा' स्थूलजङ्घः । पडुं पत्तकउं । मंगयालीए दर्भतोरणं । 'विकरणमपि' अचेतनं । विचित्ता मुषिताः । भाष्ये 'उद्दरे' इति, कोष्ठादिगतं धान्यं प्रचुरमस्ति न च तेषां स्थगनमस्ति । भाष्ये 'पुव्वे अवरंमि य पयंमि' त्ति, उत्सर्गपदे अपवादपदे चेत्यर्थः । 'कलमापिका वंशदण्डवदि' ति । कलमाविका स्थानविशेषः । कायमाणमंडवा-कवाङ्ण मण्डप इति ख्यातः । 'पुव्वण्हे अपट्ठविए' स्वाध्याये । बहुकारा वाहारी । उल्लो-इयं-धवलितं । 'कुलिया कुडड' मित्येकार्थौ । 'सीतभरोसाय उज्झं क्खणी भन्नइ' त्ति । सीतभरो-जलकणाः ऊसाय ततः जलकणिका ऊसयुक्तो वातः लोके उज्झंक्खणी भन्नइ । भाष्ये 'अहवऽविसुद्ध' अकारो ज्ञेयः । अणिसेज्जं-यो निषद्यां गुरोर्न करोति । 'एगट्ठ भोयणं' ति, सह भोजनं एगट्ठा इत्युच्यते । ओसवणा-उपशमनं । परियट्टंति-सूत्रं परावर्तयन्ति । भाष्ये' बारस य चउव्वीसा' इत्यादिगाथायां द्वादश द्वाभ्यां गुणिताः चतुर्विंशतिः, द्वादश त्रिभिर्गुणिताः षट्त्रिंशत्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथचूर्णिपर्यायाः

इत्यादिका भावना कार्या। तुट्टाई तुदाता सिंसवादि शिंशपा। 'रयण-हरणं दंडियं' वृत्तां, 'सविंटं वा लाउयं' सवृन्तं तुम्बकं। 'सङ्कठीयरो' भागिनेयः महागिरेः। 'कोसंबाहारं' कोसंबदेसं। 'साहूहि वि सिट्ठं' कथितम्। 'अंधा दमिळा य' देशविशेषाः। 'ओयविया' साधिताः। 'रहागुज्जाणे' रथयात्रायाम्। वइदिसा उज्जेणी। 'पूइया' कंदोइया। भेतुं' भंजिऊणं। 'पोरुपमाणं' अंगुष्ठपर्वणि अङ्गुलिकायां दत्तायां यत्स्यात्। 'उंडया' मलग्रन्थयः। अणायचज्जाए–अज्ञातचर्यया। 'जलहर पलंबणे' ति, दंभावा। वाहिरनिसेज्जाए' ति, उपविशन् पादपुञ्छनेन। 'अवसव्वाइ' ति, अपसव्यादि वामावर्त्तादीत्यर्थः। 'मुंजपिच्च' मित्येकं पदम्। अंचियं–पूजितम् 'आउग्गहाउ परेण' यत् हस्तेन न प्राप्यते। वलवा–वेसरी 'अड्ढोकंतीए' गृहीतमुक्तन्यायेन। सिज्झिलिया–गुरुभगिनी। पभायवरिसे प्रभाते वर्षे वर्षाविरमे। संजोगमवेक्खइ मुखोष्ठादिम्। 'आउस्सद्ध' सव्वाउ–वीसइभाग सहियं' ति। सर्वायुषांविंशतितमभागेन सहितम्। 'पाणाइणामलस्स' त्ति, पाणं। 'तंतुग्गयं' अभिनववस्त्रम्। 'गामिया' आरक्षकाः। नो पलिंधइ परिहइ। 'ओचूला' अवचूलाः। 'कायाणि' मणिप्रभारत्नतडागजलरक्तानि 'द्रुते वा काए' काचे। 'दुगुल्लाउ अब्भंतरहिते' इति, पूर्वोक्तात् वृक्षविशेषात् प्रधानपट्टसूत्रे इत्यर्थः। 'कोयवोवक्खोओ' वक्खा रूढा। पारसासंज्ञाः कम्बलाः। 'वग्घाइणं चित्तगचर्म्म' एकार्थौ। भाष्ये 'आहारमंतभूस' त्ति, अन्तर्भूषा इत्यर्थः। 'भल्ली–घरकहणं' यथा विष्णुर्भल्लिना हतः तादृशं च तीर्थमस्ति सोमनाथे। 'कूरचारगो' नाम राया संवट्टंतंमि उच्चाले। संवट्टे–नवावासे। 'कप्पुवरि' कम्बलोपरि। 'वारवारगेण' वेलया वारया। 'चडुगा' कमढगा। 'ओमेण' क्षुल्लकेन। 'तया विसाइणा' त्वचा। 'उद्दित्तगादि' पलीवणाइ। 'पडालीए' पत्राडीए।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

विकरणं-लवनम्। 'ईसत्थं' धनुःशास्त्रम्। 'उक्खंदो' धाडी। सप-च्चवायमागासे' यत इत्यध्याहारः। दारिट्ठं-द्वारस्थं। अतद्विया-भुक्ताः। 'नित्थरं' निरंतरम्। 'जाउप्पन्ना' जात्युत्पन्नाः। 'एगयरो-विए' एकतरभद्रके। 'अणुप्पए' अनुप्रगे प्रभाते। 'कप्पट्ठगस्स नियंसेइ' कप्पट्ठगे उवगरणपरिहणविहिं दंसेइ। 'पुरोहडा' छिंडी। 'लोयकरा' ण्हाविया। 'आउज्जोवण वणियाइ' त्ति अप् उद्योत वणि-जादयः। 'मुइओ' जातिसुद्धो। 'निभमेत्तं' निम्मं। भाष्ये 'पडिणीयउ गिहीणं मल्लियइ गिहिं व आणइ' त्ति, प्रत्यनीकसंभवे गृहिषु संश्लि-ष्यते गृहस्थो वा आनीयते। 'दिव्वे देहजुए' मनुष्यादिशरीरं मृतं व्यन्तराधिष्ठितम्। भाष्ये-'निवसंसी' नृपस्यांशो भागः। निवनीस-सामन्नो-नृपनिश्रासामान्यः। 'उच्छुड्ढ' त्ति, क्षिप्तानि। रण्णो वाऽ-विइए-अविदिते। उज्झाइओ मि-मलिनोऽस्मि। 'विलेवा विरोहि' रव्वायाः विरोधि। पोग्गलं-पिसितं। भाष्ये 'उव्वा (रुचा) ऊ पढमदिणे बिइया एगेसि तो पंच' इति, एकेषां मते पढमदिणे उव्वाओ-श्रान्तः तेन द्वितीयादीनि दिनानि गृह्यन्ते ततः पञ्च जायन्ते इत्यर्थः। उइ-क्खंति-पडिक्खंति। 'अकयदारसंग्गहा'-(अ) कृतदारसंग्रहाः। 'बृहत्तरा रक्तपादा-वट्टा' मार्गात् बृहदन्तरा रक्तपादाः वट्टा जन्तवः भण्यन्ते। मार्गात् अल्पान्तराः (अल्पतरा) लावगा उच्यन्ते। सिलोकः-श्लाघा। 'वरमम एयाओ आयड्ढा भावियाओ' इति, आत्मार्थमद्यापि अभाविता अतस्तासां विश्वासार्थं मलिनवस्त्रा व्रजति। 'भोइय घाडिय' त्ति, भोगिका-ठक्कुराः घाडिया-तन्मित्राणि। 'घट्टेमो निच्च उवरिं' दीर्घा वयं इत्यर्थः। अकण्णश्रुतेन-अश्रुतेनेत्यर्थः। 'हि (तादि) त्ति' न याणसि तुमं हियमहियं वा इत्यर्थः। भाष्ये 'अम्हे खमणा न गणी' ति, क्षपका वयं न गणयः। 'अल्लगफलाइ वा' कुभारिपत्राणि।'दव्वाहा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथचूर्णिपर्यायाः

थणु आहियं जीवा आरांविया' इति पाठः। भाष्ये 'तज्जाइएण' तज्जातदोषेण। अब्भुच्चओ-अतिसंस्करः। अमणुग्गइया पच्चोणी निग्गमणं एकार्थाः'। 'आसियाविओ' हृतः। 'आत्मान्तेन' आत्मसम्मुखम्। वच्छओ विवाहेंडलो' भयालुः। सपच्चवो-सार्वज्ञः। 'तहावि साहू'-भव्यम्। 'जे पढमिल्लेसु तिसु भंगेसु अव्वत्ता तिण्णि भणिया' इति, आश्रयणीयचतुर्भङ्ग्यऽपेक्षया एषां प्राथम्यं न तु स्वस्थानापेक्षया इत्यर्थः। 'ओहाइयं' त्यक्तलिङ्गाम्। 'तम्हा असंविग्गेसु न निक्खिवे' अकारो ज्ञेयः। 'मुयमायडिंभयं' ति, मा मृतमातृडिम्भक इव। भाष्ये 'न मे गुरू सो उ' इत्युल्लेखेन स्वयमपहारः स्यात्। चंडिओ-हेरिकः। विफालिए-पृष्ठः। हिज्जो- प्रभाते। 'एवंकुणं कोट्टि' एकार्थौ। विइउं-वेदयितुम्। अपोहंत-अपहुवंत। 'जाइसरणं' जातिः किमिति न स्मारितेत्यर्थः। भाष्ये 'समीखल्लएहिं' खीजडिपत्रैः।...मच्छियं आलोच्य। 'अवहडो' असारः। अत्र 'गण असंभोइय' त्ति, अकारो ज्ञेयः। बारसाहाए' द्वारशाखायाम्। 'पच्चाओसे' प्रत्याक्रोशेत् 'साहाणुसाही' महाराजः। 'आकोप्यमाणं' आकोप्यमज्ञां (मान)। पहिदुगदेसं-पादचारदेशं। लत्ताहि य-पट्टुयाहि। 'गीओमहं' ति, गीतार्थोऽहं। अरुहा जोग्याः। 'वट्टमाणिं' वार्त्ताम्। घट्टिंतेसि त्रिभिः। 'नाए' ज्ञाते। 'अंचियकाले' दुभेदे। 'माज्जियकूरं' सिक्खरणि कूरां। 'एणावेइ' ढौकयति। 'तेवत्थेण' पात्रेण। तिसु लहुगो गुरुगो' त्ति गतार्थमिति, एतत् गाथापदं व्याख्यातप्रायमित्यर्थः। अह उड्ढेण अट्ठ घरय तिरियं चउरो इत्यादिकाया ग्रन्थपद्धतेर्भावनार्थं यन्त्रकमिदं लिखितं ज्ञेयम्। तिसु लहुओ गुरु एगो तीसु य गुरुओ य' इत्यादिगाथार्थो यन्त्रके भावनीयः। 'लहुगो गुरुगो मासो चउरो लहुगा य हुंति' इत्यादिगाथापि यन्त्रकात् ज्ञेया 'आयाणस्स' आद्रहण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

जयण	उग्गा. १ शु	सु. २ [illegible]	विगि०३ २०	आइयण २७॥
अलयण	२७॥	२७॥	७॥	३०
पत्तमू	३०	३०	३०	४
अपत्तमू	४	४	[illegible]	४।
दुजायण	४।	४।	४।	६
छउजं०	६	६	६	६।
अट्ठजं०	६।	६।	६।	छे०
बारजं०	छे०	मू०	ऽनन०	पा०

स्य आवज्ज न य पच्छित्तं' आपिबेत् न च प्रायश्चित्तं। 'निब्धेमवुद्धीए' निःकाशनबुद्ध्या। अन्येषामर्थपौरुष्यां शिष्यं व्यापारयति इत्यर्थः। 'अत्थपोरसीए सीसं वावारिन्त' इत्यस्यार्थ हि। कप्पागो-अनुष्ठानकारापकः। 'मायाणुयवांद्दसरिच्छा' अज्ञाः। 'अणाभट्ठं' अमभिगयं। 'उच्चउण्हे' उच्चे दिने। अहद्दे........यगे वा अद्धसीसी। भाष्ये 'मइलकुवेले' इत्यादि गाथायां साणा-मन्दपाशो नरः शुष्क(फल)पादो वा। काणिट्टघरे वा...विते इत्यर्थः। चोप्पगसमीवाओ-हेरिकात्। 'तवस्सिणा वि गव्वं' तपस्विनोऽपि गर्वम्। केयगा-रूपकाः। 'मइ भत्तं' मूल्यम। 'सूयगेहिं' पिशुनैः। अहिन्नवसा खली वंझा वा' इति, खलीव खडीपर्यायः ततः अहिन्नवसाशब्देन च खडी वंझा वा उच्यते। 'पलालखेला' निःसारपलालम्। 'कइय' क्रयिकः। संगच्छावणे-द्रव्येण समाधिकरणे। कंटामद्दावणियं-धूलिछड्डावणं। चीरेण दद्दरिय-बंधित्वा। वमला-द्रम्माः। विंटा-देवकुलिकाः। थली-देवद्रोणी। आसाढो-पढमपाउसो मतान्तरेण भण्यते। भोमोदगं-भौमं जलम्। 'उब्भिज्ज-बीय-सावएहिं' ति कोद्रविया चूडइल्लाः तासां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

न्वर्थः । उवइगउद्देहिया । 'पडोयारो' परिग्रहः । 'सवीसइराइ-मासदिवसेसु' त्ति, सवीसतिरात्रिकदिनेषु इत्यर्थः । साहणं नक्खत्तं' भव्यं । 'चंदवरिसं' अनभिवर्द्धितमासं वर्षम् । 'अहिगमासगो पडइ' पततीत्यर्थः । 'गाहो' नरः । 'भाणगा' भंभिओ । सस्से-धान्यानि । 'हत्थप्पत्तावीभूओ' व्याकुलः । 'संभट्ठो' सम्भाषितः । 'अवज्ज' त्ति, अवज्ञा । 'आवकप्पे' आपत्कल्पे । भाष्ये 'अविगडियफलं' अनालोचितफलम् । सरसरस्स-अतिशीघ्रम् । असिएण-दात्रेण । डालीओ-राजिकाः । भाष्ये 'नवि सिंगपुंछवाला' इत्यादि गाथायां सिंगादीनि संस्थानानि । 'सुजवसनीरोगाया' सुचारितायाः नीरोगायाश्च गोः तानि रोमाणि न दृष्यानि 'सेसंगरुहाणि हाणीए' त्ति, शेषाङ्गरुहाणां हानिः ओढनं कार्यमिति गाथार्थः । वब्भामगा-हिण्डकाः । 'पदुप्पाइंति' पश्यन्ति । वासकप्पं-गल्लइकम्बल इत्यर्थः । 'समप्पावणियं' समाप्त्यर्थम । 'छिन्नाच्छिन्नद्धाण' त्ति, छिन्नः-परिमितः, अच्छिन्नो-महीयान् । 'भट्ठिमाइयासु' भट्ठिः रञ्जकद्रव्यविशेषः । 'वालिभद्दगंडियाए' त्ति, वृक्षविशेषः । 'कारणे न निग्गया' नञ् । 'उमंत्थग पणग' त्ति, पश्चात् । लट्ठकं-शोरम् । काहावणा-द्रम्माः । 'उब्भामगखेत्तं तंमि' त्ति, विहारक्षेत्रे । 'विहरंते चेव भायण' त्ति, विहारं कुर्वाणैः । पुव्वदारियं' पूर्वदिक्द्वारकम् । 'असिव अवणयणेण' अशिवापनयेन । कुवोसहाइया-कुपौषधादि । थलीसु-देवद्रोणीषु । 'खाउसयाए' बलिष्ठया । 'कोवेणयविइज्जा' कौपीनद्वितीयाः-कच्छोटकद्वितीया इत्यर्थः । 'पज्जालिय विज्झावणे' उज्झवणे । 'हारितिगराइणो' अपहर्तृराज्ञः । 'लोलगे काउं' निगोलकान् पिण्डकान् । मत्तगा वट्टाविया भृताः । 'अट्ठकुलवमेत्तसमियाए' कुडवमात्रकणिक्कया । भाष्ये-'उभयपगासो पढमो आई अंते य सव्वतमो' इति-पश्चार्द्धव्याख्या-उभयपगासो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

पढमो, यतः दिवा गृहीतं दिवा भुक्तं, द्वितीयो दिवा भुक्तत्वात् आदौ प्रकाशः, तृतीयो अन्ते प्रकाशः, चतुर्थः सर्वतमः सर्वान्धकारः रात्रौ गृहीतभुक्तत्वात्। 'विवित्ता' मुषिताः। चक्कय(ध)रा' दर्शन-विशेषः। 'अद्धाणकप्पाइ' मार्गोपकरणानि। 'पलंवाइविकरणा' फल-कर्त्तनानि। केवयादिडम्मा। 'आइत्तियाण' त्ति, जेसिं सत्थो आइत्तो ते आइत्तिया। 'नंदी-हरिसो' येन भक्षितेन शक्तिः स्यात्। 'लुंटागा' लूषकाः। भाष्ये-'कडवाला' गृहरक्षकाः। भाष्ये-घडा-गोठी। भाष्ये-अत्थारिया ल्हासिया 'तक्कितपरंपरा' भक्षकजन्तुपरम्परा यथा-मक्षिकाया गृहकोकिला तस्या मार्जार इत्यादिका। 'करडुगाइ' कारूवं। 'निवेयणचरुववएसेणं' ति, चरुः-पाकः। मुक्तव्याकरणवत् -तथाविधोच्छृङ्खलवाक्यवत्। 'जहा नितो जीवदयत्थं पमज्जइ जाव छन्नं' ति, यावत् छन्नम्-आच्छादितं उपरि स्यात् तावत् प्रमार्जयद्भिर्गन्तव्यमिति स्थितिः। 'गिहिमत्तसेवणे' गृहिभाजनसेवने। 'ईदृशप्रमाणस्य दूषणे न दोष' मिति, नञ्। 'पीहगाइ' स्तन्यादि। आवस्सगकरणं-पडिक्कमणं। 'अज्जा संकामितो नत्थि वुड्ढो असंको तो संकामिस्सइ त्ति, अओ पव्वावेंति' अग्रे अशङ्कः आर्या-सङ्क्रामको वृद्धो नास्तीति तो-ततः प्रव्राजयन्ति। 'समाउक्क' चोरवं। 'भूणिया' पुत्री। 'उवगरणोवघाए' जलधरोपघाते। थिवुयेहिं य-बिन्दुभिः। कंचिवो-नपुंसओ। वडुंवगो-वडहंडः। 'अपरिहत्थो-अदक्खो। परियट्टंति-धारयन्ति। 'कग्गिसंनिकरिसे विलयइ' अग्नि-समीपे विलीयते। भाष्ये-छेवगा असिवं। महुरकुंडइला-जातिविशेषः। भाष्ये 'कोट्टिवं' सिम्नम्। अन्नहा वि चारिज्ज ते उक्तव्यत्यायन। भाष्ये 'कण्हवण्णिया' महिसी। दोच्चविरुद्धं'-दौत्यविरुद्धम्। सेलुयं-भज्जिया। 'अइरुद्दो रसवीरियं' अतिरौद्रो रसवीर्यम्। 'सिज्झियाइसु'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथचूर्णिपर्यायाः

पाडोसिणी। 'सो वि पडिबद्धो' घाइओ। करग्गीव-करकस्य ग्रीवा। चक्कियादि-घंचिओ। झंझडिये अदीयमाने रिणे वणिएहिं इत्यर्थः। अवंजणजायं-अजातकूर्चम्। असाविए' अश्राविते। 'फासुगाहारं धरंति साधुमिति शेषः। 'साहूण निवेयाविज्जइ'-पवेयाविज्जइ। 'महव्वयं अइक्कइ' उच्चरइ। 'महव्वए सगिं कड्ढित्ता' सकृत्। संनिक्खाविज्जइ' पडिक्खाविज्जइ। 'पवज्जाए अलो'-समत्थो। पिंडाइ कप्पिओ'-भक्तादेशानयिता। 'अंबाइएसु फलेसु सुत्तं' आचाम्लं आछणं। सुंठीए गुलो-गुडसुंठीरित्यर्थः। 'बिहेलयहरितकी' बहेडक हरीतकी। 'सहसरुया'-सहसात्काररोगेण। 'विज्जूखायं'-विद्युत्कृत-गर्त्ता। एसकालं पडुच्च' एष्यत्कालं-भविष्यन्तम्। भाष्ये 'निस्स-ट्ठगलधरणं' तैलस्य। 'पढमबिइएहिं छड्डे' क्षुधापिपासाभ्याम्। कल्लाणयं-चक्रवर्त्तिभोजनम्। 'जोगं करेमो' योग्यं भोजनम्। भाष्ये 'समाहिए' समाधिनिमित्तम्। 'परिक्कोसो य जायणे' याचने क्लेशः। भाष्ये 'परिच्छिया' परीक्षा। भाष्ये 'मा तुर' मा त्वरितो भव। छिंडिउ बइल्ले काए' बलीवर्दं कापोतीं च। भाष्ये 'मज्झे दव्वे' मेधार्हं द्रव्यम्। 'समाहिकामाण उवहणिउं' ढौकित्वा। भाष्ये-ज्झुसिओ सेवितः। 'झोसिज्जइ' दीयते। 'नवतगजीणं संवरंति' प्रत्याख्यापयन्ति। विरुं-गिओ-कृतहस्तादिविनाशः। भाष्ये-'पढमे पगयं सिया बिइए-प्रथमे भक्ते कदाचित् द्वितीये पाने। भाष्ये 'निद्देसानिद्देसे' कड्ढि विकड्ढी। भाष्ये 'अणुलोमा पडिलोमा दुगं तु उभयसहिया तिगं होइ' अनुलोमप्रतिलोमोपसर्गौ द्वयं उभयसंयोगे निक्षिप्ते त्रयं स्यात्। भाष्ये 'पुरिसद्देसिणि कन्ना रायविदिन्ना ण गेण्हेज्जा' पादपोपगतं प्रकटशरीरं सलक्षणं वीक्ष्य पुरुषद्वेषिणी कन्या राजवितीर्णा न गृह्णी-तेत्यर्थः। कालासगवेसिओ नाम मोग्गल्लो' नाम शैलु। 'खइओ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

तिरत्तेणं' प्रहरत्रयेण रात्रेरित्यर्थः। 'बात्रीसमाणुपुव्विं' उपसर्गा इति शेषः। बत्तीस घडा' गोठीत्यर्थः। तन्नाईहि-वसादिभिः। 'मिगेसु य' अगीतार्थेषु। सापइ आस्वादयति। 'तस्सोवरि गंडपएसे' गल्ले। सुइमाणभेया-सकुमारभेदाः मेहायुगहण त्ति, मेधायुः। 'प्रमाणप्रमाणेन तिपमाणा' वक्ष्यमाणेनेत्यर्थः। 'उफोसणाइ' अभ्यंगो। उक्कुइमाइणा' उक्कुहियाइणा। 'आहारेइ-पंडुरोगाइ संभवे' खडियाइपुढवि आहारे पंडुरोगादिकं स्यात्। 'घंटिकरडाइ' करोडिया। 'पक्कभोमं' भाण्डम्। भाष्ये 'सव्वे वि लोहपाया, तसनिफन्नं' पुरुषैर्लोहस्य उत्पाद्यमानत्वात् त्रसनिःपन्नत्वं, पक्वभोमेऽपि त्रसनिःपन्नं पुरुषैरपार्यमाणत्वात्। भाष्ये 'वट्टखुरे य' तुरङ्गमः। दरभुत्ते-ईषद्भुक्ते। अवहे पाणिणं ति-अवहंते गृहिणोऽन्यासनग्रहणे प्राणिवधः। 'दारेण वा' द्वारेण। वई वा-वाडी वृतिः। 'अट्ठापदं देइ' परमार्थवृत्त्या वैद्यमुपदिशतीत्यर्थः। तस्संदिट्ठो-सामिसंदिट्ठो। 'चेलवंतीओ' हसन्त्यः। 'उद्दिक्खइ' पडिक्खइ ततो गृह्णातीत्यर्थः तृतीयादिषु न प्रतीक्षणीयं-नैव ग्राह्यमित्यर्थः। मुहकाणुयाए-मुखकाणिना। 'वियडं' प्रकाशः मंडवः। निक्का-कूलहः। करटः-काकः। धावेवाहियालीए 'भंसुरलाए' धूलहडी। 'गिड्डगाइसु' वडाइसु। बहुवरपरियाणं' वधूवरगमनम्। 'आसयंते' इत्यादि व्याख्यानं 'साइज्जइ' इत्यस्य। 'भारवियावडो' भारव्यापृतः। 'वडछल्लिमाई तुवरा' ताहितुवराः स्युः। 'लाउपन्नीहिं' तुंबकैः तृणविशेषैश्च। थामे-स्थाने। 'घाडिएण' मित्तेण। 'तरपन्नं' तरणपण्यम्। 'पासाणजलं' पाषाणजलम्। 'संडे वा' उत्तारपाषाणादयः। गारागारिसरिसगाणि' त्ति, यकाभिर्गृहं लिप्यते तत्सदृशानि। 'पाडिपहिय' प्रातिपथिकः। तं वेढावेइ-परिभावयति। 'पगाभोगेण' पकत्रमीलनेन। 'सगडमादेसेण' शकटादिव्यूहादेशेन। 'छिद्दगुडो' द्रव्यगुडः। सुत्ते

For Private And Personal Use Only

निशीथचूर्णिपर्यायाः

मज्जे' आचाम्लम् । 'अमणुग्गइयाइ' त्ति, पच्चोणीशब्दस्यायं पर्यायः संमुखगमनम् । 'थुसिउ–समोसिओ' पाडोसिउ इत्यर्थः । 'पण्णत्तो' नीरोगीभूतः । 'कण्हवेण्णा' इति वा भीम भीमसेनवत् । 'संकरजड-मउडे' ति, भावार्थोऽयं–चन्द्रयुतेन कृतेयं चूर्णिः । 'अइस' त्ति, सार्थतप्तिकारकः । 'आहारगसंखडीए' मीलनसंखडीए । 'उलंवगपायं' उद्धरितपात्रम् । 'जालागद्दहा' लूता । 'मंदक्खेणं' लज्जाए । कुलालं कुंडं । विट्ठाभट्ठा–परिचितः । गंमुणिगाइफला–ग्रामणी–तृणविशेषफलानि । 'मायस्स मुहस्स अवणयणं तुंवगगिरस्स । नट्ठं वा अडाडाए अट्ठमट्ठेग । 'मीराए' चुल्लीए । 'सोया तं करीसखड्डंमि मिलिया' श्रोत्राः प्रतिगर्त्ताः तां करीषखड्डां मिलिताः । 'वच्चंतस्स भंगरयण-भेया इमे–दिया गच्छइ पंथेण उवउत्तो सालंवो । एएहि चउहि पएहि' इत्यादिग्रन्थस्य 'अट्ठगचउक्कदुगएक्कगं च लहुगा य हुंति गुरुगा य' इति भाष्यगाथापूर्वार्द्धस्य च भावना एभिर्भङ्गैर्विधेया–'एवं बितीय अट्ठगेवि एगंतरा सुद्धा' इति षोडशमध्यात् । द्वितीयाष्टकेऽप्येवमित्यर्थः । 'बिइयतइयपंचमनवमेसु एकं संठाण पच्छित्तं भवइ' त्ति, षोडशानां मध्ये द्वितीय-तृतीयपञ्चमनवमेष्वित्यर्थः । 'छद्दिसिय' इति, ऊर्ध्वाधः पूर्वादिषु

[illegible]

	दि.	पं.	उ.	सा			
१	।	।	।	९ ऽ	।	।	।
२	।	।	ऽ	१०ऽ	।	।	ऽ
३	।	ऽ	।	११ऽ	।	ऽ	।
४	।	ऽ	ऽ	१२ऽ	।	ऽ	ऽ
५	ऽ	।	।	१३ऽ	ऽ	।	।
६	ऽ	।	ऽ	१४ऽ	ऽ	।	ऽ
७	ऽ	ऽ	।	१५ऽ	ऽ	ऽ	।
८	ऽ	ऽ	ऽ	१६ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गमनसम्भवात् विदिशिगमनस्याऽसम्भवात् एकपरमाणुत्वात् । 'पच्छाकडो जिओ' पराजित इत्यर्थः । 'वाजोगपउत्तेण' वाग्योगप्रयुक्तेन । 'डिंगरा–पायमूलिया' पाउलाणीत्यर्थः । 'विलंकेण' मांसेन । सोंडो–मद्यपायी । वाउलणा–व्यावर्त्तना । 'धिधिक्कओ निच्छूढो' धिक् धिक्

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

कृतः। 'दारुदंडयं पायपुंछणं' रजोहरणं दारुदण्डयुक्तम्। 'चियत्ताओ' रोचकाः। विसप्पियं' विकोपितम्। 'समिया' कणक्का। 'सुसियप्पएसियं' कणक्का सुषिता सती अप्रदेशिका जाता। 'चिंधियं' चिह्नितम्। 'उब्भामगं' पारदारिकम्। भाष्ये 'आणादिरसत्ति,' आज्ञादयः रसगृद्धिश्च स्यात्। इत्वराभिषेकेन आचार्यपदे अभिषिक्तः यः स इत्वराभिषेकः कियत् कालं यावत्। 'अज्झवपूरयं' उदरपूरणम्। उग्घाइयं-प्रासुकम्। कुसीलयाण ते-तव सत्कवादयितृणाम् असमाणो-असमीपस्थः। अभिओपज्ज-मंताहिट्ठियं करेज्ज। 'कप्पं काऊण' जलेनेति शेषः। भाष्ये 'अन्नट्ठवणट्ठ जुन्ना' अन्यायाः स्थापनार्थं जीर्णा। पञ्चदशोद्देशे पर्यन्तगाथाया अर्थो-मावासुतेन कृता चूर्णिः। यतः रविकिरणनाम भाः, अकचटतपयसा इति वर्गाः सप्तमवर्गान्ताक्षरो 'वा' इति नाम गृह्यते। 'पंचसयभोइ अग्गिणी' भोइ-भार्या। सप्तधारा नाम तीर्थम्। भाष्ये 'पुच्छअच्छीणि' मर्दय। निकाएइ-निकाचयति। 'दलियं' ति, शिष्यलक्षणं द्रव्यम्। 'सुहदुक्खावसंपन्नो' अस्मिन् ग्रामादौ सुखेन दुःखेन वा स्थास्यामः इति यो वदति। केणओ-ज्ञावकः। 'मग्गोवसंपन्नो' मार्गं यावत् सुखदुःखयुक्तः भवद्भिः सह यास्यामः। 'गुरुसज्झिलए सज्झंतिए य' इत्यादिगाथा-व्याख्या-गुरुसज्झिलओ-पितृव्यः, सज्झंतिओ-भ्राता, गुरुगुरू-पितामहः गुरुस्स नत्तू-पौत्रकः। 'माउमाया' इत्यादौ मातुः सत्का माता, पिता, भ्राता, भगिनीत्यर्थः। वंटगो-भागः। 'आयरियं अभिधारेउं' चित्ते कृत्वेत्यर्थः। 'खलुगो'-संखोडओ। गुलिगमाईहि-गुटिकादिभिः। 'एत्थ छत्तीसुत्तरसयदिवसे पारंचियं पावइ' त्ति। तथाहि-सत्तदिणे पंचलहु, ततः पञ्चगुरु, दशलघु, दशगुरु, लघुपञ्चदश, गुरुविंशति, लघुविंशति, गुरुपञ्चविंशति, लघुपञ्चविंशति, गुरु, लघुमासु, गुरुमासु,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निशीथचूर्णिपर्यायाः

चउलहु, चउगुरु, छल्लहु, छग्गुरु ततः चउगुरुछेओ, छल्लहुछेओ, छग्गुरुछेओ एतेषु एकोनविंशतिपदेषु प्रत्येकं सप्त सप्त दिनानि, ततः त्रयस्त्रिंशदुत्तरं शतं, मूलाऽनवस्थाप्यपाराञ्चितानां च एकैकं दिनं ततः षट्त्रिंशदुत्तरं शतं जातमित्यर्थः । पिन्नाओ–खलः । 'अणागओमासियसुत्तत्थेण' अनागत आमकालाश्रितसूत्रार्थेन सूत्रस्य तत्कालप्राक्तनत्वात् । मोरंडाणि–ककारगाणि । भाष्ये 'सप्तमाणि सत्तट्ठ' सप्तमं प्रायश्चित्तम् अष्टमं चेत्यर्थः । दुपुयं–चलम् । कुरिटो–मुण्डहस्तः । बाहुसीसं–स्कन्धः । कलाइण–कलाचिकाभिः । सोत्थियागारो–स्वस्तिकाकारः । भाष्ये 'तिन्नि कासिणे जहन्ने' इत्यादिगाथायां जघन्येन कल्पाः त्रयः, मध्यमाः पञ्च, सप्त पुनः उत्कृष्टा इत्यर्थः । वोसट्ठेणं ति । टकारपाठः । 'पढमदोचंगाई' प्रथमशालनकानि । वाहतेण–व्याधाः चाराश्च । 'सपडिग्गहमायाए' सुप्रतिग्रहकमात्रया । 'अगणिकाइयाणि' दग्धानि । 'वग्घारियवासं' अतिवृष्टिः । 'अव्वोगडो' अविशेषितः । 'दढसोहिएण' दृढसौहृदेन । वाताहरा(डा)–आगन्तुकाः । बहिफोडा–बहुभक्षकाः । परिसंथियं(पदसंधियं)–शीतलीकृतम् । दीविगा–आहारविशेषः । डिंडका–नर्तकाः । 'उभेऊणुत्तविहिं' उक्तविधिम् । उज्झिमिया–परिसाटिः । नायमाइणा–ज्ञाताधर्मकथादिना । एक्का निसेज्जा–आसनम् । उवाइणावेइ–लङ्घयति 'कप्पे वा उज्झियं' ति, वस्त्रे । पंच उस्सासकालियं–नमस्कारपदपञ्चकं चिन्तयतीत्यर्थः । 'भासो' त्ति सकुंतो–पक्षिविशेषः । 'ओमे न पुच्छइ' लघुः । पलिकुंचइ–अन्यथा कथयति । 'अदिन्नाए गारत्थिगभासाए' अगारभाषया तीर्थकृद्भिरदत्तयापि । 'वट्टं वोरं खुज्जा अंबिलिया' इत्यादि असम्बद्धवचनानि, न किञ्चित् सिद्धान्तमध्ये इत्यर्थः । मासथंबो–माषस्तम्बः । 'सतसाट्ठि चुण्णियाओय' चूर्णिता इत्यर्थः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

तीसाए तिहीहिं' अत्र तिथिशब्देन वारा अभिप्रेतः। 'तीसं तिही' वाराः। वसतुल्ला इति, बलिवर्द्दतुल्याः। 'मूलुत्तरगाहे' त्यत्र 'मूलुत्तर तह चेव य आलोयण नवरि विगडिए इमं तु' चूर्णि अनुसारेणायं पाठः सम्भाव्यते। छुडकिकंटकं-रिंगीणीकण्टकम्। 'इसिया कंडकं' सरवन्निसरः। भाष्ये-'सो हेऊ अत्तो जेणालियं बूया' इति, आप्तो येन अलीकं न वदेत्। सई नाम विशिष्टा शस्यसमृद्धिः। तिचउपण-अट्ठमवग्गे तिपणगतितिगक्खरा व ते तेसिं' इति, तृतीयः चवर्गः, चतुर्थः टवर्गः, पञ्चमः तवर्गः, अष्टमः शषसहेति, एतेषु यथासङ्ख्यं तृतीयपञ्चमतृतीयतृतीयाक्षराणि गृह्यन्ते जणदसरूपाणि, एतानि च 'तिदुसरजुएहिं' ति, तृतीयस्वर इकारः, द्वितीयस्वर आकारः, आभ्यां युतानि क्रियन्ते। ततो जिणदास इति नामायातम्।

। इति निशीथपर्यायाः समाप्ताः।

कल्पपर्याया यथा-निर्न(र्ण)य इत्यर्थः एतत् विभाषा इत्येतस्य पर्यायः। अथवाऽस्मिन्नेव गच्छाधिवासे। अस्मिन् कल्पाध्ययनवेदिनि। तं एगविहमेव भण्णइ न वि इति आद्यो पृच्छतो [ता] नवीति प्रतिषेधः। कुचिकन्नस्स तत्कथायामित्यर्थः। वयोगयं-वचोगतम्। 'साहुणो वि पवचंति' त्ति। मंसाया मांसाद्वा इत्यर्थः। आओदेसस्स-आहोश्विदित्यर्थः। कप्पोसियं-लौकिकं शास्त्रम्। मायारएहिं-इन्द्रजालिकैः। उत्तरज्झयणाणं तणगाणि-सत्कानि। शुक्तं-तीमनं। अणिव्विट्ठं-अनुपार्जितम्। डंडीया-मुद्रा। 'नवविहत्तवहारेणं' ति व्याख्या-गिम्हो लुक्खो कालो। साहारणो हेमन्तो। वासारत्तो निद्धो। गिम्हे तिविहो तवो जहण्णाइ चउत्थं, मज्झिमो छट्ठं, उक्कोसो अट्ठमं। हेमंते वि जहण्णमज्झिमुक्कोसे छट्ठट्ठमदसमाइ। वासारत्ते वि जहण्णमज्झिमुक्कोसे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

कल्प-पर्याया:

अट्ठमदसमबारसमाइं । इइ नवविहो ववहारो । सुयववहारो वा नव-विहो-गुरुओ गुरुतरो अहागुरु, लहुगो लहुतरो, अहालहु, लहुसो लहुसतरो अहालहुसो । लओ-संकुञ्चिताङ्गोपाङ्गः । किण्णु हु-किं इत्यर्थः । भाष्ये 'तारदूरे' त्यत्र अलङ्कारे । भाष्ये 'आवायं पुरिसेयर' त्ति । नपुंसकः । भाष्ये 'महजणणाए' त्ति, महाजनः बहवः साधवः यान्तीत्यर्थः । उंडियाए चेव-मुद्रिकैव लेखः । लहुं च उस्सारेइ-परावर्त्तयति । अस्थिचर्मशिलापृष्ठं वृद्धा-इयं वृद्धा अस्थिचर्मणोः शिलापृष्ठमिव । निद्देसदोसो-परपवित्तिदोसो । तोखाइ-तर्हि । ओहारपणं परमर्न्न-साधारणम् । संजूहो-ग्रन्थरचना । न मंदक्खं करेइ लज्जाम् । ओगाहणपाउ-यत्र तज्जलमानीयते । जाव न ताव उगाहइ-नायाति । तो ओगाहाए वि-आयातायामपि गच्छति । अव्वक्कालियलेवो-अव्वाक्कालिकः । सद्रवनिक्षेपपरिहारं इच्छन्तो-सद्रवं-सार्द्रं तस्य भूमौ निक्षेपो न कार्यः । 'परिखुत्थए त्ति काउं' जुन्नमिति कृत्वा । अतिच्छडाणं-अविच्छटितानाम् । भिगूहि राईहिं अमिओ-बहुः । भाष्ये 'छारेण अक्कमित्ताणं' ति । रक्षा उपरि दीयते जीवपातनिषेधाय । भाष्ये 'ओमत्थियस्स भाणस्स काउं चीरं उवरिं' इत्यादौ अधोमुखस्य भाजनस्य उपरि वस्त्रं दत्त्वा वस्त्रोपरि कर्पासतूलं दत्त्वा ततो लेपपुट्टलिका क्रियते । 'अलिंपिऊण भाणं' ति लेपपुट्टलिकया रसं क्षरन्त्या लिप्यते, पाषाणेन च वेलाद्वयं त्रयं वा घर्ष्यते, 'अन्नोन्नं अंकंमि उ' उत्सङ्गे 'रएउं अभत्तट्ठी' लेपयित्वा जलं गृह्यते । 'अभत्तट्ठियाण दाउं अन्नेसिं वा' इति लेपितम् अन्येषां समर्पयित्वा आत्मना हिण्डति । उविट्ठसाधोरभावे अरइयं-अलेपितं गृहीत्वा हिण्डति । संजमभूइनिमित्तं-व्रतस्फातिनिमित्तम् । छाणिय छारो-छाणाणां छारो चीरेण बंधिऊणं ततो उण्हे तापे उद्वर्त्तनादि विधीयते ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

'पत्ताबंधं अबंधगं कुज्जा' तिउणहाइणा गंठीए कइढीयाए जेण पत्तं सरिसं चेव जाइ तेण वज्जणिज्जा गंठी। अट्टगहेउं लेवाहिगं तु-लेपाधिकं तूलादिकम् अट्टकार्थं कुट्टनीयम्। वासाइसाणरक्खट्ठा-वृष्ट्यादिरक्षार्थं साणक(श्व)रक्षार्थं च। 'जुत्तिलेवो' कट्टकुट्टने। खंजणलेवो सगडे। चिरं आयारग्गपिंडेसणाए-पूर्वं आचारपिण्डेषणाः पठ्यमाना आसीरन् इयाणिं दसालियपिंडेसणाओ पठ्यन्ते। उक्कुट्टकुणं अणंतेणं-कुट्टितेन। लिखाओ-रेखाः। मालवतेणा-मनुष्यापहारिणः। संनिरे शाकपत्रे। केसिं चि नत्थि तीए ओहनिज्जुत्तीए-शय्यासूत्रं नास्तीत्यर्थः। उड्डंग-घटा। आएस-प्राघूर्णकाः। निक्कयणं-प्रसवनम्। 'विहाइ पावए अन्नं' विहाइ मार्गे। 'इति व नीय' त्ति, निजकाः। 'संसत्तंमि य छक्क' इत्याद्युत्तरार्द्धस्य व्याख्यामग्रेतनगाथया करिष्यति। भाष्ये 'आउज्जितो परिकहेइ' उपकरणे उपयोगं कुर्व्वन्। भाष्ये 'अच्छुलूढे जलणे' अतिरूढे। भाष्ये 'भय सेवणाए धाउ' त्ति, भज श्रिग् सेवायां धातुः। वीराणं पि नाढाइ-नाद्रियते। आणक्खेयव्वा-उपरि भावनीयाः। अविकूडत्तेहि-अविकुट्टद्भिः। पाकट्टित्तणं-अग्रेसरत्वम्। मंदक्खेणं-लज्जया। ततं विततं च-ततं ताणओ, विततं वाणउ। उफोसेज्ज-रोमाणि कुर्यात्। चडुओ पत्रडिका। ओलंबिया मात्रकम्। नामऽऽढयं-वाचक इति नाम्ना आढयं पुस्सालं वनप्रायमेतत् चिन्त्य पतत्। संभाइजेज्जा न पहुच्चेज्जा ताहे निज्जरावेइ-लोको ददातीत्यर्थः। उक्केलयं-ऊहियम्। अंबिलबीयाणि-अबिलस्य कारणानि ढुंढणकणादीनि। 'भद्दबाहोरपीति' भद्रबाहुसम्बन्धी सूत्रानुयोगः। नामनिष्पन्ननिक्षेपोपोद्घातेऽभिहितं पञ्चककल्पे इत्यर्थः। जस्सारकप्पिओ-यस्य उत्क्रमेण छेदशास्त्रभावाः कथ्यन्ते। भाष्ये 'तुरियं वाइज्जंते नेव चिरं जोगजुंजिया हुंति' त्ति, त्वरिते वाच्य-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

माने नैव योगतपः प्रयुक्तं स्यात्, महाशब्दश्च लब्धः, किं पश्चात् पठितेन। दव्वभिओ संविग्गो-द्रव्ये मृगः संविग्न उच्यते। पागणवाडवेइ-पठति। गरुडपक्खियं-पंगुरणविशेषः। नंदीए कड्ढियाए-नमस्कारे। 'नया वि ते सावहिंएहे' तेषामुपधिं न प्रत्युपेक्षते। 'भूयावायं न अन्नेजा' त्ति, भूयावादो-दृष्टिवादः। भाष्ये 'गुरुमाइणं कउण्ह' त्ति, सूरिवृषभभिक्षुक्षुल्लकानाम्। भाष्ये 'सुत्तं विल' त्ति, सुत्तं तक्रम्। 'आमे ताले तहा पलंबे य' त्ति, तालं अग्रप्रलम्बं पलंबे मूलप्रलम्बम्। मीरं मग्गइ सक्खी दोणि उच्छिन्नः। घाडियस्स-मित्रस्य। निवसणे-गृहे। साही-गृहपङ्क्तिः। भाईए-भार्यायाः। भंडी-गन्त्री। दाढारुवट्टाह-दात्रीभिः। आसियाइज्जइ-अपह्रियते। अग्गि सट्ठाणे-यत्र स्वतो ज्वलत्यग्निः निज्जामेण पडइ-निघातेन। अक्खेवपाह-हस्तपादनिक्षेपैः। संचिखऽत्तगवेसए' त्ति-संचिक्खसहेत। भाष्ये 'अट्ठगच्चउक्कदुयपक्कगं चे' त्यादिगाथार्थो-अट्ठगच्चउक्कादयो मिलिताः पञ्चदश षोडशस्तु प्रथमो ज्ञेयः। प्रथमरहिताः शेषाः त्रयो ज्ञेयाः प्रथमस्तु शुद्धः। 'भंगपमाणायामो' इत्यादिगाथायां भङ्गप्रमाणमङ्कगणनातः कार्यं, ततो भूमौ अक्षनिक्षेपः गुरुः लघुरिति न्यायेन ततः आरओ-पश्चानुपूर्व्या द्विगुणः प्रस्तारे निक्षेपः कार्यः इत्यर्थः। 'पयसमदुगमऽब्भासो' इतिगाथायामप्युक्तः। कुचणओ-लगुडः। भाष्ये 'परेण बलसाहिए' बलात्कारेण आहृते। पच्चोगराकओ-प्रत्युत अपकारकर्त्ता। गंडी-गंठमाला। 'इयरत्थ य निद्ओ छुड्डे' छुड्डे इत्यस्य छूढे पर्यायः। भाष्ये 'पव्वायसरछूय' त्ति प्रम्लानं अवद्धास्थिकं चेत्यर्थः। पउलिउंखायति-अग्निना दग्ध्वा। आदुक्कियं-छिन्नम्। सुत्तआसुरिमाईहि' त्ति, सुत्तं खायं। आसुरी-राजिका। 'भरतर्षभवदिदमपदिष्टं' इति। यथा भारते भरतर्षभ इति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पदं स्थाने स्थाने प्रयोजनाभावादपि प्रयुज्यते तथात्रापि राग इति, रागद्वेषयोः संतुलितत्वात्। गाजुइंगयाणं चाहं। 'सुंडओ' सुंडा-सुरा पेयमस्यास्तीति सौंडिकः। विलंको-सालनकम्। चिंभिडचन्निया-काचरीचनकाश्च। खारियगाइणि-लवणकरीराणि। 'पंचगव्वं वा दिन्नं' ति, मूत्रछगणदुग्धदधिघृतानि। सीसई वेव-कथ्यते। उठवेत्ता तं पएसं। शेषादिना शल्यस्थानं ज्ञात्वा। अत्थेण न कप्पइ भाष्येण। सुद्धज्झवप्पूरो द्रवः। तस्स सुद्धस्स अज्झवपूरयं गेण्हइ-केवलोदनस्य न्यूनपूरकम्। असइसग्गामे मिश्रोपस्कृतस्य। आलिसंदया-चवला। हरीयगा-मुद्गाः। हंसाईए तेनाहडं। भाष्ये 'अणुवासए' अनुपासकः। भाष्ये 'हवइ जओ' प्रयत्नपरः। तित्थस्स-प्रथमगणहरस्स। अतिंतियं-अनियन्त्रितम्। परंगियओ चेडरूवो-प्रचङ्क्रमणशक्तियुक्तः। निउयंइच्छइ निजोकः। पासाणेहिं जहा बावईएसु-वर्णधातुपाषाणैः। 'जइ तित्थयरो रूववं' ति, जइ-किं इत्यर्थः। आरं दुगुणेणं-संसारं रागद्वेषाभ्यां, पारं एगगुणेणं-मोक्षं संयमेन। 'आयरित्ताऽभविए भयणा' अभाविनि। 'कहयइ यऽभासियाणवि' अकारो ज्ञेयः। 'होइ जओ' परिचयः। वासावज्जविहारी-वर्षावर्जं विहरतीति। 'ण्हाणाइ-समोसरणे' इत्यादिगाथायां अट्टेत्ति आचार्योऽन्यं साधुं 'अट्ठे लोए परजुण्णे' इत्यादि कूटं सूत्रं पठन्तं श्रुत्वा प्रेरितवान् 'अट्टे लोए' इति पाठं भण इत्यर्थः। सिरपरियाय-शिरोर्त्तिः। इंदियजोग्गाय-रिओ-इन्द्रियसमाधिशिक्षाचार्यः। 'पुव्वि निसि निग्गमेसु' इत्यादिगाथायां पुव्वि गृहवासे विसहिंसु-विसोढवन्तः 'घोर य संगामे' ये च संग्रामे प्रविष्टवन्तस्तेऽपि सहन्ते इति शेषः। भांगजढे-निर्जने। द्वारकोष्ठाभ्यां बाहिर्भूतो देशः अलिन्दकः। तणुसायि-अल्पशायी। रोमं चुम्भेय-उद्वेगः। 'खामे अगणी उ केवलं' ति, अगणिनं-अना-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

चार्यम् । मज्जाररसियं-प्रथमं बृहत् ततो लघु । 'उवसंपयं च गिहिएसु' गृहिषु उपसम्पत्-वसतिग्रहणलक्षणा । उच्यते तदवस्थमेवेति, मम वचनमिति शेषः । स्वविषये शक्त्यपरिज्ञानात्, पूर्वपक्षवादिन इति शेषः । 'संविग्गा तिण्हट्ठ' त्ति वक्ष्यमाणायाः आयपरोभयगाथायाः पश्चार्द्धेऽवयवे संस्पर्शः । निक्खुरो निक्किट्ठो मोहेण य मुज्झइ त्ति वाक्यशेषः । अस्यार्थो उम्मग्गदेसणेत्यादिद्वारगाथोपात्ते पदे अयमध्याहारः कार्यः । केषु मुह्यते ? इत्याह-ज्ञानान्तरादिषु । संपिहणं-सप्रावरणम् । कायं दीहा मत्ता लक्खणगाहा इति अग्गहइ ति-ह्रस्वमपि अग्गहई ति दीर्घमात्रया व्याख्यातमनेन प्राकृतलक्षणेनेत्यर्थः । 'पूइयं कप्पए छट्ठे' भक्तवत् अस्य व्याख्या द्रष्टव्या इति शेषः । 'शरदादिर्भवत' इति शरत्-मार्गशीर्षादिरिति भगवत्याम् । 'विसं गरो वा दिज्जइ' विषं स्वाभाविकं, गरः सांयोगिकः । 'हरियपत्ती' भिन्नं पदम् । पिक्कछायं पन्नं-आपांडुरम् । 'सत्तवइयं पलावमित्तं भवइ' शिष्टा येन सार्द्धं सप्तपदान्यपि गच्छति, तेन सह मित्रत्वं कुरुते एतदसत्यं जातमित्यर्थः । 'वइयंऽणाए गए दिवसे' व्ययितं अनया । भाष्ये 'धम्मेण उ पडिवज्जइ' धर्मध्यानेन प्रतिपद्यते, पच्छा इयरेसु वि झाणेसु । 'अन्नेसु वि वट्टंतोऽतीयनयं वुच्चई पप्प' अतीतनयं प्राप्य । 'तुमंतुमा य कलहे य' त्ति, त्वं त्वमिति कृत्वा रटन्ति । 'वक्कइय' भाटकेन दत्ता । विक्कएण-विक्रीणीते । 'पडिच्छाहिगरण तेणे' त्ति, पडिच्छा-प्रतीक्षणं कार्यं यतीनाम् । 'तवसोसिय उव्वाया' इत्यादौ उव्वाया-श्रान्ताः 'खुलु लुक्खाहार दुब्बला' खिल-क्षेत्ररूक्षाहारकृशा । अप्पाइया-आप्यायिताः । 'विंटियउक्खेवणया' ओहिकासु-ऊर्ध्वीकृतासु । नो ओस्सप्पिणि नो उसप्पिणिकालो महाविदेहे चउत्थपलिभागश्च तत्र दूसमसूसमलक्षणः । वेओ तिविहो वि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पडिवज्जमाणए इत्यत्र छेदः। पुव्वपडिवन्ने। अवेओ वि इति छेदः। अविक्कितो हिडइ-अवक्रयन्। जया उवग्गाणि-निकटीभूता न। 'सुहुमकाइया' एकैक पुष्पाणि। 'तिगमाईया गच्छा' इत्यादौ त्र्यादयो गच्छाः पुण्डरीकस्य आसीरन्। 'संखुन्ना जेणंता' इति, संक्षुण्णानि मिलितानि अन्नाणि येन। 'अड्डागं पेच्छह' त्ति पुतलक्षणं गृहस्था भणन्तीति। उब्भज्जी विजउ काथिली एकार्थाः। विओविसूर-अस्तमने। ओयवियभोजनं-संसट्ठं। पिह सोयाणि-पृथक्शोचानि। पिउडुं-डज्झं। 'सेसएसुं च' त्ति। घए महुंमि मंसे ये अवयवाः। ग्घयघट्टा-तापितघृतकिट्टम्। सूमालिय-साण्ही। खो नु-वितर्के। मुइडुयरे-बृहदुदरः बहुभक्षको वा 'पडिणीए न ते जिणे' न ते साधुं जयन्ति। सज्जणं-मष्टीकरणन्। 'जत्थ साहुनिस्सा नत्थि' निश्रा-यथा-अयं प्रदेशो गुरूपविशनार्थमित्यादि। पिठंततंतूहि-अपानतन्तुभिः। फासुण विपाज्जओ-प्रासुकेन पायितः। सत्थुनिमित्तं-शास्तृनिमित्तम्। जीयमणुयत्ती जीतं-आचरितम्। भाष्ये 'सो पुरिसो तं वन्नं' तां वा पंक्ति अन्यां वा। निव्वेसगवुद्धीए-निःसारणवुद्ध्या। बद्धपलालिओ-बहुभाषकः। अत्थबोद्दो-आगमार्थमूर्खः। अह हिरिया नामंतओ-ह्रिया नमन् 'पन्नत्ते समाणे' प्रगुणीभूते सति। वाहिज्जंति कंटगमद्दावणं धूलिझाडावणं। भइए भणिया वृत्तिः। असइवेकणा कणिक्का। गिलाणनिमित्तं तो सन्नं-संकेतम्। लोगप्पायणं-लागप्रत्यायनम्। 'रोगविहि' त्ति, रोगविधिं वाचयन्। केवडिए-रूपकान्। भाष्ये 'सूयगा वा हेरिका वा भवेयुः। अंतरपल्ली-पर्यन्तपाटकः। वसभगामो-मुख्यग्रामः, पडिवसभा-आसन्नवर्त्तिलघुग्रामाः। भाष्ये 'पच्चंगिरो' सलोद्रचोरः। भाष्ये 'णंतनिमंतण' त्ति, नंतं वस्त्रम्। दुक्खणओ-व्याकुलः। सो य अंतोलित्तो मात्रकः। जमलमाइसरिसी-पुत्रयुगलमातृसदृशी। छुब्भं

For Private And Personal Use Only

कल्प-पर्यायाः

कमढए भागसुद्धम् । भाष्ये 'पुलएज्ज' प्रलोकयेत् । सामत्थं करेइ-पर्यालोचयति । परिवच्छेइ-उपधिं प्रगुणीकरोति । भाष्ये 'पालंक लट्टसागा मुग्गकयं च' इति, पालंक फलविशेष:, लट्टा प्रसिद्धा यच्च मुद्गकृतं । एतानि गोरसोन्मिश्राणि संसज्यन्ते । भाष्ये 'अविहाडं' असमर्थं निहद् । सद्दुलपोइयाओ-त्रासिता: । तण्णगाइं-वत्सान् । सज्जंति वाहिओ-वन्ध्या: । 'तलपन्नविय' त्ति, चप्पुडियाकालेण पन्नविया चक्करिया भण्यते । भाष्ये 'कस्सइ विराहणा' कूर(ल)वालकस्येव । दुक्खए अभेउ वा यउ कोसंसंनिधानेपि 'सगडालिमणो' थूलभद्रस्य मन: धीमान् । 'तह वीओ किं न हंभिसु' कूर(ल)वालक: इति गाथार्थ: । 'सइकाल' त्ति, भिक्षाकाल: । आवायभद्दओ-आगन्तुकान् प्रति भद्रक: । भाष्ये 'सेणाणुमाणेण' स्वेन अनुमानेन । अवेयवत्ताण-अपगतवाक्यानाम् । सभावओ उच्चो-थलो । खंडिओ छिडिओ । खुड्डियाओ रयेण ठायंति, अर्वाग् दिशि । 'आवण रच्छगिहे वा' इत्यादिगाथाया: 'सव्वेसु वि चउगुरुगा' इत्यादिगाथायाश्च स्थापनेयं-यथा-अर्थो यथा-सव्वेसु वि चउगुरुगं अविसेसियं ।

आपण	रथ्या.	त्रिक.	शून्य.	उद्या.
००	००	००	००	६ भि
४ी	४ी	४ी	४ी	
००	००	००	००	टी । ग
६	६	६	६	
००	००	००	००	छे । प्र
टी	टी	टी	टी	

अहवा भिक्खुणिमाईण इमा सोही-भिक्खुणीए एएसु ठाणेसु चउगुरुगं तवकालविसेसियं । छल्लहुए ठाइ । गणावच्छेइणीए छग्गुरुए ठाइ । पवत्तिणीए छेए ठाइ इत्यर्थ: । 'मुहदंत वासि' त्ति, विशिष्टो दन्तच्छद: । दिस्स-दृष्ट्वा । 'होसु णे' इति, अस्माकमभूवन्नीदृशा: इति काश्चित् चिन्तयन्ति । 'छिन्नाइवाहिराणं' छिन्न आदिर्यासां ता: छिन्नाद्या वेश्या: ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

भाष्ये-डोच्चं-डौत्यम् । पत्थारो-कटः । भाष्ये 'ढक्किंत वंगुरिं' ति, पिधीयमाने उद्घाट्यमाने च । भाष्ये 'अन्नतूहेण' अन्यतीर्थेन । भाष्ये-दव्वकरणं-शून्यक्रिया । कज्जं पडिप्पहइ-प्रतिप्रभवति-साध्यतीत्यर्थः । 'मा डहुंचपऊ घटा जत्थ हगं' गाहा न दृश्यते । उदए पडिज्जा गर्तायाम् । जूवओ नाम पीडं विटप् । इंदकुमारियाहि-पादुकाभिः । खद्धपेत्तिए-बृहल्लिङ्गे । तिविहपरिग्गहिए तइयादि पूर्ववदिति । अर्थो यथा 'चउगुरुगे' इत्यादिगाथोक्ततृतीयपदात् षड्गुरुकलक्षणादारभ्येत्यर्थः । उक्कोसे वि पूर्ववत्, अर्थो यथा-अपरिगृहीते ।६।६।६। छेदाः, परिगृहीते तु 'तवछेओ लहु' इत्यादिगाथोक्ततृतीयपदात् षड्लघुछेदलक्षणादारभ्येत्यर्थः । भाष्ये-दारट्ठा-डौवारिकाः । भाष्ये-पत्थारो-कटमर्दनम् । जीवियदोच्चा-जीवितभयात् । सो अणुप्पेहेइ-चित्तमध्ये परावर्त्तयति । अब्भा वासे वि अल्पवर्षे । उवगाणं-समीपागतानामस्माकम् । अवतासेज्जा-आश्लिष्यते । 'थेराइतिए अहवा पंचग पण्णरस मासलहुओ य' इत्यादिगाथायाः स्थापनात अर्थो ज्ञेयः । यथा-छेओ मज्झत्थाइ तु-मध्यवय आभरणप्रियादिषु छेदः पञ्चकादिविशेषितो ज्ञेयः । काथिके तरुणविशेषिते चतुर्लघु छेदसहितमिति

	मध्यव०	आभ०	कंद०	काथि०
थे।	छे ५	छे ५	छे ५	छे १५
म	छे १५	छे १५	छे १५	छे ०
त	छे ०	छे ०	छे ०	छे ५

गाथार्थः । चउत्थपयं तु विदिन्नं-अनुज्ञातम् । पुमंसमस्सिया जे उ पुरुषाश्रिताः । 'कयकरणे' करणं-सङ्ग्रामः । असामाणिओ-अप्रत्यासन्नः । निरायं-अत्यर्थम् । गुम्मासेडियग-वल्लिविशेषः । सेज्जायरचुंणिया-पुत्री । अरिठा-संकेतः । ममसल्ली-भार्या । आययठिया-संयमस्थिताः । सामाणिए भोयए-सन्निहिते । पडिणीयं च न पडिदेज्जा न प्रतिनीतं च न प्रतिदद्यात् । अवेसिए-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

अग्गलाए। उक्कुड्डाणि-प्रचुराणि। जहा कठस्स कथानकम्। पाएसु विचच्चिगा-विगिंचिया वाओ। करमोत्तीए गुरुव्वक्खडिया। खयकाई खंपओ। मिगपच्चयनिमित्तं-मूर्खप्रत्ययाय। वियडखोलाणि-धात्री-प्रभृतिछलुथः। कडपालए वा-गृहरक्षकान्। भाष्ये-समुदाणं-भिक्षाटनम्। कप्पासकाउं-कर्त्तयितुम्। भाष्ये-भिंगारेण न दिन्ना-भृङ्गारेण जलाञ्जलिपूर्वमित्यर्थः। अरिठा-मर्यादा। आसियावेइ-आस्वादयति। घंटिकरेसु-चाटकेसु। तेहि न हुं कज्जं भाजनैः। छेप्पो-पुंछडी। नीलीरागखसद्रुमाख्यानं, यथा-नीलीखरण्टितः शृगालः खसद्रुमनामाहमिति वदति, ततो नादं कुर्वन् ज्ञातः शृगालः इति विनाशित-श्चेत्यर्थः। दव्वायरिया-नामण-धोव्वणाइ-नमनधावनयोग्यद्रव्याणि। एयं अणागउमासियं भणियं अनागताऽवश्रितं भणितं संपइकथानकमित्यर्थः। अज्जाविओ-आज्ञितः। भाष्ये 'नंगलिपासएणं' मूलादौ वेष्टनं कृत्वा। भाष्ये कोव जंतयं पुव्वं' ति। कोपः, ततो यन्त्रे मां पूर्वं निक्षिप सूरिवचः। 'बंध चिक्कि' त्ति बद्धः-शोणेन उत्रेडितः। प्रथमोद्देशकस्य समाप्ताः। द्वितीयस्य तु-ना पंचकमित्यर्थः। दस ना-पंचदस इत्यर्थः। अथिरेसु थ-विंशतिरित्यर्थः। 'उस्सग्गेण निसिद्धा' गाहा इयं इतः स्थानान्नवमी ज्ञेया। भाष्ये 'तेणऽपियरक्खणट्ठा' अप्रीतिरक्षणाय। भाष्ये-'अवेइय हि एव' इत्यत्र 'अवेइय' त्ति अज्ञातपर्यायः। 'अव्वोगडो उ भणिओ' अव्याकृतोऽविशेषित इत्यर्थः। 'कास अगीयत्थ सुत्तं तु' कस्येत्यर्थः। निग्घोलियं च पलुं-रिक्तीकृतम्। अस्साए चउलहू प्रद्वेषे। किं पुण जा अतोया' प्रचुरशीतलोदकरहिताः। सपऊएसु-प्रातिवेशिकेषु। पुव्वलग्गं सोट्टावियं पाडिज्जइ' सोट्टावियं-उपरि स्थितं शुष्ककाष्ठम्। फेल्लो जाओ दरिद्रः। परिसाडणियावलिः। भुत्तसेसं पडिणीयं-प्रत्यानी-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

तम्। विट्टला जात्या दश विंशोपकाः। भाष्ये 'वणिए घडा वए चेव' इत्यत्र घडावए गोष्ठ्याम्। भाष्ये-किलिबोऽहवायं-क्लीबोऽथवायं। भाष्ये-'कडीवलुग्गे' कट्यां वातः प्रविशति। 'सीयाइ ज ो' साथेरि पूजा। 'जंते रसो गुलो वा' यन्त्रारम्भे रसं गुडं वा ददाति। ते ु चक्कमितेसु वा जंतू'-चाक्रिकेषु तैलं। समाप्ता: कल्पद्वितीयोद्देशकस्य। तृतीयस्य यथा-भाष्ये 'घोडेहि व धुत्ते ् व' घोडैः-चाटैः। भाष्ये-'सेज्जायर मामाए पडिकुट्ठदेसिए पुच्छा' एषां पृच्छा कार्या। 'वट्टक्खुरे संका' हये। दोच्चा जाया भयम्। भाष्ये-करोत्या इत्यक्षरैः वृत्तं सूचितम् अग्रेतनं, करोत्यादौ तावत्सघृणहृदय इत्यादिकम्। पाओ उ समाउक्को-समार्द्रवः। भाष्ये 'आहिच्छसे जंति न ते उ दूरं' अथेच्छसि यान्ति न ते दूरम् 'संखोभिया ते हऽवरे वयंति' तैः संक्षोभिता अपरे यान्ति। डिंडिया वाइया भग्नाचार्याः पकार्थाः। भाष्ये-कसिणा दुया दो-वलुगु व इत्यर्थः। भाष्ये-'भाणप्पमाणगहणे-भाजनप्रमाणे गेलन्नऽभुंज' अभाजने। भाष्ये वोसट्ठं पि हु' भृतमित्यर्थः। भाष्ये 'पूग-लसिगा पूयं रसिका च'। भाष्ये 'बज्झए तेहिं' पट्टकैः अरुगं-अरईयओ-निच्चोला-नित्यार्द्राः। वदे धिगहो-वदेत् धिग् अहो इत्यर्थः। भाष्ये-'असई अणंतगस्स-पणवण्णुत्तिन्निगा व न उ गिण्हे'। पञ्चवर्णादिकं न ग्राह्यमित्यर्थः। भाष्ये-जा उ विहिम्मिया सई सवच्चयामेइ' सापायातां 'मधुमुहे जणे' मिष्टभाषिणि। 'अणागए चेव सइकाले' भिक्षाकाले। 'वाजओ उ पराजिओ' इत्यादौ वणितः पराजित इत्यादि ज्ञेयम्। उज्झ ु चीरे' इत्यादौ मुञ्च चीराणि इत्युक्ते 'उच्छुरिया नडी'-आच्छादिता नदी 'दीसइ कुप्पासगाइहि'-कञ्चुकादिभिः। 'जा थणं पियई' यावत् स्तनं पिबति बालकः। 'केसि-सच्चईणं' ति। केशिः शुक्रसमन्वि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

तकेशेभ्यः समुत्पन्नः । 'नालबद्धकिढफासुं' स्वकृतेन प्रासुकेन च। अचथणिओ-मुक्तस्तनः । 'विइयपए न गेण्हेज्जा' विउग्गहणंतकं । असइए वत्थस्स । वाहाडिया-गर्भवती । उयह-पश्यत । वइयं नीयं च हसियं वा-व्यूतं नीतं वा हसितं वा । पडुयारो-उपधिः । भाष्ये 'समणस्स वि पंचगं भंडं' पञ्चभिः दीणारैर्लभ्यन्यतः श्रमणस्य भाण्डमुपकरणं स्यात् । भाष्ये 'दुओर ओलि य गेलन्नं' उदरवृद्धिः ग्लानिश्च । 'कारणिग पंच रत्ता सव्वेसिं मल्लगाईणं' कारणात् पञ्चरात्रं यावत् मल्लगादीनां ग्रहणं वर्षाकाले मध्येऽपि । 'चारणवारे वणीगं' ति । चारणसङ्घाते । 'असद्दहंतो कुत्तियावणाओ भूयं मग्गइ' इत्यादि कथायां भूतं मार्गयति वणिजः समीपे भृगुकच्छायातो नरः । तेण चिन्तियं कुत्रिकापणवणिजा । देमि भूयं ते पंचरत्तो कओ-कुत्रिकापणवणिजा पञ्चरात्रं याचितं ग्राहकसमीपे । तेण देवो पुच्छिओ-कुत्रिकापणवणिजा । उच्छापईहइ-छलिज्जासि । जाव नावलोएसि ताव तलागं भवइ' त्ति । भृगुकच्छीयनरेण अश्वमारुह्य पश्चादागमनमवलोकयता द्वादशयोजनान्याक्रान्तानि भूततडागं च तत्र जातमिति कथार्थः । उद्दुओ-भूतः । परिब्भट्ठया-परिव्राजकाः । निक्कारणे घेत्तुं जइ गेण्हइ-ग्रहीतुं न वर्त्तत इत्यर्थः । अहालहुसं पच्छित्तं-भिन्नमास इत्यर्थः । 'पच्छाअणेहि पवंतेहिं पि निग्गंतव्वं' ति । पभिः पवमानैरपीत्यर्थः । 'अणपुच्छा तिविह साहि नवमं वा' इति । जघन्यमध्यमोत्कृष्टरूपा त्रिविधा शुद्धिः नवमं वा प्रायश्चित्तमित्यर्थः । 'अणुण्हसंवड्ढिय कक्कसंगा गेण्हंति जं अन्ने न तं सहामो' इति । न तत् सहामहे यत् अनुष्णवर्द्धिताः कर्कशाङ्गा गृह्णन्ति । भाष्ये-'जालयाओ वाया लया इव कम्पन्ते । उभओ पक्खच्चओ घोरो' संयतीसंयतपक्षात्ययः । भाष्ये-'भाविणऽमहियमसुगाओ' अधिकं भावि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

अस्मात् वस्तुनः । 'भत्तट्ठिय-वोसिरिया'-भक्तार्थिनः सञ्ज्ञां व्युत्सृज्य । भट्ठणसञ्झाए-भक्तार्थने भोजने । अक्कंटगमणाई अश्रांतःपु गमनं धान्यस्य । 'फिडियऽन्नोन्नाऽऽगारण' त्ति । नष्टानाम् अन्योऽन्याऽऽकारणम् 'तवोवणं मूसिगा जं च' त्ति । साधु तप इत्याद्युपहासः 'मूसिगा जं च' त्ति यथा मूषिका भ्रान्त्वा भ्रान्त्वा स्वस्थाने प्रयाति तथा एतेऽपि वेश्यादिके स्थाने यान्ति । चिलीण सेहन्नहाभावा-अपवित्रं चिलीणं तत्र शिक्षकान्यथाभावः स्यात् । 'गमणे पत्ते अ इंते य' इति गमने प्राप्ते आगच्छति च । पुव्वठियाऽसइ-गच्छन्ति पूर्वस्थितानां साधूनामसति-अभावे । 'पुंछ चिलिमिली दोरे' इति पुंडाउंछणं चिलिमिली दोरकं गृहीत्वा गन्तव्यम् । 'कंचुक तह दारुदंडे य' कञ्चुकं-गात्रिकां कृत्वा दारुदंडगं-दंडाउंछणं च गृहीत्वा । 'असारियं चेव कहयंते' इति । सागारिकव्याक्षेपः कृतो भवति । इयरे गहियंमि गेण्हन्ति व्रतयः । 'भोयंति पक्कं न उ पक्कठेणं' ति । भोजयन्ति न दर्पिष्ठं दर्पिष्ठेन सूरह(व)गस्स सुन्हडस्स । 'ह णु दाणि अक्खमं णे' हणु एवं इदानीं अक्षमं नोऽस्माकं । तेण य ते अवणीया-तेन ते अपनीताः । दुवक्खरएणं-दासेन । निज्जरा चोच्चं-निर्जरा च उच्चैर्गोत्रं च । 'फाइ दोसो गच्छइ' स्फाति । सोयाई माणसा-मनोगुप्तिः । मज्झिमवंदणए-खामणवंदणए । 'सिंगं पुण कुंभगनिवाओ' इति शृङ्गं हस्तिकुम्भनिपतनमिव । 'जा दुचरिम त्ति ता होइ वंदणं तीरियं' इत्यादि याव-च्चरिमं साधुद्वयं तावद्वन्दनं देयम् 'आइन्नं पुण तिण्हं' कथं ? गुरोः साधुद्वयस्य चेति त्रयम् । 'मज्झिल्ले न करिती सो चेव करेइ तेसिं तु' मज्झिल्ले-क्षामणावन्दने रत्नाधिकाः न कुर्वन्ति वन्दनम् । 'जइ नामऽपूइओमित्ति वज्जिओ' इत्यादौ यदि नामाऽपूजितोऽस्मि इति वर्जितोऽन्यैः इति वि हु सुहशीलजणो-एवमपि सुखशीलजनः परिवर्जनी-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

कल्प-पर्यायाः

योऽनुमतिर्मा भवन्निति । जह न होइ से मन्नु-अपराधः । कुलाइकज्जेसु जहा अभिवायणे' इति । राज्ञा धिग्जातीयानां प्रणामकरणे । फेड्ड-(ट्टा)वंदणएणं-खमासमणेणं । 'व्रतसमितिकषायाणां आर्या' इति । 'व्रतसमितिकषायाणां धारणरक्षणविनिग्रहाः सम्यक् । दण्डेभ्यश्चोपरमो धर्मः पञ्चेन्द्रियदमश्च' इत्यार्या ज्ञेया । 'अकयमुह! फलयमाणय जा ते लिक्खंतु पंचग्गा' इति । हे ! अकृतमुख ! मूर्ख फलकं आनय यावत्ते लिख्यन्तां पंचग्गा-पञ्चाक्षराणि । 'संघियकड्ढणे' त्यादौ संहिता प्रथमं ततः कर्षणं । भाष्ये-'भइणिं अवतासितो' इति आश्लिष्यमाणः तं चेव मज्झ सक्खी' हे पच्चक्खमेव साक्षी । कीरई अच्चा-प्रतिमा, 'सच्चेव चिईकया छिंदउं' ति । सा चैव प्रतिष्ठिता प्रतिमा कृता मस्तकेनापि स्प्रष्टुं शक्यते । न पुत्रिपुत्ता-न पुत्रपौत्रकाः न उ विउत्ता-न पुनः वियुक्ताः । 'मंदक्खेणं न तस्स' त्ति । लज्जया । दिज्जंते वि तया णेच्छिऊण अप्पेमु य त्ति नेऊणंति । दीयमानमपि तदा अनिच्छुय अर्पयिष्याम इति ज्ञात्वा । मच्छा-गताः । 'दिन्ना भवब्विहेणे-व एस नारिहसिणे न दाउं जे' इति । णेऽस्माकं नार्हसि-न दातुमपि अर्हसि । किं पुण मन्नुप्पहरणेसु-मन्युप्रहरणेषु । जंतियकयं वा-यन्त्रितकृतं वा । असामाणियत्तणेणं न याणंति-अन्यत्र गतत्वेन । अखेत्ते-इंदखिलाइए, यत्र इन्द्रकीलादिकं भवति तत् क्षेत्रं न कस्यापि आभजने इत्यक्षेत्रमुच्यते । भाष्ये-'दट्ठुं व अचक्खुस्सं' अप्रियं । 'निद्दिट्ठसंनिअब्भुवगएयरे अट्ठ लिंगिणो भंगा' इत्यत्र निद्दिट्ठ-संनिअब्भुवगय इति पदत्रयस्याष्टौ भङ्गाः । माउम्माया य पिया भाया भगिणी य एव पिउणोवि । भायाइ पुत्त-धूया सोलस छक्कं च बावीसा' ॥ इति गाथाया अर्थो-यथा मातुः सत्का माता, पिता, भ्राता, भगिनी एते चत्वारः, पितुरपि चत्वारः इत्यष्टौ, तथा भ्रातुः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पुत्रः, धूया इति द्वौ, भगिन्या अप्येतौ द्वौ, पुत्रस्यापि एतौ द्वौ, दुहितुरप्येतौ द्वौ इति सर्वेऽपि षोडश पूर्वतनाश्च षट् इति द्वाविंशतिः। संगारः-सङ्केतः। अणुमोययइ सो हिंसं-स हिंसामनुमोदयति। 'निद्दिट्ठमणिद्दिट्ठं अब्भुवगयलिंगि नो लभइ अन्नो' इति अभ्युपगतलिङ्गिनं न लभतेऽन्यः। निंडुं वा-नश्यत्प्रसूतिका इशः। 'सा चेव उग्गहो खलु, चिट्ठइ काले उ लंदक्खा' काले तु लन्दाख्या भवतीत्यर्थः। सज्जालमालाचोप्यालं-शोभायुक्तं। सेफल्ला जाया-निर्झराः। उंबरियं घेप्पइ झुंपिया। तेण र सेणासुत्ते-तेन हेतुना रपूरणे सूत्रे सेनाग्रहणं कृतं। 'अन्नाए परलिंगं उवओगाइं तुलेत्तु' इत्यत्र उपयोगाद्वा यावत् अवधिं प्रयुञ्जयति प्रथममुत्पन्नो देवः तावन्न परलिंगं क्रियते। अणुसट्ठाईण अपडिसेहो- अप्रतिषेधः। 'ओहिकाले अईते' प्रथमोत्पन्नस्यावधौ। अन्नम्मि व पेज्जंता-पाययन्त पानीयं। 'सेलुय परिक्खइ-सेलुयं-वालमयी रज्जुः। (चतुर्थस्य) 'कुवणयमाई भेओ' कुवणओ-दण्डः। कस्स गच्छपए वणयं लद्धं शालनकं। 'पडिहाररूवि भण रायरूविं' इत्यादौ हे प्रतीहाररूप-हे प्रतीहार! भण राजरूपिणं-राजानमित्यर्थः। त्वां संयमरूपी द्रष्टुमिच्छति। यत्र नृपस्तत्र तं प्रवेशयति।

'एक्को य दोन्नि दोन्नि य मासा चउवीस हुंति छब्भागे। देसं दोण्हवि एयं वहेज्ज मुञ्चेज्ज वा सव्वं' गाथार्थो यथा-स्थापनातः-

आशातनापारंची	आशातना पा०	प्रतिसेवनापारंची	वहेत् मुञ्चेत् वे-
षण्मासेभ्यां म-	मा.	वरि.	त्येकगृहकार्थः।
ध्यात् षष्ठं मासं	६ मा-१	१ मा-२	द्वितीयगृहकार्थ-
वर्षमध्याद्वा षष्ठं	व.	व.	स्तु यथा-प्रति-
भागं मासद्वयल-	१ मा-२	१२ मा-२४	क्षणं सेवनापारञ्ची

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

कल्प-पर्यायाः

वर्षस्य मध्यात् षष्ठं भागं मासद्वयलक्षणं। द्वादशवर्षमध्यात् पुनः षष्ठं भागं चतुर्विंशतिमासलक्षणं वहेत् मुञ्चेद् वा इति गाथार्थः।

'अट्ठारस छत्तीसा दिवसा छत्तीसमेव वरिसं च। बावत्तरिं च दिवसा दसभाग वहेज्ज वा विइओ'॥ प्रकारान्तरेण अनया गाथया आशातनापारञ्ची प्रतिसेवनापारञ्ची च यन्त्रकात् ज्ञेयः। तथाहि-मासषट्कमध्यात् दशमभागे दिनानि अष्टादश। वर्षमध्यात्तु दशमभागे दिनानि षट्त्रिंशत् इत्येकगृहकार्थः। द्वितीयस्य यथा-वर्षमध्यात्

आशातनापारञ्ची		प्रतिसेवनापारञ्ची	
मा.		वर्ष	
६	दिन १८	१	दिन ३६
वर्ष		व.	वर्षमेकं
१	दिन ३६	१२	दिन. ७२

दिनानि षट्त्रिंशत् दशमभागे। द्वादशवर्षाणां तु मध्यात् दशमभागे वर्षमेकं दिनानि च द्विसप्ततिरितिगाथार्थः। 'तइयस्स दोन्नि मोत्तुं दव्वे भावे य' इत्यादौ सूत्रापेक्षया तृतीयः सोऽपि त्रिधा तस्य द्वे। एसमं केरिसं-अस्मिन् संवत्सरे। 'खड्डे गल्ले वा' खड्डे-कूर्चस्थाने। 'न तस्स गओ संभवइ' त्ति। तस्स आयरियस्स सत्थेसु नत्थि खेओ-परिश्रमः। 'खेत्तोवसंपयाए बावीसं संथुया य मेत्ता य' इत्यत्र द्वाविंशतिः पित्रादयः पूर्वोक्ताः मित्राणि च। 'चेइयघरे वा उवस्सए वा' इति। चैत्यगृहं यदि हस्तशतमध्ये स्यादित्यर्थः। भाष्ये 'तज्जाइयरे य संडेवा'इति। संडेवाः-पाषाणाः। 'लत्तगपहे य' इत्यत्र अलक्तकमात्रम्। जो छेवई तस्स छिन्नो वि' इति छेवइ अशिवगृहीतः तस्य छिन्नोऽपि उपधिस्त्यज्यते। दीहाइमाईसु उ विज्जबंधं इत्यादौ विद्याबन्धो विधीयते 'उल्लोयकडं वा पोत्ति' उल्लोचो बध्यते इत्यर्थः।

कल्पचतुर्थपर्यायाः-'अइढाइज्जा मासा पक्खे अट्ठहि मासा हवंति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

निःशेषसिद्धान्तविचार-पर्याये

वीसं तु' इत्यादि व्याख्या–दिने दिने पञ्चकवृद्ध्या पक्षान्ते सार्द्धौ द्वौ मासौ भवतः । पक्षाष्टके तु पञ्चकवृद्ध्या विंशतिर्मासा भवन्ति। दशकवृद्ध्या दिने दिने पक्षे चत्वारो मासा भवन्ति। पक्षाष्टके तु दिने दिने दशकवृद्ध्या चत्वारिंशत् मासा भवन्ति। इत्यादि विभावनीयं गाथात्रयेऽपि । सूत्रे–'गणस्स पडिनिज्जायव्वे सिया' प्रत्यर्पणीयः स्यात् । पाडियस्स य पाईहि–उपाश्रयरक्षयित्रीभिः । सच्चेव हि लालभाइ हेवाकः । सिविय व सुक्कं सिविय वत्थं, सुक्कं शुक्लं रुक्ख-दुगं कडिल्लं भण्यते । पगपोरिसीए ठविय भत्तं–लब्धमित्यर्थः । इति कल्पपर्यायाः समाप्ताः ।

व्यवहारपर्याया–यथा–अप्पापमाणाए धुवलंभो त्ति । अल्पापमानायां । खलियाइसु–अपशकुनादिषु सक्खुणिओ.........निराकुलः । आइग्गहणेणं गहणं गहनमित्यर्थः । खाडभंगो–प्रथमनगरनिवेशः । 'हाडहडा नाम मासाई' गाहा इति पुनरप्यत्राप्यावर्त्तनीया । ताल-पलंबा गाहा निशीथगाथेयं ज्ञेया। जम्हा तेहिं आयया आगाढाः । ओहारमुद्दा–उद्दालिउ मनाः । भाष्ये–'जा खायइ अट्ठियाइं पि' यावत् अस्थीन्यपि भक्षयति । 'गिहत्थपरियाओ जहन्नेणं एगुणतीसं वरि-साणि' इत्यत्र गृहस्थपर्यायेण सह एकोनविंशतिर्वर्षाणि । वलायमीणे–व्युत्क्रमेण। निक्कारणे संथारएसु कंविएसु । रायारूवधरक्खाय जलारा इत्यर्थः । अहपडगं काउं भाजनं । अट्टचालो अभ्युत्राता । भाष्ये–'दसुदेसे' अनार्यदेशे बत्तीस सहस्साइं हवंति उक्कोसओ एस–उत्कृ-ष्टोऽयं गच्छः । तद्दागणा विरागो–तद्दर्शनात् । अलङ्कय खइओ–हडक्कियसुणहेण डंकिओ । तृतीयोद्देशके यथा–पलिच्छन्नो–परिक-रितः । कोलपुत्तीए–कुलपुत्रतया । पन्नागारं थइया । 'चउसु वि जणेसु नत्थि दोसो' बालवृद्धप्राज्ञमूर्खेषु । 'जइ जं (जं जह) सुत्ते भणियं'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

व्यवहार-पर्याया:

इत्यनेन पूर्वार्द्धं सूचितम्। 'किं कालिया' इत्यनेन पश्चार्द्धम्। अहवा- 'कुलाइथेरा हिडंति' कुलस्थविरादय इत्यर्थ:।............वीसुंभिए- मृते। 'तहेव असंजयएहि जाहि चिट्ठसु ताहि वा सिलोगे' इति तहेवाऽसंजयं धीरो' इत्यादौ दशकालिकश्लोके इत्यर्थः। 'एहि जाहि' इत्यादिना श्लोकतत्त्वार्थ: कथित:। भाष्ये-'पालिया जा होई दिट्ठिवाउ' त्ति। पालिया-परिपाटी। तणवेराईसु-तृणस्थानेषु। गोविसो-गोवृष: प्रधानबलीवर्द:। सूत्रे-'एगराइयाए पडिमाए' प्रतिज्ञया। पमायसंवच्छरे-वर्षापर्यन्ते इत्यर्थ:। एस समुक्कसेयव्वे-स्थापनीय:। सो कुट्ठको-कुडुकदेशीय:। आरोगसाला-औषधादिशाला। कलहमित्ता-वार्त्तापरिग्रह:। एगंगियं-कट्ठमूलं कट्ठउलं। वायंतिय ववहारो-वाचनिको व्यवहार:। चतुर्थस्यैते-निच्छियं व विभइई रित्थं-द्रव्यं। विसुयाविएसु मत्तएसु ऊगाणेसु। चाउद्दसीगहो होइ कोइ अहवा वि सोलसिग्गहणं। वत्तं तु अनज्जंते होइ दुरायं तिरायं वा॥ अस्या अर्थो यथा-कस्यापि मन्त्रस्य चतुर्दश्यां ग्रहणं भवति, अथवा सोलसी-प्रतिपत् तस्यां ग्रहणं कस्यापि भवति, व्यक्तमज्ञायमाने भवति द्विरात्रं त्रिरात्रं वा इत्यर्थः।' 'वा रुद्देण चिरंपी महापा(या)- णाईसु नाउं अच्छेज्जा। ओयविए भरहंमी जह जाया चक्कवट्टाई'॥ अर्थो यथा-नाउं अच्छेज्जा ज्ञात्वा। यथा ओयविए-प्रसाधिते भरते यथा राजा चक्रवर्त्यादि द्वादशवर्षाणि राज्याभिषेकं प्राप्त इत्यर्थ:। 'जे जत्थ अहिगया खलु अस्ससेणसमासिया रन्नो। तेसिं भरं नसिऊणं भुंजइ भोए अड्डाइ'॥ अर्थो यथा-अस्ससेणसमासिया-अश्वसेनापत्यादयो ये तेषु भरं न्यस्य भुङ्क्ते भोगान् अडडाई विस्तराद्विना इत्यर्थ:। 'इय पुव्वपयाहीए बाहुसनामो वेयं मिणे पच्छा। पियइत्ति व अत्थपए मिणइत्ति व दोवि अविरुद्धा'॥ गाथार्थो यथा-पूर्व-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

एवाधीते बाहुसनामा-भद्रबाहुस्वामी एतद्अधीतं मिणे-परावर्त्तयति, 'मिणे' अस्य व्याख्या पश्चार्द्धेन यथा-'पियइ त्ति व अत्थपदे मिणइत्ति व दोवि अविरुद्धा' अर्थपदानि पिबति मिणइत्ति वा द्वौ एकार्थौ इत्यर्थः। अगडसुया-अकृतश्रुताः। भाष्ये-'सिण्हाइ परित्ताणं' इत्यत्र सिण्हा-ओसा। 'गामहिसिमाईणं वालेहि कयं गालणाइ अट्ठाए वालेयं' इत्यादिकं सूत्रपाठान्तरस्य व्याख्यानमिदं सम्भाव्यते। भाष्ये-'अह सा हीरमाणं तु वट्टेउं जो उ दावए' इत्यर्थो यथा-सा हीरमाणं-दीयमानं वट्टेउं-परिसेउं परीसवणार्थमित्यर्थः ततो यो दापयेत् इत्यर्थः। 'भत्तट्ठिओ व खमओ इयरद्दिणे तासि होइ पट्ठवओ। चरिमे असद्धवं पुण होइ अभत्तट्ठमुज्जवणं'॥ इति गाथार्थो यथा-पूर्वदिने भक्तार्थी भुक्तः खमओ-क्षपको वा सन् इतरदिने-द्वितीयदिने भवति पट्ठवको-तपःप्रारम्भकः। चरिमदिने पुनः अश्रद्धावान् उपोषितो भवति ततो अभक्तार्थ-सोपवासं उद्योतनकमेतदित्यर्थः। 'पच्चक्खागमसरिसो होइ परोक्खो वि आगमो जस्स' त्यादौ आगमः-परिच्छेदः। 'नवपुव्वीयगंधहत्थी य' इत्यत्र गन्धहस्तिन इव गन्धहस्तिनः। 'अंबेव न छुब्भई खीरं' ति। यथा अम्बिलामध्ये क्षीरं पतितं विनश्यति। न उ मइलिंति निसेज्जाइ पीठादिग्रहणे इत्यर्थः। निर्यवकैः-प्रतिजागरकैः। दुगुंछियं वा इगाइ सुराप्रभृतीत्यर्थः। 'पंचविहो ववहारो दुवालसंगस्स नवणीयं' ति सार इति तात्पर्यम। 'नक्खत्ते मे पीला चउमासतवं कुणसु सुक्के' इत्यस्यार्थो यथा-यदि प्राणातिपातादीनां श्रवणेन-शब्देन हस्तकर्मणा वा पीडा जाता, ततः चतुर्मासतपः शुक्कं-लघु कुरु इत्यर्थः। अथ च श्रवणं नक्षत्रमपि हस्तोऽपि नक्षत्रं। 'तित्थोक्काली एत्थं वत्तव्वा होइ आणुपुव्वीए' इति तित्थुक्का(गा)ली ग्रन्थविशेषः। 'धीरपुरिसपन्नत्तो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पंचमओ आगमो उ पसत्थो' इत्यत्र आगमो जीतं ज्ञेयम् । भाष्ये-'मुहणंतफिडियपाणगे' त्यत्र फिडियाऊ-संघट्टिया मुहुपत्ती । पाणग-संवरणं-दिनान्तप्रत्याख्यानं । 'पणिंदिअंत-वज्जे' इत्यत्र अनन्तकायवर्जितानाम् एकेन्द्रियाणां । 'नेयव्वं जाव खमणं तु' खमणं-उपवासः । भाष्ये-'कारहडिहड्डमाला' इत्यादौ भास्मिकानाम् आचीर्णमिदं ज्ञेयं । भाष्ये-'उभयमवलम्बमाणं कामं तु गंपि पूपमो' इत्यत्र उभयं गच्छो धर्मश्चेत्यर्थः । 'वंजणओ वत्थिरोमाणि' अपानरोमाणीत्यर्थः । भाष्ये-'वेज्जवच्चेत्र' इति वैयावृत्यं । इति दशमे उद्देशके व्यवहारस्य । इति व्यवहारपर्यायाः समाप्ताः ।

पञ्चकल्पपर्याया यथा-दशविधोऽप्याचारः आलोचनादिः । मालसणाणि-मालायोग्यपुष्पाणि । 'उवट्ठवियारलेवपिंडे य' इत्यत्र उवट्ठं-उपस्थापना । अथवा भैक्ष्यं कल्प्यं गर्हितादगर्हिताद्वा 'गर्हितं द्रव्य'-मित्यादि श्लोकसूचा इयं । 'वागए अयसिसणदुकुल्लाइ' इत्यत्र छेदः, 'चम्मे अत्थुरणतलिमकोसाइ' इत्यत्र छेदः, 'पट्टे सन्नाह पल्लत्थि पट्टाइ' इत्यत्र छेदः, 'पम्हए कप्पासाई' इत्यत्र छेदः, किमिए मलए' इत्यत्र छेदः, 'पट्टे अंसुगाइ' इत्यत्र छेदः । पिच्चइ-कुट्यते । किच्चइ-कुत्तियइ । सोलिइ-श्रोष्यति । 'अहवा तिठाणाइ' त्रिवर्षपर्यायस्यातिचपलत्वात् श्रुतं न दीयते । जीवपदार्थोऽपदिष्टः-कथितः । भाष्ये-'वागेहिं निप्फन्नं वागजं सणअक्कमाइयं' इति वल्कलजं सणअर्कादिनिःपन्नं । तिरीडो-वृक्षविशेषः । भाष्ये-'मकखुंडियाईयं' वस्त्रमित्यर्थः । भाष्ये-'छेवग-माइमयम्मि' इत्यत्र छेवगं-असिवं । 'पीहगाइया' इति पीहको-स्तन-दुग्धं । कोट्टिवं-अवाच्यस्थानं । चूणिया-पुत्रिका । घोडमाईहिं-स्थान-पालकादिभिः । इहेस कश्चिच्चर्चा-नपुंसकः । 'वए गुरुण सव्वाइयं' ति सर्वमापीतं । आउट्टो-निवृत्तः । 'कासइ देहित्थ अल्लियउ' कस्यापि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

फेल्लस्स-दरिद्रस्य । इक्षुकरणे-इक्षुक्षेत्रे । 'पिटकादिषु' ग्रन्थविशेषः । वरडाइ गंछकादि 'महाजण-पाउग्गाणि' त्ति । महाजनो-गच्छः । डिंद्रियबंधो-गर्भाधानं । 'ठाणं गाहेइ' आसनं कोट्टिवं-योनिः । 'भांड-णछिन्नेण' लिङ्गेन । पडिगमणाइ-व्रतमोचनादिकं । सिरिमदिरि-अवाच्यसेवनं । दिट्ठं तो तूहे पडिसेवियाओ तूह-अवाच्यं । वडुवओ-ईश्वरपुत्रः । 'करगया तरंगवइमाई' करगया-कथाविशेषः । अइ-नारा पइ-न प्राप्नोति । अंतरवई पउमावई-गर्भवती । 'सेसं च पणगं अणायरणजोग्गं' षण्णां मध्यात् प्रथमं वर्जयित्वा शेषाः पञ्च ततः पञ्चकं । 'पुरिसो य उग्गमंतो' इति । वस्त्रोत्पादको नरः । भाष्ये-'पच्छायतिगं उग्गहो' इति उग्गहो-पात्रं भाष्ये-'फुडियविविच्चिनहंगुलि' इति । विगिंचिया-वातः । 'लेवाउअरइ सारियरक्खट्ठा गेण्ह सांहणगं' इति । सारियरक्खट्ठा-सागारिजनरक्षार्थे । 'ससरक्खाए पुढवीए अवेसणिया भरिज्जंति' अवेसणिया-वृषणाः । लाडपरीवाडीए-लाडवाचनायाम् इत्यर्थः । 'दुगचउभंगाइ चारणिया' इति द्विकसंयोगे चत्वारः त्रिकसंयोगे अष्टौ इत्यादिकम् । भाष्ये-'वासाजोग्गं तु अंतरा वासं' इति वासं-क्षेत्रं । 'बार समाओ तत्तिय' त्ति द्वादशवर्षाणि तावन्ति । भाष्ये-'अंगपमाणायामो-विस्तरः ।' भाष्ये-'सुत्तं बार समाओ तेत्तियामेत्ता य अत्थो वि' इति द्वादशवर्षाणि सूत्रम् । भाष्ये-'निक्खमणं खलु सरए' इत्यादौ निक्खमणं- निर्गमः । भाष्ये-'इयरं थीबालवुड्ढाई' इति । इतरं-प्राकृतं । भाष्ये-'मीसेइ कालिपयसं वा' कोलिकपानं । 'गज्जंमि य पयसंखा' गद्ये पदसङ्ख्या । 'अन्तो वि होइ भयणा ओमे' इत्यादिगाथायां अन्तः-मध्ये गच्छस्य वसतामपि भजना, यथा-अवमस्य वन्दनं प्रायश्चित्तापन्नस्य च संयत्याश्च सेहस्य च न वन्दनं देयं । 'बाहिं पि होइ' इति । बहिरपि गच्छाद्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पञ्चकल्प-पर्यायाः

वसतां भजना, यथा-अजापालकवाचकस्य शिष्यस्य वन्दनं दत्तम्। 'हेट्ठट्ठाणट्ठिओ वि हु पावयणि' इत्यादिगाथायां अधःस्थान-स्थितस्य संयमपतितस्य प्रावचनिकाद्यर्थम्। अपरपदे-अपवादे कृतयोगी संनिसेवते आद्यनिर्ग्रन्थ इव पूज्यः सः। भाष्ये-'संभुंजणा निसिरणा य' इति। निसिरणा-दानम्। एसो वि कालकप्पो, काउस्सग्गे साय सयं गोरुद्धे पम्मो वि कालकप्पो' इत्यादि प्रथमे एसो वि कालकप्पो इत्यत्र परिच्छेदः। तथा कायोत्सर्गे सायं सङ्ख्यायां शतम् उच्छ्वासकानां, यतः ज्ञान-दर्शन-चारित्रसर्वकायोत्सर्गेषु शतम् उच्छ्वासकानां भवति। 'लोगस्स उज्जोयगर' चतुष्टये एसो वि कालकल्पो ज्ञेयः। 'गोसद्धं' इति प्रभाते अर्द्ध-शतार्द्धं ज्ञेयम्। 'निकाचयतीति अपोहते च' इति एकार्थौ ज्ञेयौ। 'वीरल्लसउणओ परसीयाणं' इति। सींचाणकः, परसिया-आखेटककर्त्तारः। अर्द्धं सकडी यथा-लिङ्गिप्रावरणम्। गरुलपक्खियं स्कन्धद्वये वस्त्राञ्चलद्वयक्षेपः। यथा एकत्र स्कन्धे एकः, द्वितीये द्वितीयः। 'खंधपुवत्थं' इति। एकत्र स्कन्धे द्वयोरपि वस्त्राञ्चलयोर्निक्षेपः। 'आयामेणं वंदइ संभागो वायए अतरमाणो' इति वचनेन वन्दनां कुर्वन् अशक्तः आयामेण-शरीर-प्रणामेन वन्दते इत्यर्थः। 'तरमाणो न वन्दइ' तरमाणो-शक्तः। 'उस्सारकप्पलोगाणुओग' इत्यत्र उस्सारकप्पो-व्यतिक्रमेण सूत्रदानं। 'सीमट्ठिओ वामगाहा वा' इति सीमस्थितो वा हृत्वा वा इत्यर्थः। भाष्ये-'मत्तगभोगो अणट्ठाए' इति। मात्रकभोगो निरर्थको न कार्यः। 'उंडियभोमाइ नाविहि' इति उण्डिया वर्णकवृत्तिः। 'चाउरकेण गोखीरेण' गोक्षीरविशेषोऽयं। 'अन्नत्थयगओ ताहे कप्पियारीओ भणइ' इति। कप्पियारीओ-परिवेषकः। भाष्ये-'भो खन्तिय! सहुवम्भो' इति। भोक्ष्यति असहवर्गः। भाष्ये-'पढमं ठाणुस्सग्गो तेणं तु नवसु

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

होइ ठाणेसु' इति। प्रथमम्-उत्सर्गपदं तेन नवसु-अष्टौ ऋतुबद्धमासा नवमो वर्षाकालः। भाष्ये-'खेत्तं कालाईयं समणुन्नायं पकप्पम्मि' कालातीतमपि क्षेत्रम् अनुज्ञातं द्विगुणं त्रिगुणं चतुर्गुणं वापीत्यर्थः। भाष्ये-'ते अग्गीयऽबहुस्सुय तिण्ह समाणारओ तरुणा' इति। अगीतार्थोऽबहुश्रुतश्चेत्यर्थः। तरुणस्तु त्रयाणां वर्षाणां आरतः। भाष्ये-'अन्नं वेलं न सज्जं भिक्खु ण्हाईहिं संसत्तं' ति। स्नानादि संसक्तम् अन्यस्यां वेलायां न सद्यः स्मारयन्ति। 'फुडरुक्खे अचियत्तं गोणे' तुइउव्वमाहु पेलेज्जा' इति। स्फुटं रूक्षवचनैः अचियत्तं-अप्रीतिं करोति प्राजनतुदितगौरिव। 'सज्जं अउ न भन्नइ' अतः सद्यो न भण्यते। ऊल्लोलछगणहारी न मुचई जायमाणो वि' इति। अचेतनगोणादेः न तस्य अशुष्केऽपि छगणे पुनः चौर्यं यः करोतीत्यर्थः। भन्नइ घट्टिज्जंतं तुत्थं दुट्ठं तह तुमंपि' इति। यथा तुत्थं-औषधविशेषः घट्यमानं दुष्टं स्यात्तथा त्वमपि। भाष्ये-'पाणो सो संवुत्तो अइहंचिय कुंकुमं तइयं' इति। यः स्मार्यमाणोऽपि न प्रपद्यते, स पाण इव-चण्डाल इवेत्यर्थः। यथा चाऽतिघृष्टं कुङ्कुमं विनश्यति तथा सोऽपि। 'आइपणगं तु तुलंति जाण सेज्जाइ जाव साहारंति। शय्या-उपधि-स्वाध्याय-आहार-अनुकम्पालक्षणं ज्ञेयम्। अहवादिपणगमूलंगुण पंचेए हुंति दोण्ह तुलाउ' इति। पञ्चाद्याः मूलगुणाः पञ्चमहाव्रतरूपाः अनुस्वारस्तु प्राकृतत्वात्। वाई पुण उत्तरावहाइन्नं। वाई विकटं-मदिरा। 'दुगुणतिगुणचउग्गुण बहुगुणा वा खेत्तकालाइक्कमा' इति। कारणे मासादेरुपर्यपि कल्पते इत्यर्थः। अंतद्धाणहंसाईहि वा उप्पाइंति हंसाईहिं-हिंसादिभिः। आलंबणविशुद्धे सत्तदुए परिहारेज्जा' इति। 'पट्टीवंसो दो धारणाइ' इत्येकं सप्तकं, 'वंसगकडणुक्कंवणे'त्यादि द्वितीयं सप्तकं इत्यर्थः। 'संलीढाए वोसिरणे वोसट्ठाए वा' इति।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

दशाश्रुतस्कन्ध-पर्यायाः

संलिखितायाः व्युत्सर्गसमये वा सर्वस्य कृतव्युत्सर्गाया वा अनुशास्तिनिमित्तं इत्यर्थः। चउवग्गो त्ति। असणाइ न य पवयणपीला भवइ-न च प्रवचनपीडा भवति। 'अणाइन्ने पुण वियडाइसु अणुयाइसु मइलणा' अनुचितेषु विकटादिषु इत्यर्थः। 'अप्पणा अणिवित्ता' अनिवृत्ता इत्यर्थः। 'गीयत्थेहाइन्ना तं देसीओ न जाणामि' इति। गीतार्थैराचीर्णा समितिः तां विदेशोऽहं न जाणामि। सीयघरसमो य होइ। माभाई' इति। माभाई-अभयदाता। खाइं-तर्हि। भाष्ये-'आयरियप्पमाणा गुणप्पमाणं च समणाणं' इति। आयरियप्पमाणा-आचारप्रकल्पप्रामाण्यात्। भाष्ये-'निद्दय अणुकंपाए गिहिणं तो नामन वसहा तुब्भे' इति। निर्दयत्वेन अनुकम्पया च गृहिणां विधीयमानया नामन वृषभा भवन्त इति प्रेरकवचनम्। 'भण्णइ सरिसेऽहिगेहिं च' इति। सदृशैरधिकैश्च उज्जुयरेइ-उज्ज्वालयति। 'मासाईए अणुवहि वासाईए भवे उवही' इति। मासादूर्ध्वं अनुपधिः-न उपधिर्मासादूर्ध्वं ग्राह्यः। 'वासाईए भवे उवही' ति। वर्षाकालेऽतीते तु उपधिर्ग्राह्यः मासद्वयस्योर्ध्वमित्यर्थः। 'सुत्तत्थतदुभयाइं संधि अहवा वि पडिपुच्छेए' इति संधिर्विस्मृतस्य सन्धानं प्रतिपृच्छन्ति वा एते। 'वसणं वाजीमाई' इति। वाजीकरणादिकं-कामोद्रेककरणमित्यर्थः। कुहंडी-अंबिका। इति पञ्चकल्पपर्यायाः समाप्ताः।

दशाश्रुतस्कन्धपर्याया-यथा-'द्वाभ्यां कलितो बाल' इति। बालत्वयुवत्वाभ्यामित्यर्थः। 'भोयणदाग्गरायदिट्ठंतेण मा वोच्छिज्जिस्संति' इति। यथा-भोजनादग्रतो बालानां विनष्टपूपादि दीयते इत्यर्थः तथा राजदृष्टान्तो यथा-राजा दुर्भिक्षे लोकानां धान्यं प्रयच्छति इत्यर्थः। 'न याहारोवहिसेज्जइ' इति न च आहारादिनिमित्तं निर्जूढाः। मिस्सठाणं समाभरियाणं-अलङ्कृतनराणां। खंधखणियवायपडिसेहणत्थं-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

स्कन्धक्षणिकवादप्रतिषेधार्थं । गोणसमृगादि-गोनसमृगादि । चक्कय दंडगो-कुम्भकारदण्डो हि मृत्तिकासबलो भवति । तृतीयदशायां-कालियाए रात्रौ । 'अगारगं वा भुंजमाणस्स' भक्तरुचि विनेत्यर्थः । 'ओसन्ने सव्वपयाणि वि' अवज्ञादीनि कार्याणि । संवट्टित्ता नाणु-जाणेइ-न अणुजाणावेइ । चतुर्थदशायां-यथा उपगृह्णातीति उपग्रहः-परिपालनं 'दव्वपलित्थयस्स' त्ति द्रव्यं-शरीरं । 'गोहि गोमिओ' इति । गोभिर्गोमान् गोसङ्ख्यां करोति । 'छप्पन्नं पंचसंजोगा सव्वत्थ बत्तीसं बत्तीसं भंगा' इति पञ्चकसंयोगाः षट्पञ्चाशत् भवन्ति इत्यर्थः । 'अहवा बहुस्सुओ अभिंतर-बाहिरएहि' इति स्वसमयसूत्रं परसमयसूत्रं चेत्यर्थः । 'चित्रं बह्वर्थयुक्तं' इत्यत्र छेदः । 'लिहइ पहारेइ गणेइ' त्ति । पाहाडे गणेइ इत्यर्थः । पञ्चमदशायां तु 'जहा तीसे कम्मकारियाए घुसलंतीए महत्तरघूयं जायइ' इत्यादि कर्मकरी काचित् घुसलंती-विरोलंती पादाधो न्यस्तद्रव्यमाहात्म्यात् स्वकीयपुत्रार्थं महत्तरस्य-ठक्कुरस्य सत्कां पुत्रीं याचते इत्यर्थः । कभल्ले गावेइ कभल्ल-कुम्भकारादिः । मिच्छादंसणसल्ले आयजोगीणं' ति । एतन्निवृत्तये आत्मनो हितास्तेषां । षष्ठ्यां यथा-सीहपुच्छिज्जंति-यथा सिंहस्य मैथुने लिङ्गच्छेदः स्या-दाकर्षतः । थामियाणं-बलिष्ठयोः छिन्ननेत्रो भवइ-छिन्नलिङ्गो भवति । एवं तस्स पुत्तयाछेत्तु पोआ इत्यर्थः । सप्तम्यां तु 'सभिक्खुए य अहिगारो' इति । सभिक्खु अध्ययनं दशकालिके । 'वेयावच्चकिलंतो अभिन्नरोमो य आयासे' इति । अवश्यकर्त्तव्ये अभिन्नरोम इव । 'संक-माहणे इच्छा' इत्यादिकं 'पच्छित्ते आवसा संकिय' इत्यादिना व्या-ख्यातमेव । का दुणु इमस्स इच्छा अभिंतरमहिगउ जीय-का इच्छा अस्य साधोः यया इच्छया मध्ये प्रविष्ट इत्यर्थः । 'असुइणा वाणाए किंचि सउणगाइणा' इत्यादि शकुनिगृहस्वरूपितः समुद्देशे च

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

क्षालनं करोतीत्यर्थ: । अष्टमदशायां-'जइ अत्थपयवियारो' गाहा कंठा 'कुत्तानिद्दिट्ठा निसीहे' इति । कुत्र निर्दिष्टा गाथा? निशीथे इत्यर्थ: । 'चयणाईणं छण्ह वत्थूणं'-च्यवनादीनि पञ्च षष्ठस्तु गर्भापहार: । 'पणियभूमि वज्जभूमि' इति । पणियभूमि इत्यस्य पर्यायो वज्जभूमिरिति । भूमिशब्देन काल उच्यते । पुरिसंतरकालो युगंतरकालश्चेत्येकार्थौ । 'पणपन्नं पावा पणपन्नं कल्लाणा' इति । पञ्चपञ्चाशदध्ययनानि पापकर्मप्रतिपादकानि पञ्चपञ्चाशच्च कल्याणप्रतिपादकानि अध्ययनानीत्यर्थ: । तत्रैकत्र मरुदेवीवक्तव्यता-इत्यादि ज्ञेयं । 'वेसमणकुंडधारिणो तिरियजंभगा देवा' इति कुण्डधारिण इति तेषां नाम ज्ञेयम् । पावाए मज्झिमाए-एकार्थौ । तत: हस्तिपालकस्य राज्ञ: सत्कायां रज्जुकसभायां लेखकसभायामित्यर्थ: । चंद्रसंवच्छरमधिकृत्यापदिश्यते 'जेण जुगाई सो' इति । येन कारणेन स संवत्सर: युगस्यादौ वर्त्तते । 'वासाणं सवीसइराए किं निमित्तं? पाएण सयट्ठाए कडियाइं पासेहिंतो कंबियाणि' इति । अर्थस्तु वर्षाकालस्य सत्के सवीसइराएसु दिनेषु गतेषु किंनिमित्तं पर्युषणा क्रियते? यत: प्रायेण स्वार्थं कृतानि गृहाणीत्यर्थ: । 'जहन्नलंद उदउल्लं-उदकार्द्रं सत् यावता शुष्यति तावान् काल इत्यर्थ: । 'भगवओ जम्मनक्खत्तं संकंते' इति । भगवतो जन्मनक्षत्रं सङ्क्रान्त: तत्रोदय इत्यर्थ: । अचलमाणा-अचलंती । अणुत्तरोववाइयसंपया होत्था' -ये अनुत्तरविमानेषु उत्पत्स्यन्ते इत्यर्थ: । 'समणस्स णं भगवओ महावीरस्स नव वाससयाइं वीइक्कंताइं, दसमस्स य वाससयस्स अयं तेणउइमे संवच्छरे गच्छइ' इत्यस्यार्थो यथा-यदा किल पर्युषणा चतुर्थ्यां जाता, तत: पूर्वं कालमानमिदमिति वदन्ति वृद्धा:, तत्त्वं पुन: केवलिनो विदन्ति इति भावार्थ: । आहोहिपणं-अभ्यन्त-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

रावधिना । 'पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणियस्स कालगयस्स दुवालस वाससयाइं वीइक्कंताइं, तेरसमस्स य वाससयस्स अयं तेयालीसइमे संवच्छरे गच्छइ' इत्यस्यार्थो यथा-महावीरकालमानं पूर्वोक्तं ९९३ एतन्मध्ये जिनान्तरं पार्श्वनाथसत्कं प्रक्षिप्यते इदं २५० ततो यथोक्तं मानं भवति १२४३ अङ्कस्वरूपमिति भावार्थः । अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स कालगयस्स चउरासीइं वाससहस्साइं वीइक्कंताइं, पंचासीइमयस्स वाससहस्सस्स नव वाससयाइं वीइक्कंताइं, दसमस्स य वाससयस्स अयं तेणउइमे संवच्छरे गच्छइ' इत्यस्यार्थो यथा-पार्श्वनाथमानं १२४३ अस्य मध्ये नेमिपार्श्वान्तरं क्षिप्यते इदं ८३७५० ततो यथोक्तं मानं भवति ८४९९३ अङ्कस्वरूपत इत्यर्थः । बायालीस-वाससहस्सेहिं ऊणिया गच्छइ' इत्यत्र ऋषभकालात् प्रभृति चतुर्थी-प्रवृत्तपर्युषणादिनं यावत् कालमानमित्यर्थः । कोडियकाकंदवग्घावच्च-सगोत्ताणं' ति कोडियकाकन्द्योः वग्घावच्चं गोत्तं । 'अज्जत्ताए समणा निग्गंथा' इति । साम्प्रतं ये विहरन्तीत्यर्थः । 'अंतरा वि से कप्पइ पज्जोसवित्तए' पञ्चभिः पञ्चभिः दिनैः कृत्वा इत्यर्थः । 'अत्थेगइयाणं एवं वुत्तपुव्वं भवइ दाए भंते' इति सूत्रस्य व्याख्या-केनापि भिक्षां गच्छता एवं पूर्वम् उक्तं स्यात् यथा-अन्यस्य दास्यामि भक्तं न तु स्वयं प्रतिग्रहीष्यामि इत्येको भङ्गक इत्यादिका चतुर्भङ्गी ज्ञेया । चूर्णौ तु-'अत्थेगइया आयरिया दाए भंते ! दावे गिलाणस्स मा अप्पणा पडिग्गाहे चाउम्मासगाइसु' इत्यस्यार्थो यथा-सन्ति केचिदाचार्याः ततः शिष्यः प्राह-तान् प्रति-'दाए भंते' इति । अस्यार्थस्तु ग्लानस्य दास्यामि न स्वात्मना ग्रहीष्यामि चतुर्मासकादिषु इति चतुर्भङ्गी ज्ञेया इत्यर्थः । 'तुमं पित्थ भोक्खसि ओयणं दवं पाहिसि' इति । त्वयाऽपि भोक्तव्य ओदनः जलं च पातव्यं ततो बहुतरमपि गृह्णा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

दशाश्रुतस्कन्ध-पर्यायाः

णेत्युक्ते गृह्णातीत्यर्थः । 'अदक्खु वइत्तए' इति । कुलानि विद्यन्ते श्रावकाणां कृतादिविशेषणोपेतानि येषु श्रमणानां नो कल्पते 'अदक्खु वइत्तए'(अ)दृष्ट्वा किञ्चनापि भोजनजातं वदितुं याञ्चार्थम् यतः। पूर्वव्वथिते जले ओदनं क्षिपित्वा तत्क्षणादेव ओदनं निःपाद्य यच्छन्तीत्यर्थः। 'वासावासं प०' इत्यत्र पकारे पर्युषितस्येति ज्ञेयम्। ससित्थे आहारे दोसा अपरिपूए कट्ठाइ अगलिते जले काष्ठादि स्यात्। संनिवत्तिउं आत्मानं अन्यत्र चरितुं चारएइ इति 'संनिवत्तिउं' इत्यस्य व्याख्यानं 'अन्यत्र चरितु चारएइं' इत्येतत् एतेभ्यः अभिग्रहीकृतगृहेभ्यो अन्यत्र भिक्षां कृत्वा पुनः सप्तसु भिक्षां कर्त्तुं न कल्पते इत्यर्थः। भिगुपुडियाली-मृत्तिकापुटानीत्यर्थः। 'पारणगं वा संधुक्खणाइ अत्थि' संधुक्खणं-येन उदराग्निः दृढः स्यादित्यर्थः। 'अहासंनिहिया अणतावणे कुच्छणं पणउ' इति। सार्द्र उपधिर्यदि संनिहिते स्थाने न ताप्यते ततः कुत्सनं पनको वा ऊलिः स्यात्। 'अड्डगेहिं बंधइ' बन्धविशेषैः। अहिगरणं-कलहः। वलवाउया-वलव्यापृताः। 'जाणप्पवरे आइड्ढं भद्दं तव दुरुहाहि' इति। जानप्रवरः आदिष्टं भद्रं तव समारुह इत्यर्थः। विगाहापरिव्राजकवत् कश्चित् परिव्राजको ज्ञेयः। 'एगंतरमुप्पाउ अन्नोन्नावरणक्खए जिणाणं' ति। परः प्राह-एकत्र क्षणे ज्ञानं प्राप्नोति द्वितीये तु दर्शनं अन्योन्यावरणक्षये सति इत्यर्थः। गिलाणवेसं अद्देइ' करोतीत्यर्थः। कोडिल्लगमासुरक्खाइ कहेइ' कथाविशेषो। 'सहजायगा मित्ताइ' सहजाताः सहजमित्राणि भण्यन्ते। कम्मंता कम्मठाणा-एकार्थौ। पूर्वकृत्यमिति सो यमुद्यत् इत्यादौ गृहस्थावस्थायां गृहिणां कृत्यम् इदं यथा-घोररणमुहं दारभरणं-भार्यापोषणं। पेयकिच्चं-श्राद्धादिकं एतत् स्वरूपेषु स्वर्गेषु कीदृशेषु? 'देहपूयणचिरजीवणदाणतित्थेसु' देहपूजनं रणे इत्येके तीर्थं, चिरजीवनं भार्यां प्रति इति द्वितीयं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

तीर्थे, प्रेतकृत्ये दानं देयमिति तृतीयम् । अथवा अपत्योत्पादनं कृत्यं । न तस्मात् सांसारिकभावात् जीवोऽर्थान्तरभूतो मृतस्य 'जातिस्मरणं' ति । यतो मृतस्य जातिर्जन्मधारणं आश्रय इत्यर्थः । 'संजमघाइमूलाः क्रमेण उत्तरगुणा' इति । संयमं घ्नन्ति मूलगुणाः तत्क्षणात् उत्तरगुणास्तु क्रमेण घ्नन्ति । 'अत्तुभा मियापुत्ते य गोत्तासे' मृगापुत्रो गोत्रासकश्च । 'तहागएसु दसहा नियाणाणि' तथाप्रकारवस्तूनां विषये दशधा निदानानि ब्रह्मदत्तादीनां । 'गहतित्थादिसु वा वीयारणे' द्विति ब्राह्मणानां । 'मालानक्खत्तमालादि'-आभरणविशेषोऽयं । 'कुंभलगाईणि' आभरणविशेषः । वव्वीसमादिर्द्धं खरीप्रभृति । 'निदाने य भवइ' निदानं तत् स्यादित्यर्थः । 'कण्डइ रहस्सिय' त्ति । संजया तापसविशेषा इत्यर्थः । 'सिस्नोद्दरकृते पार्थ' इत्यादौ सिस्नोदरं-मैथुनं । 'जाव पुणो पुत्ते पाढिति' केचित्तापसाः बालत्वे पञ्च षड् वा वर्षाणि यावत् तपः कृत्वा परिणयन्ति पुत्रकाममुत्पाद्य तानेव पाठयन्ति । 'अन्नयस्स अइयमाणस्स वा' आगच्छत इत्यर्थः । चेलपेला इव सुसंपरिमुया-वस्त्रपेटा इवेत्यर्थः । 'तेलकेला इव सुसं पडिरूवेणं' सुक्कंण शुल्केन-मूल्येन इत्यर्थः । संवलिथालिया इव-सिंवलिवृक्षफलमिव । 'एस मे आयाए परियाए एस नीहाराए' इति-आत्महिताय परितापाय च गृहमोचनाय चेत्यर्थः । 'पेत्तियं दायं पडिवज्जइ' पैत्रिकपदमित्यर्थः । 'सव्वेसिंपि नयाणं' गाहा ज्ञेया । निर्युक्तौ तु कहिया जिणेहिं लोगप्पगासिया भारिया इमे बंधा । साहुगुरुमित्तबंधवसेट्ठीसेणावइवहेसु' इत्यत्र लोकप्रकटा भारिका इमे साधुगुरुमित्रबान्धवश्रेष्ठिसेनापतिवधेषु इत्यर्थः । मंगलं इति दशाश्रुतस्कन्धपर्यायाः समाप्ताः इति ।

गुरुसम्प्रदायतः-'दव्वविणासणे दुविहभेए' इत्यस्य व्याख्यानगाथा यथा-जोग्गं अइयभावं मूलुत्तरभेयओ अहव कट्टुं । जाणाहि दुवि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

जीतकल्प-पर्यायाः

हम्मेयं सपक्ख-परपक्खमाई वा ॥१॥ योग्यं-नवम्, अतीतं-पुराणं, मूलं-स्तम्भादिकं। उत्तरं-वंशादिकं। सपक्षद्रव्यं जिनसत्कं, परपक्ष-द्रव्यं-तीर्थान्तरीयाणाम् इति गाथार्थः। कदलिका हस्तिटगकः।

जीतकल्पपर्यायाः यथा-आद्य त्रिषु स्कन्दकं छन्दः। 'जस्स मुह-निज्झरामयमयवसगंधाहिवासिया इव भमरा' इति। यन्मुखनिर्झरा-मृतमयवशगन्धाधिवासिताः साधवो भ्रमरा इव इत्यर्थः। 'विसेसा-विसेसियावस्सयंमि' त्ति विशेषावश्यके। 'अप्पत्तापत्तव्वत्ततिंतिणिय' त्ति। अपाज्ञ-अप्राप्त-अव्यक्त-तिन्तिणिकादीनामित्यर्थः। तर्हि वा अहिगरणभूए इति। पवुच्चंति जीवादओ पयत्था इतिशेषः। 'पढमं ठाणं दप्पो, दप्पो चिय तस्स वी भवे पढमं' ति। दर्पः प्रथमं स्थानं, तस्यापि प्रथमभेदो दर्प एव, ततः प्रथमे दर्पपदे व्रतषट्क-कायषट्क-अकल्पादिपट्कसञ्चारणेन अष्टादश गाथाः। अकल्पनिरालम्बा-दिपदेष्वपि प्रत्येकम् अष्टादश गाथा ज्ञेया इत्यर्थः। कल्पिकायाः दर्शनज्ञानादीनि चतुर्विंशतिः पदानि, तेषु प्रत्येकं व्रतषट्क-कायषट्क-अकल्पादिषट्क सञ्चारणात् दर्शने अष्टादश गाथाः। एवं ज्ञाने अष्टादश गाथाः ततः सर्वेऽपि अष्टादशकाः चतुर्विंशतिसङ्ख्याः भवन्ति। 'अणुमज्जिय तं सुओवएसेण' त्ति। विचिन्त्य। 'नक्खत्ते मे पीला' इति। नक्षत्रे श्रवणहस्तलक्षणे श्रुतं हस्तकृतं वा किञ्चित् स्यादित्यर्थः। 'सुक्के मासे' लघुमासे। 'एवं तावुग्घाए' इति लघूनि, अनुद्घाते तु गुरूणि। 'छिंदित्तु तयं भाणं' इत्यादौ तत् स्थानं सञ्छिद्य इत्यनेन छेदः प्रतिपादितः, गच्छंतु तवस्स साहुणो मूलं' इत्यनेन मूलं भणितम् 'अव्वावडा व गच्छे' अव्यावृताः गच्छे सन्तु इत्यनेन अन-वस्थाप्यम् 'अब्बीया वावि विहरंतु अद्वितीया विहरन्तु इत्यनेन पारं-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

चियं भणितं । 'छब्भागंगुलपणगे' इत्यादौ मासस्य अङ्गुलेति नाम, ततश्च दिनपञ्चके अपनीते अङ्गुलावान्तरनामकस्य मासस्य मध्यात् षड्भागाङ्गुलं छेदो भण्यते । यतः मासः षड्विभागः क्रियते पञ्चकेन पञ्चकेन दिनानां, ततः मासमध्ये पञ्चकषट्कं भवति इत्यनेन 'छब्भागंगुलपणगे' इति व्याख्यातं । 'दसराए तिभाग' इति । दशरात्रे छेदे त्रिभागो मासस्यापनीयते इत्यर्थः । 'अद्ध पन्नरसे' इति । अर्धच्छेदे पञ्चदश दिनानि अपनीयन्ते । 'वीसाए तिभागूणं' ति । विंशतितमे छेदे त्रिभागो दिनदशकलक्षणोऽपनीयते इत्यर्थः । 'छब्भागूणं तु पणुवीसे' पञ्चविंशतितमे छेदे षष्ठो भागः पञ्चदिनलक्षणोऽपनीयते इति गाथार्थः । 'मासचउमासछक्के' इत्यादौ मासछेदः चतुर्मासछेदः षट्कछेदः एषां नामानि यथासङ्ख्यं अङ्गुलं मास नाम, चतुर्मासस्य चउरो इति नाम, छकस्य छक्केति नाम, एते सर्वेऽपि छेदपर्याया इत्यर्थः । 'आउत्तनमोक्कारा' इति । नमस्कारोपयुक्तैर्भाव्यं न किमपि प्रायश्चितमित्यर्थः । 'अवसेसाऽसुयाणुयोगस्स' अनिष्ठितश्रुतानुयोगस्य । 'पलिउंचियमपलिउंचियं वा' इति-आवश्यं अनावश्यं वा इत्यर्थः । 'दस्सुमिलक्खु-बोहियमालवाइ-सकासाओ' इति । दस्युम्लेच्छमानुषापहारकमालवाः चौरविशेषाः, मालवास्तु मालवकदेशपल्लिवासिचोराः । 'विहारो-सज्झायनिमित्तं जं अन्नत्थ गमणं' स्थण्डिलादौ । 'घडगोलंकयवारगाइड्डियस्स' इति । घटउलूकवारकास्थितस्य । एगकल्लाणं' ति । निव्विय० १ पु० १ एगा० १ आयं० १ अभ० १ द्विकल्याणादौ तु नि० २ पु० २ ए० २ आ० २ अ० २ इत्यादिक्रमेण ज्ञेयं । सुक्कसंनिहिए-शुष्कभक्तसन्निधौ । 'ओहुत्तं पढमभंगो सेसा तिन्नि भंगा इति । दिवा गहियं दिवा भुत्तं इत्यादयश्चत्वारः । 'पिढ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

कुक्कसकुक्कसी उक्कंठचिचाई ' इति । कुक्कसकुक्कसी सूक्ष्मकणिका इत्यर्थः । 'पिहिए चउभंगा ' इति गुरुगुरुणा गुरुलघुना लघुगुरुणा लघुलघुना इति चतुर्भङ्गी इत्यर्थः । 'अचित्ते अचित्त साहरिए ' इति दोषसम्भवात् । 'अह गुरुसाहरिए ' इति गुरुगुरुणि संह्रियते इत्यर्थः । ' उद्देसिय चरमतिए ' इत्यादि गाथा १ 'सोलस उग्गमदोसा ' इत्यादि गाथा २ 'अइरं अणंत ' इत्यादि गाथा ३ एतस्मिन् गाथात्रये सोलस उग्गमदोसा इति संग्रहगाथा ज्ञेया । अन्यत्तु गाथायुगले ' एयाओ दुवि गाहाओ ' इत्यनेन सूचितम् । ' अइरं ' ति अनन्तरम् इत्यर्थः । करणपूई-उपकरणपूतिः । ' पमेय ' त्ति पामिच्चं ' संथवतिग ' त्ति संस्तवत्रिकं ' संनाहपट्टो ' उपकरणस्योपरि हृदये बध्यते । विच्चुए पडिए-विच्युतं पतितम् एकार्थौ । ' उग्गमेउं न निवेएइ ' उत्पाद्य वस्त्रादिकं न गुरूणां निवेदयति । ' सव्वोवहि वा अदिन्नं परिभुंजई ' अदत्तं गुरुभिरित्यर्थः । ' पुरि मत्तए वा चरिमाए ' इति । पुरि-पौरुष्यां, मत्तए-मात्रके, चरिमाए-चतुर्थपौरुष्यां । पणगं लहुगं-अड्ढाइज्जा दिणा । गुरुगं-पञ्च दिनानि । दसगं लहुगं-अद्धसत्तमदिणा । गुरुगं दशैव । पन्नरसगं लहुगं-सड्ढबारस दिणा । गुरुगं पञ्चदशैव । वीसगं लहुगं-सड्ढसत्तरस । गुरुगं विंशतिरेव । पंचवीसं लहुगं-सड्ढबावीस। गुरुगं पञ्चविंशतिः । लहुमासो सड्ढसत्तवीस । गुरुमासो त्रिंशदेव । एतानि दिनानि ज्ञेयानि परमार्थं तु प्रायश्चित्तस्य एवमादेः चिरन्तना जानन्ति । सो य इमो अहागरुयाइ तृतीयभेदोऽपि आदौ कृतः । 'लहुसुद्धो वा' इत्यत्र शुद्ध एव न किञ्चिद्दीयते 'लहुमास भिन्नमासो वीसलहु पक्खुक्कोसमज्झिमजहन्ना' यथासङ्ख्येन तपो ज्ञेयम् । 'पन्नरस दसमं पणगं लहुसुक्कोसाइ तिविहेसो' इति । लहुसपक्षे उत्कृष्ट-मध्यमजघन्यतया पञ्चदशदशमपञ्चका नियोज्यन्ते । 'असहुस्सेगे-गहासणया' असहस्य एकैकह्रासः क्रियते । ठाणक्कमेण-स्थानाङ्गप्रोक्त-क्रमेण । 'अट्ठमभत्तं अंतो निव्वीयमाई' इति । यन्त्रकोक्तेषु प्राय-श्चित्तेषु सर्वेषु निर्विकृतिकाद्यं अष्टमभक्तान्तं तपो दीयते इत्यर्थः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

'तिरियायए तेरसघरए काउं हेट्ठा हुत्तो जाव नव घराइं पुन्नाइं' इति । तिरश्चीनाः त्रयोदशगृहकात्मका ओलीरूपेण नव श्रेणयो लिख्यन्ते । 'एएसिं नवण्हं जाइं दाहिणेण अन्ते टूठियाणि दोन्नि घरयाइं' इति । त्रयोदशगृहकात्मकनवमश्रेणेरधः एकादशगृहात्मका श्रेणी, ततो नवगृहात्मका अधस्तात् श्रेणी, एवं गृहद्वयं गृहद्वयं पुंवद्भिः विद्वद्भिः श्रेणी लिखितव्या यावत् एकगृहात्मका श्रेणी स्वहस्तदक्षिणभागापेक्षया दक्षिणं गृहद्वयं गृहद्वयं उत्सार्यते इत्यर्थः । स्थापना चेयं पत्रान्तरे लिखिता विद्यते । 'जं पयं जहिं अवराहे ठावियं तहिं चेव अवराहे ताए पंतीए पुरिसावेक्खाए सव्वे पच्छित्तपया चारेयव्वा' इति । यत्पदं प्रायश्चित्तलक्षणं यत्रापराधे निरपेक्षादौ तस्मिन्नेव अपराधे तत्र तस्यां पङ्क्तौ पुरुषापेक्षया सर्वप्रायश्चित्तपदानि चारयितव्यानि । यथा निरपेक्षपदे सर्वाणि प्रथमपदप्रायश्चित्तानि यांज्यन्ते इत्यर्थः । 'चिरइए पुरिसविभागेण पणगाई छम्मासावसाणे निव्विइयाई अट्ठमभत्तंतं पुव्वभणियमेव' इति सर्वप्रायश्चित्तानां पणगं आदौ छम्मासा अवसाणे । ततः सर्वत्र पणगादौ छम्मासान्ते निर्विकृतिकाद्यम् अष्टमभक्तान्तं दीयते इत्यर्थः । 'अत्थादाणोनेमित्ति उसन्नायरियरुच्चगपरिभग्गवणियपेसणरूवगसउणी' इति । अवसन्नाचार्यो नैमित्तिकः तस्य रुच्चगो–भागिनेयः भग्नव्रतः वणिजां समीपे प्रेषणं व्यवहरकेण उक्तं–किं रूपकान् शकुनिका हगति ? इत्येकः । 'बिइओ भंडोलगनउलगं' इति । द्वितीयेन द्रम्म–नउलकः दत्तः । 'एगो घयगुलमंतो अन्नो वंसतणकट्ठा बाहिं' इति । एकेन सूरिभणितेन घृतगुडादिकम् अन्तः–मध्ये ग्रामस्य क्षिप्तम् । अन्येन वंसतृणकाष्ठानि बहिः क्षिप्तानि ग्रामदाहे उपकृतानि, अन्तस्तु घृतादीनि दग्धानि । 'अंतो उ सउणिनिमित्तं' इति । अन्तर्दग्धे गुडादौ पश्चात् सूरिणा उक्तं–किं निमित्तं शकुनिका व्युत्सृजति । ....पुव्वीभिलासि उवरि सुत्तो 'वावरए' इति । व्यापारं करोति इत्यर्थः । अन्नोन्नाहिठाणसेवणत्ति भणियं होइ इति पुतसेवा इत्यर्थः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

पावण–पावनं । इति जीतकल्पपर्याया: समाप्ता: ।

पाक्षिकवृत्तौ– पक्खसंधी–अमावास्या । 'तो कह निज्जुत्तीए णुमइ' इति । आवश्यकनिर्युक्ति: । 'उत्सन्नवधादिलिङ्गगम्य' मिति । उत्सन्नं–बाहुल्यत: । अत्र वृद्धसम्प्रदाय:–हत्थुत्थरणं–खरडं १ कोयव-ओ–बूरठिया २ पावारो–सलोमपडओ ३ नवओ–जीर्णं ४ दढगालि-धोयपोत्ती सद्सवत्थं ति भणियं होइ । रालग–कंगू ।

संवत् १२१२ आषाढ वदि १२ गुरौ लिखितेयं सिद्धान्तोद्धार-पुस्तिका । ग्रंथाग्र १६७० द्वितीयखण्ड: ।

प्रशस्ति: ।

शिष्याम्भोजवनप्रबोधनरवे: श्रीधर्मघोषप्रभो:
वक्त्राम्भोजविनिर्गता कतिपया: सिद्धान्तसत्का अमी ।
पर्याया गणिचन्द्रकीर्तिकृतिना सञ्चिन्त्य सम्पिण्डिता:
स्वस्य श्रीविमलाख्यसूरिगणभृच्छिष्येण चिन्ताकृते ॥ १ ॥
अस्ति श्रीमदखर्वपर्वततिभि: सर्वोदय: क्ष्मातले
छायाछन्नदिगन्तर: परिलसद्भव्यावलीसङ्कुल: ।
सेवाकारिनृणां नवीनफलदोऽप्यश्रान्तसान्द्रद्युति-
र्निश्छिद्र: सरलत्वकेतुनिकर: प्राग्वाटवंश: सताम् ॥ २ ॥
मौक्तिकहारसङ्काश: समा....व नीहिल: ।
श्रावकगुणसंयोगान्नराणां हृदये स्थित: ॥ ३ ॥
समजनि धनदेव: श्रावकस्तस्य सूनु:
प्रथितगुणसमुद्रोऽमन्दवाणीविलास: ।
गगनवलयरङ्गत्कीर्तिचन्द्रोदयेऽस्मिन्
लगति न च कलङ्क: रञ्जनं यस्य सत्के ॥ ४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

तस्य च भार्येन्दु........मती........पुत्रः गुणरत्नैकरोहणाचलः धर्मचटनद्रुममलयकीर्ति-सुधाधवलितसमस्तविश्ववलयो यशोदेवश्रेष्ठी-तस्य च

'आम्बीति नाम्ना जनवत्सलाऽभूद्, भार्या यशोदेवगृहाधिपस्य । यस्याः सतीनां गुणवर्णनाया माद्यैव रेखा क्रियते मुनीन्द्रैः ॥ तयोश्च पुत्रा उद्धरण आम्बीगवीरदेवाख्या बभूवुः । सोलीलांली-सोखीनामानश्च पुत्रिकाः सञ्जज्ञिरे । अन्यदा च सिद्धान्तलेखन-बद्धादरेण जिनशासनान्वरञ्जितचित्तेन यशोदेवश्रावकेण सिद्धान्त-विचारपर्यायपुस्तिका लेखयामास ।

पूज्यश्रीविमलाख्यसूरिगणभृच्छिष्यस्य चारित्रिणो
योग्याऽसौ गणिचन्द्रकीर्तिविदुषो विद्वज्जनानन्दनी ।
शास्त्रार्थस्मृतिहेतवे परिलसज्ज्ञानप्रपा पुस्तिका
भक्तिप्राश्चितयत्युपासकयशोदेवेन निर्मापिता ॥ १४ ॥
यावच्चन्द्ररवीनभस्तलजुषौ यावच्च देवाचलो
यावत्सप्तसमुद्रमुद्रितमही यावन्नभोमण्डलम् ।
यावत्स्वर्गविमानसन्ततिरियं यावच्च दिग्दन्तिन-
स्तावत् पुस्तकमेतदस्तु सुधियां व्याख्यायमानं मुदे ॥ १ ॥

इति प्रशस्तिः समाप्ता ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

प्रकाशक :
आगमोद्धारकग्रंथमालाना एक कार्यवाहक
शा. रमणलाल जयचन्द्र
कपडवंज (जि. खेडा)

द्रव्यसहायक :
रु. २५००-००
श्री शांतिनाथजी जैन देहरासर ट्रस्ट,
नवापरा सुरत.

मुद्रक : सहयोग प्रिन्टिंग प्रेस, जवाहर रोड—बीलीमोरा.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gynam Mandir

प्रकाशक :
आगमोद्धारकग्रंथमालाना एक कार्यवाहक
शा. रमणलाल जयचन्द्र
कपडवंज (जि. खेडा)

द्रव्यसहायक :
रु. २५००-००
श्री शांतिनाथजी जैन देहरासर ट्रस्ट,
नवापरा सुरत.

मुद्रक : सहयोग प्रिन्टिंग प्रेस, जवाहर रोड—बीलीमोरा.

For Private And Personal Use Only